विचार दृष्टि

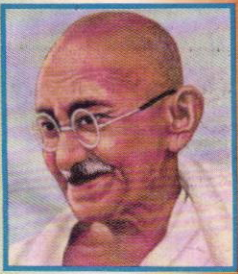

वर्ष : 4 अंक : 13 अक्टूबर-दिसम्बर : 2002 15 रुपये

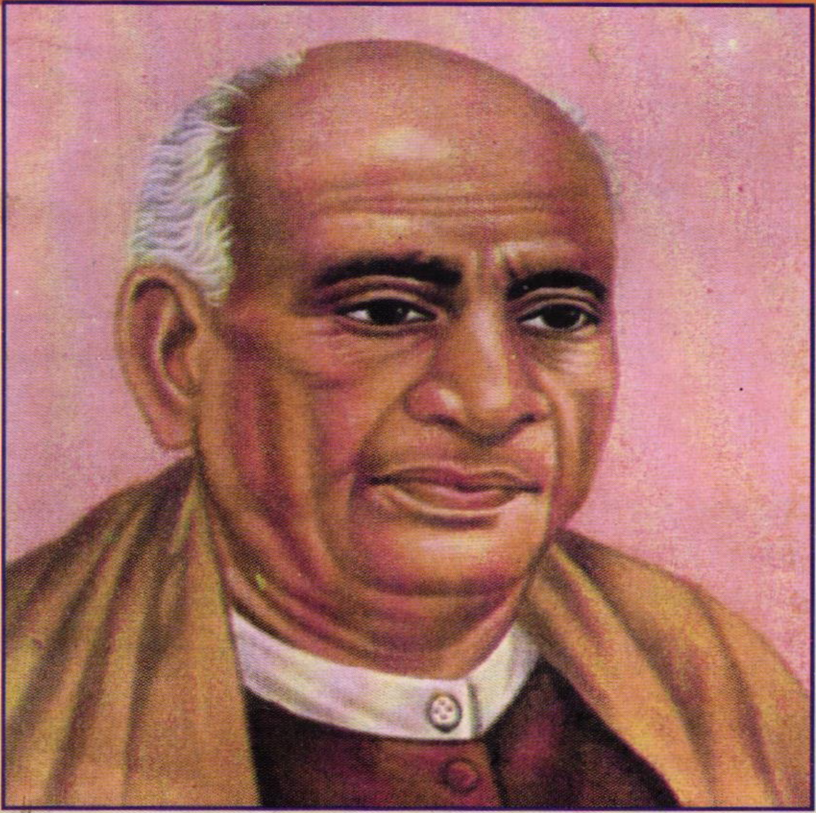

महापुरूषों की जयंतियाँ

- विचारों की मौत !
- कैसे लगेगा राजनीतिक अपराधीकरण पर अंकुश ?
- क्यों याद आते हैं जे.पी. ?
- पानी के प्रश्न पर दो प्रांत पानी-पानी
- कश्मीर में लोकतंत्र की जीत
- अम्मा-कहानी

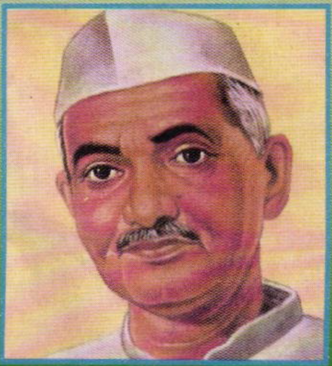

Science and Ethics work together at

PATNA BONE AND SPINE HOSPITAL

(A MODERN CENTRE FOR ADVANCED ORTHOPAEDIC SURGERY)

ORTHOPAEDIC SURGERY ONLY

- All kinds of specialialised Spinal Surgery
- Interdisciplinary Super Speciality Services like Thoracic, Vascular or Ruver, Plastics, Micro Surgery, Physiatry, Facio Maxillary Surgery etc.
- Operation Theater equipped with Cardiac Monior, Oxymater, Modern Ortho Traction table etc.
- Economy, uncompromised with High Standerd
- Quality & Care

ALL MODERN PROCEDURES FOR TRAUMA & FRACTURES

Illizorov - The ultimate for Limb Deformities, Shortening & difficult Fracture & Bone Gap
ESFS - The best possible for Compound Fractures
Interlocking Nails
Gamma Nails - No Plaster Technique
DHS, ICS, CCS, etc. For Articular Fractures
Total joint Replacement indtiding total elbow replacement
Total care centre for Acutespinal Cord Injury.
Arthroscopic Surgery.

THE DEDICATED TEAM

Dr. Shankar Acharya Mch Liverpool, MS, Dnb, Frcs (Glaso), FRCS, Ortho(Uk)
Dr. Surendra Rai. MS, Flcs ,Mch (Plastic) Dr Girish Sharan. MS , Mch (Neuro)
Dr. Birendra Kishore. MS, MCH-Micro, Dr. Hoda MS (Ortho)
Dr. K. P. Yadav. MS, (Thoraco-Vascular), Dr. Alok Kumar. BDS, Facio Maxillary, FFDRCSI

A-3, Doctor's Colony Kankarbagh, Patna-800 020. Tel. : 0612-361180

विचार दृष्टि

(राष्ट्रीय चेतना की वैचारिक त्रैमासिकी)

वर्ष-4 अक्टूबर-दिसंबर, 2002-अंक-13

संपादक व प्रकाशक: **सिद्धेश्वर**

कार्य० संपादक : **डॉ० शिवनारायण**

सह संपादक : **कामेश्वर मानव**

प्रबंध संपादक : **सुधीर रंजन**

सहा.संपादक : **मनोज कुमार**

संपादन सहायक : **अंजलि**

शब्द संयोजन : **कुमारटेक कंप्यूटर्स**

(दीपक कुमार)

सज्जा: सुधांशु कुमार)

प्रकाशकीय व संपादकीय कार्यालय:

'दृष्टि', 6 विचार विहार, यू०-207

शकरपुर, विकास मार्ग, दिल्ली-92

दूरभाष: (011) 2230652

फैक्स: (011) 2225118

E-mail- vicharbharat@hotmail.com

पटना कार्यालय:

'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-1

दूरभाष:0612-228519

ब्यूरो प्रमुख

मुम्बई: वीरेन्द्र याज्ञिक :8897962

कोलकाता: जितेन्द्र धीर 4692624

चेन्नई: डॉ० मधु धवन 6262778

तिरूवनंतपुरम:डॉ०रतिसक्सेना 446243

बैंगलोर:पी०एस०चन्द्रशेखर 6568867

हैदराबाद:डॉ०ऋषभदेव शर्मा 4616931

जयपुर: डॉ०सत्येंद्र चतुर्वेदी 225676

अहमदाबाद:वीरेंद्र सिंह ठाकुर 2870167

मूल्य: एक प्रति 15 रुपये

द्विवार्षिक: 100रुपये

आजीवन सदस्य: 1000 रुपये

विदेश में:

एक प्रति:US $3, द्विवार्षिक:US $20, आजीवन: US $250

(पत्रिका-परिवार के सभी सदस्य अवैतनिक हैं।)

रचना और रचनाकार

पाठकीय पन्ना /2

संपादकीय /3

विचार-प्रवाह:

विचारों की मौत ? /5
रिचर्ड कापुसिंस्की

साहित्य:

अम्मा - कहानी /7
नीरजा श्रीवास्तव

गो-वंश रक्षक तुरुक /10
कृष्ण कुमार राय

काव्य कुंज : /12
मुनिश्री 'लोकेश', राजेश 'चेतन'

दृष्टि :

क्या गाँधी विचारधारा.... /15
किशन शर्मा

व्यंग्य :

वह अजनबी /16
गगनसुत नवीन

बदलता रूप रहजनी का /17
जय प्रकाश मल्ल

शक्सियत :

क्यों याद आते है जे०पी०? /18
डॉ० रमा शंकर श्रीवास्तव

सरदार पटेल : .... /20
ई०के०के०सिंह

स्वामी विवेकानंद /24
डॉ० वैद्यनाथ शर्मा

आधी आबादी :

स्त्री, तुम मिटने के लिए नहीं हो /26
जयप्रकाश कर्दम

ठिठकी-सहमी हमारी आधी आबादी /29
परमानंद दोषी

गांव-जवार :

पूरा गांव बिकाऊ /31

समाचार-विश्लेषण : /33

गुजरात की गौरव यात्रा का मतलब /35

समीक्षा :

स्पंदित प्रतिबिंब -ब्रजेश कुमार /38

साहित्य-समाचार : /39

समाज : /41

कब मिटेगी छुआछूत की बीमारी /41

शिक्षा : /42

दलितों के लिए सही शिक्षा .... /42
विजय प्रकाश

गतिविधियाँ : /43

देश-विदेश : /49

जोहांसवर्ग का पृथ्वी सम्मेलन /49

सम्मान : /51

कला-संस्कृति : /57

अभिनेता को पुनः रंगमंच के केंद्र.... /57

संस्मरण : /58

श्रद्धांजलि : /62

फिल्मावलोकन : /63

महापुरुषों की जयंतियाँ विचारक शांति पुरस्कार श्रद्धांजलि

पत्रिका-परामर्शी

❑पद्मश्री डॉ.श्यामसिंह 'शशि'❑प्रो .रामबुझावन सिंह❑श्री गिरीशचंद्र श्रीवास्तव, ❑ श्री जियालाल आर्य ❑ डॉ० बालशौरि रेड्डी,❑ श्री जे.एन.पी.सिन्हा ❑श्री बाँकेनन्दन प्रसाद सिन्हा ❑ डॉ० सच्चिदानंद सिंह 'साथी'

रचनाकार के विचारों से पत्रिका-परिवार का सहमत होना आवश्यक नहीं।

वजनदार विचारों वाली

हमारे प्रबुद्ध पाठकों के बीच भी आपके कुशल संपादकत्व में उत्कृष्ट एवं वजनदार विचारों वाली पत्रिका बहुत लोकप्रिय रही है। सबने एक स्वर से पत्र के स्तर की सराहना की है। अंक-9 में तो एकता, सांप्रदायिक सद्भाव से संबंधित बहुत सी रचनाएँ हैं- सभी बेहद सारगर्भित एवं सामयिक हैं। सबसे बड़ी बात तो यह है कि तथाकथित बड़े लेखक विचार दृष्टि के पन्नों पर नहीं हैं- अपेक्षाकृत कम जाने जाने वाले, नवोदित उदीयमान रचनाकारों की रचनाएँ विचार दृष्टि में प्रमुखता पाती हैं- फिर भी उसके प्रतिमान में कोई कमी नहीं। 'विचार दृष्टि' बिहार ही नहीं भारत भर के पत्र-जगत के लिए एक नए कीर्तिमान की सृष्टि कर रही है। निश्यच ही इन सब के मूल में आपकी उदार दृष्टि और अटूट संकल्पशक्ति कार्यरत रही है। इस अभिनव उपलब्धि के लिए मेरी लाख-लाख बधाइयां।

परमानंद दोषी, पटना

ब्राह्मण विरोधी

आपकी पत्रिका की एक ही विचार दृष्टि है-ब्राह्मण-विरोध। सिख लेखक भी अपने गरेवाँ में झाँके बिना मुखर हैं। आपने पृष्ठ-25 पर तुष्टिकरण की चर्चा की। असली तुष्टिकरण से आप भटक गये हैं। आपको मंदिर निर्माण में तुष्टिकरण दिखाई पड़ रहा है। तालिबान जैसी सोच की आप उपेक्षा कर रहे हैं। आपका ब्राह्मण जनेऊ छोड़ चुका है। किसी के भी साथ भोजन करता है। उसके बच्चों को कोई सुविधा नहीं मिल रही है। फीस न देने के कारण अनेक ग्रामवासी ब्राह्मण बच्चे अनपढ़ रह गये हैं। उन्हें जीविका नहीं मिल रही है। उनकी जीविका छिनी जा रही है। ये लोग नवदलित की श्रेणी में आ गए हैं। जरा गांव जाकर उनकी स्थिति देखिए। केवल दलितोद्धार की बहती गंगा में हाथ न धोते रहिए।

विकास कश्यप, एफ -4/6,
मॉडल टाउन, दिल्ली-9

मनोरंजक एवं हितचिंतक

आपने अत्यंत मनोयोग से मनोरंजक एवं हितचिंतक सामग्री प्रस्तुत की है। मेरी हार्दिक बधाई। डॉ० मधु धवन अच्छा लिखती हैं। डॉ० महीप सिंह का लेख एक लक्ष्य का संकेत करता है। हिंदी में हाइकु बहुत लिखे जा रहे हैं। कुछ अच्छे नाम छुट गये हैं। काव्य और विज्ञान भी ज्ञानवर्द्धक हैं। कहानियों एवं कविताओं के चुनाव पर विशेष ध्यान देने की कृपा करें। मेरे योग्य सेवा।

मधुर शास्त्री, एस-484, स्कूल ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली-91

धर्मयुग' का-सा आभास

पत्रिका का कवर पृष्ठ और गेटअप देखने से अपने लिए तो 'धर्मयुग' का-सा आभास पैदा हो गया। यह वैचारिक त्रैमासिकी एवं साहित्यिकी रखने लायक है। सभी सामग्रियाँ काबिलेतारीफ हैं।

मुकेश रावल, आनंद,गुजरात

साम्रगी सराहनीय

श्री गिरीश चन्द्र लिखित 'बेटी' शीर्षक कहानी मैंने पढ़ी। उक्त कहानी में लेखक ने बहुत ही उदारतापूर्वक सोनम के त्याग का वर्णन किया है। 'विचार दृष्टि' इसी प्रकार कहानियों को पाठकों के पास पहुँचाती रहे, इसके लिए मैं संपादक महोदय को शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

राम सुजान यादव, मीठापुर पटना-1

संयम, संस्कृति की परंपरा

संपादकीय, सामयिक, प्रासंगिक एंव व्यावहारिक है। संयम हमारी संस्कृति की परम्परा है और उसे कोई कायरता का पर्याय न समझने लगे यह सटीक संदेश संपादकीय में उभर कर सामने आता है। अन्य रचनाएं स्तरीय हैं। श्री जिया लाल आर्य की 'बात जो वह न कह सकी', मर्मस्पर्शी है। खंडित होती जिजीविषा और आदमीपन की तलाश, कवि पर सत्यनारायण के काव्य संग्रह **'सभाध्यक्ष हँस रहा है'**, पर एक विश्वसनीय और बेबाक टिप्पणी है। कविताएँ मन को बहुत भीतर तक छू जाती हैं।

नीरजा श्रीवास्तव, अहमदाबाद

जरा इनकी भी सुनें

पश्चिमी देश आतंकवाद पर दोहरे मानदंड अपना रहे हैं, जिसे उन्हें छोड़ना चाहिए।

-अटल बिहारी वाजपेयी, प्रधानमंत्री

भाजपा सन् 2004 में लोकसभा चुनाव अटल जी के ही नेतृत्व में लड़ेगी। भाजपा को स्पष्ट बहुमत मिलने पर भी सरकार राजग की ही बनेगी।

-लाल कृष्ण आडवाणी, गृहमंत्री

म०प्र० के मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह विश्व हिंदू परिषद में रह चुके हैं और बचपन में प्रवचन करने वह उनके घर भी गयी थी।

-कोयला राज्य मंत्री उमा भारती

सपा ने ऊ०प्र० की मायावती सरकार गिराने के लिए कोई पहल नहीं की है। इस सरकार के जन विरोधी कृत्य ही ऐसे हैं कि यह स्वयं ही समय आने पर धराशायी हो जाएगी।

- सपा अध्यक्ष मुलायम सिंह यादव

अगर उन्हें शक्तिवर्धक दवाओं के सेवन के मामले में किसी भी तरह का दंड दिया गया तो वह उन खिलाड़ियों का भी कच्चा चिट्ठा खोल देगी, जो अपने प्रदर्शन को बेहतर बनान के लिए प्रतिबंधित दवाओं का सेवन करते हैं।

-बुसान एशियाई खेलों में प्राप्त स्वर्ण पदक से हाथ धो चुकी सुनीता रानी

आखिर कैसे लगेगा राजनीतिक अपराधीकरण पर अंकुश?

अक्टूबर-नवंबर को महापुरुषों की जयंती का माह कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी । 2 अक्टूबर को बापू और शास्त्री जी की जयंती, तो 31 अक्टूबर सरदार पटेल की। लोकनायक जयप्रकाश नारायण की जयंती की तो खैर इस वर्ष शताब्दी मनायी जा रही है जिनका जन्म 11 नवंबर को हुआ था। महापुरुषों के जन्म दिन हमें झकझोरने के लिए होते हैं। जब हम इन महापुरुषों को उनकी जयंती पर याद करते हैं तो उनके त्याग, उनकी सादगी व निःस्वार्थ सेवा और सदाचार सब एक साथ मानस-पटल पर रेखांकित हो जाते हैं। किंतु आज के राजनेताओं पर जब नजर जाती है तो सब कुछ उल्टा-पुल्टा-सा दिखता है। खासकर आजादी के तीसरे दशक के बाद हालत यह हो गई कि नेताओं के व्यक्तित्व में ऐसा कुछ दिखाई नहीं देता जो लोगों, विशेषकर युवा पीढ़ी को प्रेरित व आकर्षित करे। सरकार चाहे किसी की रही हो बोफोर्स, चीनी, शेयर, दूरसंचार, हवाला, यूनिट ट्रस्ट, बीमा, भूमि तथा चारा घोटालों से लेकर पेट्रोल पम्प तक की लंबी सूची है भ्रष्टाचार की।

जहाँ तक राजनीति के अपराधीकरण का सवाल है आज की तिथि में कोई भी राजनीतिक दल इससे अछूता नहीं है। आपराधिक तत्वों का बोलवाला प्रायः सभी दलों में है। आखिर तभी तो एक अंग्रेजी पत्रिका द्वारा आजाद भारत में महान व्यक्तित्व के बारे में आयोजित सर्वेक्षण में किसी राजनेता की बजाए सामाजिक सेवाओं से जुड़ी मदर टेरेसा को शीर्ष स्थान पर चुना गया। अखण्ड भारत के निर्माता सरदार वल्लभ भाई पटेल ही ऐसे राजनेता थे जिन्हें तीसरा स्थान मिला। अपने दल की कारगुज़ारियों के चलते अटल बिहारी वाजपेयी भी 10वें स्थान पर रहे। नेताओं के प्रति इस प्रकार की वितृष्णा के और चाहे जो कारण हों, पर प्रमुख कारण हैं उनकी कथनी और करनी में अंतर, भ्रष्ट आचरण, अपराधी प्रवृत्ति तथा सादगी से कोसों दूर उनका रहन-सहन और वेष-भूषा। ऐसे में जनता का उनसे मोह-भंग होना स्वाभाविक है। आज देश के जनप्रतिनिधियों के भ्रष्ट और गैर-जिम्मेदाराना आचरण के चलते यहाँ अराजकता का बोलवाला है और इसी कारण लोकतंत्र लट्ठतंत्र में बदलता जा रहा है। हर राजनीतिक दल ने अपना-अपना वोट बैंक सुदृढ़ बनाने के प्रयासों में सांप्रदायिकता, जातिवाद, आतंकवाद आदि को बढ़ावा देने में बढ़ चढ़कर भूमिका निभायी और जनता को सदैव कमजोर करने की कोशिश की गयी। उनके हितों से उनका कोई सरोकार न रहा।

यही देखिए न, जब राजनीतिक अपराधीकरण को रोकने के लिए चुनाव प्रक्रिया में सुधार की बात आई तो सभी राजनीतिक दलों ने एक स्वर से इसका विरोध किया और लचर-पचर इस पर विधेयक लाने की बात कहकर जनता को बरगलाया गया। संसद के मानसून सत्र में विधेयक प्रस्तुत नहीं किए जाने के बाद सरकार ने चुनाव सुधारों से संबंधित जो अध्यादेश लागू किया उसका चुनाव सुधारों से कहीं कोई लेना-देना नहीं। आश्चर्य इस बात पर है कि यह अध्यादेश सर्वोच्च न्यायालय के उन निर्देशों के बिल्कुल विपरीत है जिसके तहत प्रत्याशियों के लिए यह अनिवार्य किया गया था कि वे नामांकन पत्र दाखिल करते वक्त अपनी शैक्षणिक योग्यता, आर्थिक तथा आपराधिक इतिहास का ब्योरा सार्वजनिक करेंगे ताकि मतदाता विधानमण्डलों अथवा संसद में भेजने के पूर्व अपने प्रतिनिधियों के बारे में जान सकें। इन राजनीतिक दलों ने सर्वोच्च न्यायालय के आदेशों के अनुपालन में निर्वाचन आयोग द्वारा जारी अधिसूचना को यह कहकर खारिज कर दिया कि कानून बनाने का अधिकार संसद का है, सर्वोच्च न्यायालय का नहीं।

अब सवाल यह उठता है कि राजनेता अपनी शैक्षणिक योग्यता, आर्थिक स्थिति और अपने आपराधिक इतिहास को मतदाताओं से क्यों छिपाना चाहते हैं। स्पष्ट है कि राजनेताओं को यह भय सता रहा है कि इन बातों की जानकारी होने पर न केवल आपराधिक चरित्रवाले उम्मीदवारों को मतदाता अपना प्रतिनिधि चुनने से बाज आएंगे

संपादकीय................

बल्कि प्रतिनिधि चुने जाने के बाद भ्रष्ट आचरण द्वारा जो अपार संपत्ति उनके द्वारा अर्जित की जाती है उसका कहीं पर्दाफाश न हो जाए। यही कारण है कि विपक्ष के साथ-साथ सत्तापक्ष भी चुनाव-सुधार के मामले में तनिक भी गंभीर नहीं है। इसलिए चुनाव सुधार के नाम पर अध्यादेश लागू करने की बात सुधार शब्द की मात्र खिल्ली उड़ाना है और इससे राजनीति के अपराधीकरण पर अंकुश लग सकेगा, यह एक दिवास्वप्न सा है। केन्द्रिय मंत्रिमंडल द्वारा पिछले दिनों सजायाफ्ता को छह वर्ष तक चुनाव न लड़ने देने से मुझे नहीं लगता कि राजनीति के अपराधीकरण पर अकुंश लग पाएगा, क्योंकि जो व्यक्ति एक बार सजायाफ्ता हो गया फिर उसकी आपराधिक मानसिकता बंदल जाएगी, इसमें संदेह है। जिस व्यक्ति की सोच ही आपराधिक हो, वह एक अच्छा जनप्रतिनिधि कभी नहीं बन सकता। उसके लिए तो एक सकारात्मक सोच का होना जरूरी है, तभी उसके आचार-व्यवहार भी अच्छे होगें। इस दृष्टि से निःसंदेह देश के जनप्रतिनिधि होने के पूर्व उन पर अंकुश लगाये जाने की जरूरत है।

दरअसल, वर्तमान दौर में सभी राजनीतिक दलों में मौजूद अपराधी तत्वों से मतदाताओं को डराने, धमकाने, बूथ लूटने, फर्जी मतदान कराने का काम लिया जाता है। नतीजतन आज स्थिति यह है कि अब ये अपराधी अपने दलों पर इतने हावी हो गए हैं कि अपने दल के राजनेताओं को सहयोग कर फायदा पहुँचाने के बजाए स्वयं चुनाव लड़ने लगे हैं जिनके बल पर दलों का अस्तित्व कायम है। यदि इन अपराधी तत्त्वों को नियंत्रित करने का प्रयास किया गया तो कई राजनीतिक दलों का अस्तित्व ही खतरे में पड़ जाएगा। स्वाभाविक है कि कोई भी राजनीतिक दल चुनाव सुधार लागू कर अपने अस्तित्व को खतरे में डालना पसंद नहीं करेगा।

राजनीति में बढ़ते अपराधीकरण का प्रभाव अब तो समाज के दूसरे क्षेत्रों पर भी तेजी से पड़ रहा है। कॉलेज, विश्वविद्यालयों की राजनीति में आज सक्रिय रूप से जुड़े छात्र नेता अपराध की दुनिया में जो सक्रिय दिख रहे हैं वह भी राजनीति में बढ़ते अपराधीकरण का ही दुष्परिणाम है। क्या हमारा सिर शर्म से नहीं झुक जाता जब हमें यह समाचार सुनने को मिलता है कि राष्ट्रीय राजधानी के सबसे प्रतिष्ठित क्षेत्रों में रहते हुए एक युवती के अपहरण और उससे सामूहिक दुष्कर्म के मामले में दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ के एक पूर्व अध्यक्ष की संलिप्तता पायी गयी, जिसके खिलाफ एक डकैती का भी मामला दर्ज है। इसके पूर्व भी एक युवा कांग्रेस नेता द्वारा नयना साहनी को तंदूर में जलाकर मार डालने की घटना देशवासियों को आज भी याद है। इस प्रकार की वारदातें छात्र व युवा राजनीति ही नहीं बल्कि पूरे समाज के लिए चिंतनीय है। देश के भविष्य का निर्माता कहे जाने वाले युवा समुदाय को आखिर हम किस दिशा में ले जाना चाहते हैं।

सभी राजनीतिक दलों ने अपने निहित स्वार्थ की सिद्धि के लिए सुप्रीम कोर्ट और चुनाव आयोग की पहल को तो निरस्त कर दिया लेकिन जब जनता हिसाब माँगेगी तब अपना ब्योरा देना इनकी मजबूरी होगी। सुधारवादी तत्वों की ओर से एक ऐसे अभियान की आवश्यकता है जिससे जनता जागरूक हो और राजनीति के भ्रष्ट तत्वों को सदन में जाने से रोका जा सके।

कौटिल्य ने कहा था- 'चरित्रहीन राजा, तटस्थ प्रजा, संशययुक्त निर्णय और भयमुक्त अपराधी, ये चारों किसी भी राज्य को पड़ोसी का आहार बना सकते हैं।' तटस्थ प्रजा वह है जो सकारात्मक विरोध से भी स्वयं को बचाए रखना चाहती है। देश जल रहा है परन्तु गलत को गलत नहीं कहना चाहती। कुछ ऐसी परिस्थिति बने कि नेताओं को कुर्सी के अतिरिक्त राष्ट्र की भी फिक्र हो, कोई तरीका बने, नहीं तो ये भ्रष्ट लोग राष्ट्र को भी बेचने से बाज न आयेंगे।

विचारों की मौत!

❑ रिचर्ड कापुसिंस्की

संकट की घड़ियों में अक्सर मैंने काल के दो रूप देखे हैं। एक काल वह है, जो हमसे परे मानव-इतिहास की बड़ी धारा को गढ़ता है, और दूसरा वह निजी-काल, जिसके बीच हम अपना जीवन जीते हैं। ऐतिहासिक काल हमारे जीवन पर जब-जब हावी होता जाता है, हमारी खुद अपने तई जीवन जीने की क्षमता घटती चली जाती है। हम हर घड़ी महसूस करने लगते हैं कि इतिहास के संदर्भ में हमारा अस्तित्व तो कुछ भी नहीं है और हमारी अपनी योजनाएँ अपनी इच्छाएँ और सपने भी बेहद तुच्छ और नगण्य ही हैं। और जब खुद को हम सब इस तरह लक्ष्यहीन, अकेले और उद्भ्रान्त महसूस करते होते हैं, तो एक तानाशाह सत्ता के लिए हमें अपने जाल में फंसा कर अपनी विचारधारा का स्वामिभक्त अनुचर बनाना आसान बन जाता है। सबसे पहले वह राज्य में नए अध्यादेशों और कानूनों की एक झंडी-सी लगा देती है। और इतनी तरह के कानूनों का मकड़जाल जनता के चारों तरफ बुन डालती है, कि आप बिना किसी कानून को तोड़े सड़क भी पार नहीं कर पाते। तब यह भावना, कि हाय, हम तो अहर्निश राष्ट्रीय कानूनों का उल्लंघन कर रहे हैं, नागरिकों के मन में एक गहरी ग्लानि भर देती है, और आगे चलकर यह ग्लानि, भय, आतंक और एक प्रकार के दीन-भाव को नागरिकों के स्वभाव का अकाट्य हिस्सा बना देती है। ऐसे नागरिकों के लिए कानून का उल्लंघन भी क्षम्य बन जाता है, और यदि राज्यसत्ता किसी निरपराध नागरिक पर भी हाथ डालती है, तो अपराधी के विरुद्ध ठोस सबूत न होते हुए भी शेष लोग मान लेते हैं कि राज्यसत्ता जो भी कर रही है जायज ही होगा, हम सबकुछ तो नहीं जानते। हो सकता है, उसने कहीं न कहीं, कभी न कभी देश या समाज के खिलाफ अपराध किया ही होगा।

दारिद्रय दरअसल दो प्रकार का होता है, एक तो भौतिक, और दूसरा मानसिक। भौतिक गरीबी जहां एक व्यक्ति को कमजोर और शोषित योग्य बनाती है वहीं मानसिक दारिद्रय उसे हीनभावना की चट्टान तले दबा कर पस्तहिम्मत बना देता है। जिस व्यक्ति के भीतर कोई बड़े स्वप्न, कोई विराट् महत्वाकांक्षा ही नहीं है, उसमें अपने मानवाधिकारों का बोध और उसके बचाव में मर मिटने का जज्बा भी शर्तिया नहीं होगा।

बर्बरता का असली युग तब शुरू हो जाता है जब लोगों को बर्बर कृत्य करते हुए भी अपने आचरण की बर्बरता का इलहाम नहीं होता।

और इस तरह बर्बरता समाज में किस्तों में प्रवेश करती है। पहले वे नष्ट किए जाते हैं जो मूल्य रचते हैं, और फिर वे जो उन रचनात्मक लोगों का आदर करते हैं। बर्बरता का असली युग तब शुरू हो जाता है जब लोगों को बर्बर कृत्य करते हुए भी अपने आचरण की बर्बरता का इलहाम नहीं होता। बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में हम जो विशाल विस्फोट और आलोड़न पूरे विश्व में एक साथ होते देखते रहे, उनकी तीन प्रमुख वजहें थीं: एक, सशस्त्र विचारधाराओं द्वारा दुनिया को अपने प्रभुत्व में ले लेने की मुहिम, जिसके खिलाफ शेष विश्व लामबन्द हुआ। दो, ऐसे सैकड़ों नए राज्यों का उदय, जिनके पास अपने धार्मिक और दार्शनिक विचार और उनको जबरन झुकाने वाले अपने पण्डे-पुजारी और विश्लेषकों की टोलियाँ थीं, और जो अपने लोगों की असली बुनियादी जरूरतों को पूरने में नाकामयाब साबित पाए गए। और तीन, गाँवों से बड़े शहरों और गरीब देशों से अमीर देशों की ओर लाखों की तादाद में युवा जनों का पलायन। इस पलायन की वजह थी बेहतर जीने, बेहतर नौकरियाँ पाने और ऊँची सामाजिक स्थिति बनाने की। उनकी अंधी ललक पर जब एक बारगी तमाम कष्ट उठाने के बाद वह युवा लक्ष्य पर पहुंचे और वहां उन्हें घोर उपेक्षा तथा दुरदुराहट ही मिले, तो उनके भीतर प्रतिहिंसा, नफरत और आत्मघृणा की ऐसी प्रचंड भावनाएं उमड़ीं, जिन्होंने जगह- जगह लोकतांत्रिकता को, सभ्यता को पलीता लगाना शुरू कर दिया। इस डगमगाहट के बीच लोकतांत्रिकता का ह्रास हुआ, और एकाधिकारवादी वृत्तियां बुलंद हो चलीं।

'सांस्कृतिक क्रांति', इस पुराने फिकरे को सुनकर हमें एक समाज में नवोन्मेष, एक अंधेरे से उजाले की ओर प्रगति का बोध होता था, लेकिन आज इसका अर्थ हो चुका है विनाश, जोर-जबर्दस्ती, बौद्धिक जड़ता, हिस्टीरिया की जीत, और भय एवं घृणा का समाज में उन्मेष।

दुनिया के भविष्य को बचाने और मनुष्यों में सच्ची जनजागृति लाने को हर लड़ाई आने वाले समय में अधिकाधिक जिस इलाके में लड़ी जाएगी, वह इलाका है भाषा का। यूं तो भाषायी टकराव और शब्दों के साथ जूझने की प्रक्रिया मानव इतिहास का सदा से एक अंग रहे हैं, लेकिन मास मीडिया के उभ्युदय के साथ ये लड़ाइयाँ और सघन, और ज्यादा तीखी होती जा रही हैं। प्रोपेगैण्डा हर समसामयिक सरकार के लिए आज

अपने को झुकाने का सबसे बड़ा हथियार बन गया है। कई बार प्रोपेगैण्डा के संदर्भ में 'आक्रमण' विशेषण का इस्तेमाल किया जाना साबित करता है कि आज हर तरह का प्रोपेगैण्डा एकाधिकारवादी सत्ता द्वारा लोगों की चेतना पूरी तरह अपना सिक्का बिठाने को निरंतर छेड़ा जा रहा एक अभियान बन गया है।

इसका सीधा नतीजा है राष्ट्र दर राष्ट्र जनता में फैलता संशय और उद्विग्नता। यूंकि शब्दों को बड़ी चतुराई से उनके मूल संदर्भों से काट दिया गया है, इसलिए लोकतंत्र में जनसाधारण के लिए भाषा वह कुतुबनुमां की डिबिया नहीं रही, जो उन्हें स्पष्ट दिशाबोध देती। कभी भाषा ने ही जनता को लोकतंत्र की डगर दिखाई थी। आज हमें सबसे ज्यादा भाषा ही भटका और संशय में डाल रही है। नतीजतन सत्ताधारी वर्ग के विमर्श के बारे में मास मीडिया पर खबरें सुनते हुए हमें अपने किए पर बहुत सीमित-सा ही वश रहने का अनुभव होता है। मनुष्य बने रहने के लिए मानवीय स्थितियाँ जरूरी हैं, पर वे मानवीय स्थितियाँ अक्सर स्वयं एक मनुष्य द्वारा नहीं, सत्ता की पूरी मशीनरी द्वारा ही गढ़ी जाती हैं। लोकतंत्र में इस विसंगति से हम एक हद तक सामुदायिक नैतिक उसूलों और संविधान प्रदत्त सूचनाओं की मार्फत निबट भी लें, लेकिन तानाशाही तले तो न पुरानी नैतिकता बचती है, न ही संविधान का मूल स्वरूप। विडंबना यह है, कि ऐसी उत्पीड़क तानाशाही के नीचे घुटते हुए लोगों के बीच कभी भी एक सहज संवेदनशील भाईचारा कायम नहीं हो पाता। लोकतंत्र में भले ही लोग लगातार धकियाए जाते रहे, आपसी घृणा और निन्दा के बीच परस्पर उलझते रहें, लेकिन फिर भी उनमें एक दूसरे के प्रति कहीं अधिक सहिष्णुता और संवेदना बनी रहती है। हमारे वक्त में लोकतंत्र और सहिष्णुता, तानाशाही और परस्पर विद्वेष यह स्यामी जुड़वाओं जैसे सत्ताद्वन्द्व हैं। एक आएगा, तो दूसरा भी।

एक केंद्रीकृत, एकाधिकारवादी राज्य व्यवस्था का पहला लक्ष्य होता है, निजी समय पर लगाम साधना और इतिहास का वर्तमान पर हावी बनाना। समय चूंकि नए विचारों का, परिवर्तनशीलता का वाहक है सो तानाशाही का पहला काम होता है, लोगों की चेतना को प्रोपेगैण्डा के जरिये एक जड़ कट्टर और अतीत-केंद्रित इतिहास में गाड़ देना, ताकि परिवर्तन की हवा भी उन्हें न लगे। इतिहास और राष्ट्रीय अस्मिता को लेकर मीडिया और शिक्षा द्वारा उपजाई गई कट्टरपंथिता अवाम में एक तरह की विनाशकारी ऊर्जा विकीरित

सांस्कृतिक क्रांति', इस पुराने फिकरे को सुनकर हमें एक समाज में नवोन्मेष, एक अंधेरे से उजाले की ओर प्रगति का बोध होता था, लेकिन आज इसका अर्थ हो चुका है विनाश, जोर-जबर्दस्ती, बौद्धिक जड़ता, हिस्टीरिया की जीत, और भय और घृणा का समाज में उन्मेष।

करती है, जिसमें करुणा और भलमंसाहत की जगह नहीं जहां लोगों के बीच करुणा और परस्पर सद्भाव मिटे, तानाशाही के लिए अपना पंजा फैलाकर उस ऊर्जा को अपने हित में मोड़ना बड़ा आसान बन जाता है।

लोग अनजाने में वही विचार तथा प्रतिक्रियाएं अपनाते जा रहे हैं, जो शासन चाहता है। मीडिया के इस सुनियोजित और गहरे वैचारिक संक्रमण से बचने के लिए बुद्धिजीवियों द्वारा इस मीडिया की आलोचना करना भर पर्याप्त नहीं है। वे स्वतंत्र विचार और स्वतंत्र विश्लेषण की क्षमता मीडिया की प्रभाव-परिधि से बीच-बीच में पूरी तरह कतरा कर ही अपने भीतर ला सकेंगे। और यदि वे सचमुच ऐसा कर पाए तो ही वे समझ सकेंगे कि आज दुनिया में लोकतंत्र के नाम पर दो प्रकार के तंत्र कायम हैं। एक ओर वह सच्चा लोकतंत्र है जहां लोग प्रतिभा के आधार पर तरक्की करते हैं, और दूसरा लोकतंत्र की ओट में पनपटी लूटतंत्र जहां तरक्की का आधार सत्ता के प्रति अटूट स्वामिभक्ति है। पहले प्रकार के तंत्र तो सचमुच प्रगतिशील होते हैं, लेकिन दूसरे पूरी तरह जड़ तथा अतीतोन्मुख पहले यानी प्रगतिशील तंत्र की तरक्की के मूल में वह ऊर्जा है जो अपने भीतर लोगों से खींच कर भरता है। लेकिन उसके विपरीत जड़ तंत्र के लक्ष्य और जरूरतें भिन्न हैं। वह जनता की ऊर्जा तथा उपयोग अपने स्वार्थ की तहत भीतरी संतुलन और स्थायित्व गढ़ने में ही करता है। इसीलिए ऐसा जड़ तंत्र नाम के लिए लोकतंत्र होते हुए भी सच्चे स्वतंत्रचेता लोक या सचमुच के उद्यमी नहीं पैदा करता। क्योंकि वह उनसे डरता है। उसे ऐसे स्वामिभक्त लोगों की ही जरूरत होती है, जो उसकी गढ़ी जड़ यथास्थिति पर अहर्निश भाले-बर्छियाँ लेकर पहरा देते रहें। ऐसे तंत्र का इंद्रासन कब डोलता है? जब तमाम चौकीदारी के बावजूद सवाल लगातार उठने लगते हैं, और अपने उत्तर खोजने लगते हैं।

(प्रख्यात पोलिश पत्रकार के लेख 'वॉरसौ डायरी' के आदम चेनियावस्की कृत अंग्रेजी अनुवाद का एक अंश)

हिन्दुस्तान से साभार

आवश्यक सूचना

मंच की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक

मान्यवर,

निर्देशानुसार सूचित किया जाता है आगामी 16 एवं 17 नवंबर 2002 को नई दिल्ली के 210, दीन दयाल उपाध्याय मार्ग स्थित राजेन्द्र भवन में आयोजित राष्ट्रीय अधिवेशन को सफल बनाने हेतु राष्ट्रीय विचार मंच की राष्ट्रीय कार्यकारिणी, आयोजन समिति, दिल्ली राज्य कार्यकारिणी तथा युवा प्रकोष्ठ की एक सम्मिलित बैठक आगामी 3 नवंबर 2002 को पूर्वाह्न 11.30 बजे नई दिल्ली के 210, दीन दयाल उपाध्याय मार्ग स्थित अणुव्रत भवन के सभागार में मंच के नव निर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री यू. सी. अग्रवाल की अध्यक्षता में होगी, जिसमें आपकी उपस्थिति आवश्यक है।

सभी पदा. एवं सदस्यों के नाम - विनीत,

दीपक कुमार — प्र. महासचिव, रा.वि.यूवा मंच

डा. अनिल दत्त मिश्र — संयोजक, आयोजन समिति

सिद्धश्वर — रा.महासचिव, रा.वि.मंच

कहानी

अम्मा

❑ नीरजा श्रीवास्तव

कितने अन्तराल के बाद अचानक पापा मिल जायेंगे और वह भी इस रूप में, मनु ने कभी नहीं सोचा था, और फिर गम्भीर दुर्घटना के बाद अस्पताल में मृत्यु से जूझते हुए उनके समूचे सन्दर्भ को अम्मा इतने निर्विकार भाव से लेंगी इसकी तो उसे बिल्कुल ही आशा नहीं थी। बारह वर्ष पहले जब पापा ने अम्मा के जीते जी दूसरा विवाह कर लिया था और अम्मा, दादी और उसे अनाथ छोड़ कर चले गए थे, तब मनु को ऐसा लगा था जैसे वह पुन: पापा का मुँह भी देखना नहीं चाहेगीं। कितने अपमान, कितने कष्ट उन्होंने इसके बाद झेले हैं यह बात इतने लम्बे समय के बाद भी मनु भूल नहीं पाई है। अम्मा काफी दिनों तक पत्थर-सी हो गई थीं और इसके बाद आँसुओं की बाढ़ में डूबे रहना ही उनका मुख्य काम रह गया था। बेटे के दुख से दादी भी विक्षिप्त-सी हो गई थीं और साल भर के भीतर ही बल बसी थीं।

इन सबके बाद भी मनु ने जब पापा की बात छेड़ी तब अम्मा की प्रतिक्रिया बहुत सहज लगी।

अस्पताल से लौट कर मनु ने बताया--

"अम्मा, जानती हो आज अस्पताल में क्या हुआ?"

"क्या हुआ बेटी?"

उन्होंने पूछा।

"एक नया मरीज आया है.........

"वह तो रोज़ ही होता है।"

वह बात काटती हुई बोली।

"जानती हो वह कौन है?"

मनु ने पूछा।

"नहीं। मैं क्या जानूं, होगा कोई।"

अम्मा बोली।

मन ही मन सारा साहस बटोर कर उसने कहा--

"अम्मा, वह पापा हैं.............

मनु ने सोचा कि अम्मा बिफर पड़ेंगी किन्तु इसके विपरीत कुछ देर सन्नाटा रहा। अम्मा चुप,

मनु भी चुप।

फिर अम्मा ने सहज भाव से पूछा -----

"पापा यहाँ कैसे? क्या हुआ उन्हें?"

उसकी जान में जान आयी, ज्वालामुखी फटने से रह गया। अम्मा से बोली.........

"आज सुबह मेरी डयूटी थी, तभी कुछ लोग उन्हें ले आए। कार के नीचे आ गए थे, सिर में

काफी चोटें आई हैं, खून काफी जा चुका है।"

"अब कैसे हैं?"

उन्होंने पूछा।

"अभी तो हालत काफी खराब है, कुछ कहना कठिन है। आज की रात खतरनाक है।"

मनु बोली।

इसके बाद अम्मा ने जो कुछ कहा उसकी आशा उसने कभी नहीं की थी। ऐसा लगा जैसे पिछले बारह वर्षों को अपने जीवन से बिल्कुल काट कर उन्होंने कहीं अतल समुद्र में फेंक दिया है और वतमान से रूबरू होने को तय्यार हैं। अचानक उसे घोर आश्चर्य में डालती हुई वह बोलीं------

"रात को मैं तुम्हारे साथ चलूँगी बेटी। तुम खाना खा कर आराम कर लो/मैं भी बाकी काम कर लेती हूँ। कहते हुए अम्मा उठ कर भीतर चली गईं।

मनु शायद पन्द्रह-सोलह वर्ष की थी जब पापा उन्हें छोड़ कर चले गये थे और अब अम्मा बीमार पड़ी थी तब तो वह और भी छोटी थी। उम्र छोटी आयु में ही घर का सारा काम-काज उसके ही कन्धों पर आ गया था। शुरु-शुरु में सुबह का खाना बना कर मनु कालेज चली जाती थी पर बाद में कॉलेज जाना भी लगभग छूट सा गया था। एक दिन अम्मा ने ही पापा से कहा था----

"मनु की उम्र ही क्या है? पन्द्रह भी तो पूरा नहीं किया है। दिन भर काम में लगी रहती है, पता नहीं पढ़ाई-लिखाई का क्या होगा?"

पापा ने कहा था------

"किया ही क्या जा सकता है विमल ? घर में और है ही कौन संभालने वाला?"

उन्होंने लंबी सांस खींची थी और चुप रह गई थीं। पापा कुछ सोचने लगे थे और कुछ ही देर बाद बोले थे----

"मैं सोचता हूँ मनु की पढ़ाई छुड़वा दी जाये। हाई स्कूल कर ही लिया है, कभी मौका लगा तो इन्टर प्राइवेट दे देगी।"

अम्मा बोली थी----

"क्या बात करते हैं, बेटी की पढ़ाई रोक देंगे ?"

पापा ने कहा था--------

"रोकने की बात मैं कहाँ कह रहा हूँ? जब तुम ठीक हो जाओगी तब मनु फिर कालेज चली जायेगी।"

अम्मा कुछ नहीं बोली थीं और मनु का कालेज छूट गया था। वह अम्मा के पास बैठ कर खूब रोई थी।

अब भी उसे याद है/लगभग सत्रह-अठारह वर्ष पहले अम्मा अचानक बीमार पड़ गई थीं। हड्डियों और सारे बदन में दर्द रहा करता था, डाक्टर ने बताया था कि हड्डियों की टी०बी० हो गई थी और पीठ से कूल्हे तक प्लास्टर बाँध दिया गया था। डाक्टर ने कहा था कि छः महीने के बाद प्लास्टर काट कर एक्सरे लिया जायेगा। तब से अम्मा बराबर चारपाई पर लेटी रहती थीं।

मनु सोचती है तब से कितना कुछ बदल गया था, कालेज की पढ़ाई छूट गई थी और उसका सारा समय अम्मा की तीमारदारी और घर के कामों में ही गुजर जाता था। जल्दी-जल्दी खाना तैयार करना, पापा को खिलाना, खाना में टिफिन का डिब्बा रखना, दोपहर के समय अम्मा और दादी को खिलाना और फिर रात के खाने की तैयारी आदि न जाने कितने काम उसके जिम्मे थे।

दादी उसे बहुत प्यार करती थीं, सुबह शाम कहती थीं---

"लाओ बिटिया, सब्जी मुझे दे दो मैं काट दूँगी।"

जब मनु कालेज जाती थी तब दादी बड़े

प्यार से उसे बुला कर कहती थीं---
"आओ बेटा, तुम्हारी चोटी कर दूँ।"
और जब तक वह कालेज से लौट कर नहीं आती थी अम्मा से कई बार पूछती थी -----
"बहू, कहाँ रह गई बिटिया? जरा पता लगवाना पड़ोस में माला आ गई कि नहीं?"
लेकिन अब यह सब नहीं होता था। वह याद करती है अम्मा की बीमारी के कुछ ही दिनों के बाद जब प्लास्टर चढ़वाया गया था तब पापा उनके सिरहाने आ कर खड़े हो गये थे और बोले थे -----
"विमल, तुम चिन्ता क्यों करती हो? कुछ ही महीनों की तो बात है, फिर प्लास्टर कट जायेगा और तुम ठीक हो जाओगी।"
अम्मा कुछ नहीं बोली थीं। शायद मन ही मन उन्हें आभास होने लगा था कि उनकी बीमारी ठी नहीं होने वाली है। एक दिन मनु से बोली थीं ---
"बेटी, तुम पढ़ लिख जाती तो अच्छा रहता।"
उसने कहा था-----
"अम्मा, तुम अच्छी हो जाओगी तब मैं फिर से कालेज जाऊँगी।"
पापा ने ढ़ाढस बँधाया था। उसने भी सोचा था अम्मा ठीक हो जायेंगी। पर जब छः महीने बाद प्लास्टर खुला तो पता चला कि कुछ लाभ नहीं हुआ है बल्कि बीमारी बढ़ गई है और एक बार फिर से अम्मा प्लास्टर में जकड़ दी गई थीं।
धीरे-धीरे उनकी बीमारी लम्बी खिंचती चली गई।
मनु को कुछ दिनों से अम्मा का चेहरा बुझा-बुझा सा लगने लगा था। दादी पूछती-----
"बहू, कैसा जी है ? कुछ खाया - पिया?
वह कहती ---"हाँ, अम्मा जी, ठीक हूँ।"
फिर मनु से पूछती ----
"बेटा, दादी को खाना खिला दिया?"
दादी गद्गद स्वर में कहतीं---
"अरे बहू, तम्हारी यह बिटिया तो मेरी माँ है, सबका ध्यान रखती है। जुग-जुग जिये यह।"
मनु देखती अम्मा का चेहरा थोड़ी देर के लिए चमक उठता, पर यह चमक क्षणिक ही रहती।
दादी अपने कमरे की ओर जाने लगती, मनु दौड़ कर उन्हें सहारा देती। कमरे तक पहुँचा कर अम्मा के पास बैठ जाती और पूछती ----
"क्या बात है अम्मा, कहीं कोई तकलीफ है ? सर दुख रहा है ?"
कहते-कहते उनके सिर पर हाथ फेरने लगती। उसके मन में कहीं मन में कहीं बहुत भीतर तक जैसे उनका
उदास चेहरा बैठ जाता, तभी अम्मा कहती ----
"पापा नहीं आये ?"
वह बरामदे में लगी घड़ी की ओर देख कर कहती, ---
आते ही होंगे, कुछ काम है क्या?"
अम्मा कहतीं-----
"नहीं बेटा, यूँ ही पूछ लिया। बड़ी देर हो गई आज। अब तक तो आ जाना चाहिए था।"
मनु भी देख रही थी कि इधर पापा दफ्तर से काफी देर से आते और चाय नाश्ता करके फिर बाहर निकल जाते। देर रात गए घर आते, खाना-पीना खत्म करके सो जाते। मनु को लगता कि शायद ताई जी के कारण अम्मा उदास रहने लगीं थी। उसी दिन तो आई थी, पापा भी थे। आते ही बोली थी -----
"भइया, मैं तो कहती हूँ विमल को अब किसी अस्पताल में भर्ती करा दो। वहाँ अच्छी देख-रेख भी होगी और तुम्हारी रोज-रोज की परेशानी भी खत्म हो जायेगी।"
पापा चुप रह गये थे।
बाहर जाते-जाते ताई जी और पापा में बातें हो रही थी, मनु से सुन ली थी ---
"भइया, यह तो ठीक होने से रही। मैं तो कहती हूँ अब भी समय है मेरी बात पर गौर करना।"
पापा खिसियानी सी हँसी हँस पड़े थे और बोले थे -----
"पर भाभी, विमल के रहते ---"
मनु आगे नहीं सुन पायी थी, पर तब कुछ समझ गई थी कि ताई जी और पापा में क्या बातें हो रही थी।

अम्मा ने ही बताया था कि यही ताई जी अंपनी बहन प्रीति की शादी पापा से करवाना चाहती थी लेकिन संयोग से यह नहीं हो सका, और उसके बाद से वह जब-जब अम्मा की आलोचना करने का कोई भी अवसर नहीं छोड़ती थीं।
ताई जी अपनी बिन-ब्याही बहन से पापा का दूसरा विवाह कराना चाहती है, यह सोचकर ही मनु सन्न रह गई थी।
पापा का देर से घर आना बदस्तूर जारी था। एक दिन मनु ने अम्मा से यूँ ही कहा -------
"अम्मा, पापा कितने बदल गए हैं?"
वह चौंक पड़ी थी और उन्होंने पूछा था ------
"क्यों क्या हुआ?
मनु बोली थी-------
"आज भी पापा समय से नहीं आये। आज तो तुम लोगों के विवाह की वर्ष-गाँठ भी है।"
अम्मा उदास स्वर में बोली थीं----
"कुछ काम लग गया होगा और फिर यहाँ रखा भी क्या है? बीमारी बीमारी बस।"
वह समझ गई थी कि अम्मा क्या सोच रही हैं।
एक दिन पापा ने कहा था ------
"विमल, कहो तो प्रीति को कुछ दिनों के लिए यहाँ बुला हूँ। तुम्हारी भी देखभाल ठीक से हो जायेगी।"
प्रीति ! अम्मा चौंकी थी और उन्होंने धीरे से पूछा था -----
"आजकल प्रीति यहाँ आई है क्या?"
पापा ने सकपकाते हुए कहा था --
"हाँ, इधर कुछ महीनों से यहीं भाभी के पास ही रह रही है। भाभी कह रही थी।"
वह कुछ देर चुप रहीं और बोली थीं-----
"क्यों किसी को परेशान करना, बेकार में अहसान लेना।"
"नहीं, वह तो घर की ही है, अहसान की क्या बात है ?"
पापा बोले थे।
अम्मा कुछ नहीं बोली थी ओर मनु को लगा था कि वह पापा के देर से घर आने का कारण अच्छी तरह समझ गई थी।
रात को पापा आए तब मनु ने धीरे से कहा था -----
"पापा, आज तो आप को समय से आना चाहिए था। मालूम है आज क्या है?
पापा चिढ़ से गये थे और बोले थे-

"क्या है ?
फिर कुछ देर के बाद सोच कर बोले थे------
"मालूम है। क्या करूँगा यहाँ आकर, किसके लिए आऊँ।
उसका दिल बैठने लगा था। उसने पूछा था ------
"क्यों अम्मा नहीं है यहाँ ?"
पापा का पारा चढ़ गया था और चिल्ला कर बोले थे -----
"मनु, चुप रहो। क्या अब तुम्हें जवाब-देही देनी पड़ेगी ? बच्ची हो बच्ची की तरह रहो।"
गुस्से में तनतनाते हुए वह बाहर चले गये थे और रात भर नहीं लौटे थे। अम्मा रात भर रोती रहीं थी और मनु भी उसके पास बैठ कर आँसू बहाती रही थी।
काफी समय गुज़र गया बीमार अम्मा को पापा की उपेक्षा सहते हुए। मनु को अच्छी तरह याद है एक दिन पापा लौट कर घर ही नहीं आये। काफी खोज खबर की गई; ताई जी के यहाँ से पता चला कि पापा ने मंदिर में जा कर प्रीति से विवाह कर लिया है और शहर छोड़कर कहीं और चले गये हैं। उसके बाद से पापा घर नहीं लौटे। अम्मा ने अपने ज़ेवर बेच कर मनु को नर्सिंग कोर्स करवाया और उसे उसी अस्पताल में नर्स का काम मिल गया। अपने काम और अच्छे व्यवहार के कारण सभी डाक्टर मनु को बहुत चाहते थे और उन्हीं के कारण अम्मा का आपरेशन हो गया और एक वर्ष के भीतर ही वह चलने फिरने लगीं थी।
पर यह सब पुरानी बातें हैं, मनु सोचती है। और अब इतने लम्बे अन्तराल के बाद पापा फिर आ गये।
जब खून से लथपथ पापा को एमरजेंसी में लाया गया था तब मनु ही ड्यूटी पर थी और यकायक इतने वर्षों बाद उन्हें उस दशा में पाकर वह अचम्भित रह गई थी। अतीत की बहुत सारी घटनाएं याद आने लगीं और क्षणभर को मन में धृणा का ज्वार-सा उठा किन्तु उसने सीध्र ही अपने को सामान्य कर लिया था। डाक्टर ने पापा को देखने के बाद आवश्यक उपचार किया था और मनु से बोले थे -----
"मरीज की दशा गम्भीर है, जरा ध्यान रखना। खून की बोतल और मंगवा लेना।"
पुरानी बातों की कड़वाहट को मन से दूर हटाकर वह पापा के पास ठहर गई थी। कुछ होश में आने पर उसने कहा था ---
"पापा, पहचान रहे हैं? मैं मनु।"
पापा ने मनु की ओर देखकर अपने आँसूओं को रोकते हुये कहा था --
"हाँ बेटा, तुमने तो पहचान लिया, मैं ही तुम सब को भूल गया।"
उन्हें चुप कराते हुये वह बोली थी -
"अब चुप रहिए, पाप। सोने की कोशिश कीजिए।"
कुछ देर बाद उन्होंने अपने घर का पता बताते हुये कहा था ....
"बेटा, खबर कर दो। शानू आ जाएगी।"
मनु ने पापा के दिये पते पर सूचना भेजवा दी थी, और ड्युटी समाप्त होने पर घर चली आई थी। चलते समय जब वह पापा के पास आई थी तब वह बोले थे -----
"क्या जा रहीं हो ? कल आवोगी ? और बेटा, तुम्हारी अम्मा -------
कहते-कहते उनका गला रूँध गया था। वह चुपचाप चल पड़ी थी।

और अब अम्मा पापा को देखने जाने को तय्यार बैठी हैं। मनु सोचती है ---- कैसा है यह मन, कैसा है यह संस्कार, और कैसा है यह बन्धन ?
अम्मा तैयार हो कर आई और मनु से बोली -----
"चलो बेटा, देर हो रही है। तुम्हारी ड्यूटी का समय हो गया है।"
मनु जानती है रात के दस बजे उसे वहाँ पहुँचना होता है पर आज अम्मा भी साथ थीं। दोनों अस्पताल की ओर चल पड़ीं। इमरजेन्सी-वार्ड में बेड पर पापा लेटे थे। नर्स ने बताया कि मरीज की दशा काफी बिगड़ चुकी है और बचने के आसार कम हैं। अम्मा जा कर बगल में खड़ी हो गई।

पापा ने एक बार आँखें उठाई -- ठण्डी झील सी पर लावे जैसी उबलती लगी। कुछ देर तक एक टक देखते रहे और अम्मा को वहाँ खड़ा पा कर अपने दोनों हाथ माथे से लगाने का प्रयास करने लगे। मनु ने पापा का ड्रिप वाला हाथ रोक दिया , अम्मा सकुचाई सी खड़ी रहीं।
पापा बोले -------
"विमल, तुम आओगी यह सोचा न था। यह तो किस्मत अच्छी थी मनु यहाँ थी और उसने मुझे पहचान लिया।"
अम्मा चुप, पापा भी चुप।
कुछ क्षणों बाद पापा ने कहा ------
"मैं क्षमा के लायक तो नहीं हूँ पर अब अन्तिम समय आ गया है। एक विनती है, अगर हो सके तो ------
अपने मन के भावों को दबाते हुए अम्मा बोली -----
"हाँ, हाँ, कहिए ------
पापा की आँखों से आँसू बह रहे थे। उन्होंने अम्मा की ओर देखते हुए कहा -
"तुम शायद जानती हो, मैने प्रीति से ब्याह कर लिया था और तुम सबको छोड़ कर चला गया था। शायद उसी पाप की सजा मुझे मिल गई। प्रीति एक बच्ची को छोड़ कर इस संसार से विदा हो गई। मेरे न रहने पर वह बच्ची अनाथ हो जायेगी। क्या तुम उसे रख सकोगी अपने पास ?"
तभी ग्यारह-बारह साल की एक लड़की वार्ड में घुसी और पापा के पास आकर खड़ी हो गई।
पापा बोले -----
"लो , आ गई शानू,"
फिर मनु की ओर दिखाते हुए बोले -----
"यह तुम्हारी दीदी है।"
और अम्मा की ओर मुख करके बोले ------
"यह तुम्हारी माँ -------"
उसके बाद पापा की साँसें उखड़ने लगी। डाक्टर दौड़ कर आए, आक्सीजन लगायी गयी। कुछ तबीयत सम्भली, पर फिर बिगड़ने लगी और बिगड़ती चली गई। कुछ ही देर बाद उन्होंने अन्तिम साँसे ली।
शानू फफक कर रो पड़ी, मनु ने आगे बढ़कर उसे अपने गले से लगा लिया। उसने देखा अम्मा ने शानू की पीठ पर अपना सान्त्वना भरा हाथ रख दिया। उसे लगा जैसे अम्मा के शरीर से ममता की दूधिया चाँदनी निकल कर धीरे-धीरे उस समूचे वार्ड में फैल रही है।

सम्पर्क: सी/5-सुन्दरम फ्लैट्स,
एल०डी०इ०जीनियरिंग कॉलेज
हॉस्टल कम्पाउन्ड, नवरंगपुरा,
अहमदाबाद-380001 (गुजरात)

कहानी

गो-वंश रक्षक तुरुक

❑ कृष्ण कुमार राय

लाला राम किशुन अपनी दिनचर्या के अनुसार उस दिन भी सुबह चार बजे घर से लोटे में पानी लेकर शौच के लिए निकल पड़े थे। वह टहलते हुए गाँव से काफी दूर निकल जाया करते थे। नित्य-क्रिया से निवृत्त होकर लौटने में उन्हें पूरे घण्डे भर का समय लगता था। सुबह का टहलना और निबटान दोनों काम साथ-साथ हो जाता था। पैंसठ साल की पकी उम्र में भी उनकी उम्दा सेहत का राज़ शायद यही था। जवानी में तो उनकी जिस्मानी कूवत और बाजू की ताकत का यह आलम था कि दूर-दराज के गाँवों के लोग भी जब मेले-हेले से नये बैल खरीदकर लाते तो उन्हें नथवाने के लिए लाला जी की ड्योढ़ी पर हाजिर होते। लाला जी बड़े से बड़े बिगड़ैल बैल की सींगें जब दोनों मुट्ठियों में जकड़ कर खड़े हो जाते तो बैल टस से मस न हो पाते और लोग आसानी से उन के नथुनों में नकेल डाल देते। ज़ाहिर था कि लाला जी महज कलम-घिस्सू किस्म के लाला न थे। कमान के सामने हमेशा बढ़िया नस्ल की गाय बँधी रहती। न जाने उसके दूध की तासीर थी या बाप-दादों के खून का असर कि उनके रग-रग में बला की कूबत भरी पड़ी थी।

जनवरी का महीना था। पौ फटने में अभी काफी देर थी। लाला जी जब गोंइड के खेतों के बीच की पगडंडियों से गुजरतें हुए दीना महतो की बगिया के करीब पहुँचे तो उन्हें बगिया के पूरब तरफ स्थित अन्धे कुएँ की ओर से किसी जानवर के हँकड़ने जैसी धीमी आवाज सुनायी पड़ी। कोई अजनबी या डरपोक किस्म का इन्सान होता तो उस धुँधलके में डर के मारे सिट्टी-पिट्टी गुम हो जाती और उल्टे पाँवों भाग खड़ा होता। लेकिन लाला जी को डर-भय कहाँ। तेजी के साथ कदम बढ़ाते हुए कुएँ की तरफ बढ़ चले। ज्यों-ज्यों कुएँ के नजदीक पहुँचते जा रहे थे, आवाज तेज होती जा रही थी। कुआँ 25-30 हाथ गहरा था, लेकिन बीसों साल से सूखा पड़ा था इसीलिए गाँव-जवार में 'अँधरा इनारा' के नाम से जाना जाता था। लाला जी ने किनारे पर बैठकर नीचे झाँका लेकिन धुप्प अँधेरे में भला क्या नजर आता। सहसा लाला जी की आँखें कुएँ के तल से उठी दो चमचमातीं आँखों से जा टकरायीं। रह-रहकर कुएँ से हँकड़ने की आवाज उठ रही थी। लाला जी को यह अनुमान लगाते देर न लगी कि कोई बड़ा जानवर अँधेरे में कुएँ में जा गिरा है जो अभी जिन्दा है। बिचारे बड़े असमंजस में पड़ गये कि क्या किया जाय। गाँव की तरफ अभी कोई आदमी नजर नहीं आ रहा था। हाँ, कुछ औरतें जरूर नित्य-क्रिया के लिए आस-पास के खेतों और बगीचों की तरफ चल पड़ी थीं। लाला जी ने जल्दी से अपना लोटा उठाया और थोड़ी दूर जाकर शौच के लिए बैठ गये। वहाँ से निवृत्त होकर वह फिर अन्धे कुएँ के पास आ गये। पाँच बज चुका था। पूर्वी क्षितिज पर हल्की सी लालिमा छाने लगी थी। इसी बीच उसकी नजर उधर से गुजर रहे रामू के बेटे जियावन पर पड़ी। उन्होंने आवाज लगायी तो जियावन दौड़ता हुआ पास आ गया और पैर छूकर पालागन किया। लाला जी ने सिर पर हाथ फेरते हुए आशीष दिया और जरा घबरायी हुई आवाज़ में बोले, "बेटा, लगता है रात के अँधेरे में कोई जानवर कुएँ में गिर गया है। बार-बार नीचे से हँकड़ने की आवाज आ रही है। दौड़कर गाँव में चले जाओ और लोगों को खबर कर दो। अगर जल्दी ही उसे बाहर न निकाला गया तो शायद नीचे ही मर-खप जायेगा।

देखते ही देखते वह लँगोटधारी बूढ़ा-जवान छलांग लगाकर कुएँ में लटकतें रस्सों को पकड़कर झूल गया। लाला जी के व्यक्तित्व में गज़ब का संमिश्रण था यौवन के ऊर्जस्वित उत्साह और वार्द्धक्य के गरिमामण्डित विवेक का।

"अभी खबर करता हूँ चच्चा। बाँस-बल्ली, नार-रस्से का भी जुगाड़ करके ले आता हूँ।" कहता हुआ जियावन उल्टे पैरों गाँव की तरफ भागा। लाला जी वहीं कुएँ के पास बैठकर मन ही मन उद्धार की योजना बनाने लगे। धीरे-धीरे कुछ उजास बढ़ा तो लाला जी ने फिर कुएँ में झाँककर देखा। अब सब कुछ साफ नजर आने लगा था। नीचे का दृश्य देखते ही लाला जी ने दाँतो तले उँगली दबा ली। अरे, यह तो कबरा साँड़ था जो गाँव की गायों के झुण्ड के साथ चरागाह में घूमा करता था। खासा भारी - भरकम डील-डौल था उस साँड़ का। उसे कुएँ से बाहर निकालना बच्चों का खेल न था। रह-रहकर साँड़ ऊपर की ओर सिर उठाता और कातर दृष्टि से देखता, मानो सहायता के लिए मूकयाचना कर रहा हो। अपनी एक अगली टाँग मोड़कर वह ऊपर उठाये हुए था और शरीर का भार धुएँ के परदे से टिकाये खड़ा था। लगता था उसकी वह टाँग जख्मी हो गयी थी। लाला जी की आँखों में अनायास ही आँसू छलछला आये। वह गाँव की ओर टकटकी लगाये बैठे रहे।

थोड़ी ही देर में लाला जी ने देखा कि गाँव वाले बाँस-बल्ली और नार-रस्सा लिए कुएँ की ओर भागते चले आ रहे हैं। देखते ही देखते वहाँ लोगों का रेला लग गया। लाला जी के निर्देशन में कुछ उत्साही युवकों ने जल्दी-जल्दी कुएँ के किनारों पर मजबूती के साथ बाँस-बल्लियाँ गाड़ कर खड़ी कर दीं। लोहे की एक बड़ी गड़ार भी बल्लियों के सहारे टाँग दी गई। कई मजबूत नार-रस्से कुएँ में ढील दिये गये। अब सब से अहम सवाल पेश हुआ कि कौन कुएँ में उतरकर साँड के शरीर में रस्सियाँ बाँधे। लोगों में काना-फूसी होने लगी। साँड़ कुएँ में गिरने और जख्मी होने से बेहद क्रुद्ध होगा। जो भी नीचे उतरेगा उसकी धज्जियाँ उड़ाकर धर देगा, शरीर

को चिथड़ा कर देगा। लाद में अपनी पैनी सींगे धुसेड़कर अँतड़ियाँ बाहर कर देगा। सभी आगा-पीछा करने लगे। कोई अपनी जान जोखिम में डालने को तैयार न था। सारा हंगामा, शोर-शराबा और जोश-खरोश थोड़ी देर के लिए जबर्दस्त सन्नाटे में बदल गया। कौन इस खामोशी को तोड़े। सभी प्रश्न भरी नजरों से एक दूसरे का मुँह ताकते और काना-फूसी करते रहे। सहसा लोगों ने देखा कि लाला जी की काया में पैंसठ साल का जवांमर्द अपनी धोती और अँगरखा उतारकर एक ओर फेंक चुका था। देखते ही देखते वह लँगोटधारी बूढ़ा-जवान छलांग लगाकर कुएँ में लटकते रस्सों को पकड़कर झूल गया। लाला जी के व्यक्तित्व में गज़ब का संमिश्रण था यौवन के ऊर्जस्वित उत्साह और वार्द्धक्य के गरिमामण्डित विवेक का। लोग उनके अद्भुत जीवन और उत्साह को अपलक देखते ही रह गये। इतने ही में कहीं से दौड़ता-भागता बरकत खलीफा हाँफता हुआ वहाँ आ पहुँचा। उसे गाँव में ही सारी खबर लग चुकी थी। पलभर उसने खड़े होकर चारों तरफ निगाह दौड़ायी और स्थिति का जायजा लिया। कुएँ में लटकते रस्सों को पकड़कर सर्कस के जाँबाज़ कलाकार की तरह झूल रहे लाला जी पर निगाह पड़ते ही वह चिल्ला पड़ा, अरे किशुन भैया, बुढ़ौती में यह क्या गज़ब ढाने पर आमादा हैं आप! लानत है हम सबकी जिन्दगी को जो हमारे रहते आपको कुएँ में उतरना पड़े। गाय का दूध आपही नहीं हम भी पीते हैं भैया। वह हम सबकी माता है। जो-वंश की रक्षा करना आपका ही धर्म नहीं, हमारा भी फर्ज है। हमें भी अपना कर्तव्य निभाने का मौका दीजिए। आप ऊपर आ जाइये भैया। आपका छोटा भाई बुरकत अभी मरा नहीं है और न उसके लहू का रंग सफेद हुआ है। उसके रहते यह हरगिज नहीं हो सकता कि आपको यह जहमत उठानी पड़े।

बरकत खलीफा ने फुर्ती से अपने कपड़े उतार फेंके और 'या अली' कहता हुआ रस्सा पकड़ धर नीचे झूल गया। लगता था सर्कस के दो-दो कलाकार अब अपनी कालाबाजी दिखाने को तैयार हैं। लाला जी बोले, "सारी उम्र तो मैंने बैल नथनायें। आज कुएँ में गिरे साँड़ के उद्धार का हक तो मेरा बनता है खलीफा। चलो, मैं भी तुम्हारे साथ नीचे उतरता हूँ।"

बरकत खलीफा के आगे लाला जी की एक न चली। आखिरकार उन्हें आधे कुएँ से बाहर आना पड़ा फिर तो देखते ही देखते वह अधेड़ तुरुक सैकड़ों हिन्दुओं की मौजूदगी में गोवंश के रक्षार्थ जान की बाजी लगाकर रस्सों के सहारे सरकता हआ सूखे कुएँ की तलहटी में जा पहुँचा। लोगों ने झांककर नीचे देखा तो सैकड़ों गर्दनें शर्म से एक साथ झुक गयीं। क्रुद्ध साँड़ द्वारा घातक हमले की उनकी सारी आशंकाएँ निर्मूल साबित हुईं। साँड़ तो मानो बेकसी के साथ अपनी जीवन-रक्षा की आस लगाये भींगा सियार बना खड़ा था। बरकत खलीफा ने सबसे पहले साँड़ का माथा चूमा और उसकी पीठ सहलायी। साँड़ पूर्ण आत्म-समर्पण की मुद्रा में उसके सामने खड़ा रहा। बरकत खलीफा ने नीचे लटक रहे सारे रस्सों को साँड़ के शरीर में जगह-जगह कसकर बाँध दिया और फिर एक बार उसका माथा चूमकर रस्सों के सहारे ऊपर चढ़ने लगा। लोग खड़े शरमायी आँखों से एकटक यह नजारा देखते रहे।

ऊपर आते ही बरकत खलीफा ने लोगों को ललकारा। आगे-आगे खलीफा और लाला जी तथा उनकी पीछे सौकड़ों गाँव वालों की जमात। सब मिलकर रस्से खींचने लगे। देखते ही देखते वह भारी-भरकम डील-डौल वाला साँड़ ऊपर आ गया। सारा वातावरण 'हर-हर महादेव' के नाद से गूँज उठा। खलीफा ने दौड़कर कुछ जवान पट्ठों की मदद से साँड़ को किनारे की तरफ खींचा और धीरे-धीरे उसके जिस्म से रस्सों के बन्धन खोल डाले। साँड़ की एक अगली टाँग बाकई जख्मी हो गई थी। वह अपने बल पर खड़ा न हो सका और धीरे से एक ओर लुढ़क गया। लोग खुशी से झूम रहे थे। क्यों न झूमते? आखिर गो-वंश के उद्धार का महापुण्य जो कमाया था सबने।

बरकत खलीफा था तो तुरुकिया हज्जाम लेकिन उसे हज्जामी के काम में कम जर्राही और टूटी-फूटी हड्डियों को जोड़ने बैठाने की कला में ज्यादा महारत हासिल थी। जख्मी साँड़ को एक सगड़ी पर लदवाकर वह अपने दरवाजे पर ले आया और पूरी लगन के साथ तबतक उसकी टूटी टाँग की मरहम-पट्टी करता रहा जब तक वह अच्छी तरह चलने-फिरने के काबिल नहीं हो गया। जिस दिन कबरा साँड़ पूर्ण रूप से चंगा होकर मस्ती के साथ झूमता-हँकड़ता फिर गायों के झुण्ड के साथ चारागाह की ओर चला, बरकत खलीफा की बाँछें खिल उठीं। मारे खुशी के उसने गाँव भर के बच्चों को जुटाकर गुड़-बताशे बाँटे।

गो-रक्षा का फतवा देने वाले हजारों हिन्दू-वासियों के उस गाँव में आखिरकार गो-वंश की रक्षा का असली सेहरा बँधा था गाँव के एक अधेड़ तुरुक बरकत खलीफा के सिर पर।

संपर्क: एस 2/5ए०, अर्दली बाजार,
(अधिकारी हॉस्टल के समीप)
वाराणसी-221002

शुभकामनाओं सहित
फोन नं०- 226393
पोपुलर फार्मा
अंग्रेजी दवाखाना
न्यू मार्केट, पटना-1

मुनिश्री लोक प्रकाश 'लोकेश' की दो कविताएं

आंसू पीकर

कल रात
आकाश सिसकता रहा
और धरती
उसके आंसुओं को
अपने दामन में समेटती रही
न चाँद निकला, न सितारे
घोर अंधेरे में
था मुश्किल हाथ को हाथ दिखना
पेड़-पत्तों की खड़खड़ाहट भी
पैदा कर रही थी डर
मगर कभी-कभार आकाश में
चाँदी-सी खिंचती लकीरें
कुछ पहुँचाती राहत
ऐसे में
आज सुबह जब सूरज निकला
तो देखा
धरती ने आंसू पीकर भी चारों ओर
बाँट दी है खुशहाली
और इस खुशनुमा मौसम में
लगता है
हर चेहरा खुशमिज़ाज़ है।

घृणित साजिश

नहीं होगी
कभी सफल
भाषा, जाति
और धर्म के
नाम पर
देश को
बंटने की
घृणित साजिश
चाहे खाड़कू
उल्फा, जंगजू
ता उम्र बने रहें
लड़ाकू
झेल लेगी
इस देश की
इस्णती सहिष्णुता
हर प्रहार जबतक
न हो जाए पैदा
फिर कोई
सुभाष, पटेल
भगत या शेखर
विफल करने
आततायी ताकतों के
नापाक मसूंबे
तब तक।

संपर्क : अणुव्रत भवन,
दीन दयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली-2

एक निवेदन

पत्र-पत्रिकाएं खरीदकर पढ़ने में जो मजा आता है वह मुफ्त में नहीं। अब तक प्राप्त 'विचार दृष्टि' के अंकों से आपको यह भान हो गया होगा कि यह शुद्ध रुप से राष्ट्रीय चेतना की वैचारिक पत्रिका है व्यवसायिक नहीं इसलिए इसकी सदस्यता ग्रहण कर इसके नियमित एवं सफल प्रकाशन में सहयोग अपेक्षित सहयोग प्रदान करना आपका दायित्व बनता है और यह आपकी गरिमा के अनुरुप भी होगा।

-संपादक व प्रकाशक

भारत को भारत रहने दो

राजेश 'चेतन'

हवा विषैली है पशिचम की
यहाँ न इसको बहने दो
भारत को भारत रहने दो
घर अपना मत बहने दो।।

निज पुरखों ने बलिदानों से
जिसको जग सिरमौर बनाया
भारत को 'सोने की चिड़िया'
सारी दुनिया ने बतलाया

मानवता हित पूर्ण विश्व को
हमने गीता-ज्ञान दिया था
जो भी आया, हमने उसको
भाई कहकर मान दिया था

आस्तीन के साँपो! तुम को
हमने जी भर दूध पिलाया
ज़हरीलो! तुमने डस-डस कर
भारत का क्या हाल बनाया

लेकिन अभी तो हमने तुमको
अपना एक रूप दिखलाया
क्रोध आया तो शत्रु-सर्प फन
हमने ऐडी तले दबाया

ज़िंदा रहना चाहो तो, मत
क्रोध में हमको दहने दो
भारत को भारत रहने दो
घर अपना मत ढहने दो।।

देव पाणिनी धन्य-धन्य हैं
जग को अक्षर ज्ञान कराया
शून्य खोज, भारत ने जग को
प्रथम गणित का मान कराया

धन्वन्तरी ने सबसे पहले
रोगों का उपचार किया था
संजीवनी विद्या के द्वारा
शव में भी सञ्चार किया था

राजनीति का ज्ञान न मिलता
अर्थशास्त्र कब जग में आता
भारत भूमि का चणक पुत्र जो
सारे जग को नहीं सिखाता

सुनें संस्कृति के दुश्मन अब
और नहीं पाखंड चलेगा
निज पुरखों के दिव्य ज्ञान का
भारत-भू पर दीप जलेगा

बाँध स्वार्थ के और न बांधो
प्रेम की सरिता बहने दो
भारत को भारत रहने दो
घर अपना मत ढहने दो।।

व्यवसायी बन आए गोरे
कूटनीति का दांव चलाया
घर की फूट हमें ले डूबी
भारत माँ को कैद कराया

त्याग तपस्या बलिदानों से
गोरों का साम्राज्य हिला था
खण्डित थी पावन भारत-भू
टूटा फूटा देश मिला था

अँग्रेजी ढर्रे पर ही जब
हमने शासन तंत्र बनाया
कुछ भूले-भटके बेटों ने
अपने हाथों देश जलाया

वोट डाल निश्चिंत हुए हम
बेफिक्री की नींद सो गए
भ्रष्ट हो गए शासक अपने
नेता माला-माल हो गए

हमने न्योता देकर खुद ही
मल्टीनेशन को बुलवाया
खूब विदेशी चकाचौंध में
अपनी आँखों को चुँधियाया

वस्तु, वास्तु, उद्योग कभी सब
हमने ही जग को सिखलाया
क्यूँ भूले अब निज गौरव हम
क्यूँ निज संस्कृति को ठुकराया

आयातित चीजों का आखिर
कब तक हम उपयोग करेंगे
और हमारे संसाधन का
दोहन कब तक लोग करेंगे

अर्थ तंत्र है विवश हमारा
जाल कर्ज का कसता जाता
'सोने की चिड़िया' भारत को
नाग विदेशी डसता जाता

जला विदेशी माल की होली
ब्यार स्वदेशी बहने दो
भारत को भारत रहने दो
घर अपना मत ढहने दो।।

संपर्क: 126, मॉडर्न अपार्टमेन्ट्स,
सेक्टर-5, प्लॉट-5,
रोहिणी, दिल्ली-85

'शाकिर' की दो ग़ज़लें

प्रा० शशिकान्त पशीने 'शाकिर'

1

मजबूर बदन बिकते देखे।
कलियों के चमन बिकते देखे।
मंदिर में हुआ है ये सौदा,
कल राम-लखन बिकते देखे।
आँखों से बिखरते ही सपने,
वीरान नयन बिकते देखे।
पूछे न कोई काजल-कुंकुम,
लाली के लगन, बिकते देखे।
इन्साफ भला क्या पायेंगे,
मुन्सिफ के ही मन बिकते देखे।
लोगों ने दहेजों की खातिर,
सजनी के सजन बिकते देखे।
लाशें भी वहाँ पे, सहम गयीं,
जब उनके कफन बिकते देखे।
माता से नहीं कम, अपनी ज़मीं,
फिर भी तो वतन बिकते देखे।
क्या तुमको बतायें, ऐ लोगो,
क्या-क्या ये नयन बिकते देखे।
क्या इल्मो-हुनर पर नाज़ करें,
'शाकिर' ने तो फन बिकते देखे।

2

अब तो बेज़ार हो गये रिश्ते।
कितने लाचार हो गये रिश्ते।
आस्तीनों में जैसे, हो खंजर,
भुभती कटियार हो गये रिश्ते।
डर समाया हुआ है घातों का,
इतने खूँखार हो गये रिश्ते।
डस न ले ये, गले से लगते ही,
नाग का हार हो गये रिश्ते।
जाने कब तन से सर उड़ा देगी,
नंगी तलवार हो गये रिश्ते।
खून अपनों का बेच देते हैं,
मोल बाज़ार हो गये रिश्ते।
नाम के रह गये हैं अब नाते,
मतलबी यार हो गये रिश्ते।
कौन 'शाकिर' खुशी से मिलता है,
मन पे अब भार हो गये रिश्ते।

संपर्क: नामदेव महाराज मंदिर के पास, गाडगे नगर, अमरावती-444603

हाइकु-कवितायें

रमेश चंद्र शर्मा

शुद्ध हृदय
त्याग तप करुणा
कर्त्तव्य कर्म

अनंत सत्य
अनंत अभिव्यक्तियाँ
सत्य तक ही

कर्म में रत
तथापि अनासक्त,
शान्त, प्रसन्न

माया-मोहित
विषाद व विलास
अशान्त, क्षुब्ध

सीता-सतीत्व
सावित्री - सेवा भाव
राधा का प्रेम

विधि - विधान
परस्पर संघर्ष
स्वयं को नष्ट

स्वप्न, सहस्र
जगत की वस्तुयें
पायीं, न पायीं

छोटा भी बड़ा
विचारों का साम्राज्य
त्याग से श्रेय

कलिकाल में
हरिश्चन्द्र एक न
भ्रष्ट अनेक

सत्ता, सच्चायी
सौतेली बहिनें हैं
कभी भी क्लेश

संपर्क: उदय हाउसिंग सोसाइटी, बैजलपुर, अहमदाबाद-380051

धनंजय श्रोत्रिय

अमावस-सी
रात काली है प्यारो
तुम हटाओ

जला शहर
उजड़ी बस्तियाँ क्यों
मालूम नहीं

मत भड़का
अल्लाह के बंदों को
हमीं जलेंगे

बचो तुम भी
ईश्वर-अल्लाह से
इंसान बनो

काजल नहीं
कालिख, मत पोतो
चेहरे पर

आओ जलाएँ !
गाँधी जी की धरती
आई दीवाली

घोर अंधेरा
दम है तो अपनी
रोशनी दिखा

पास रब के
हे तुरूप का इक्का
चलू क्या चाल?

शंखध्वनी से
ईश, न अजान से
अल्लाह आते

संपर्क: ई-404, अलकनंदा अपार्टमेंट, रामपुरी, चंद्रनगर, गाजीयावाद-201011

व्यग्यकाए

दुर्गाशरण मिश्र

परिवर्तन

वर्तमान परिदृश्य में
कानून की व्याख्या-
'का-नून
कातिलों व लूटरों
के लिए नहीं
नून-तेल-लकड़ी वालों
के लिए है।'

अन्याय

अमीरी-गरीबी पर
उनकी टिप्पणी-
'पेट-
गरीबों के लिए
दंड
और अमीरों के लिए
उपहार !'

ढोंग

अरथी के समक्ष
उन्हें नतमस्तक देख
वे उन्हें ज्ञात कराए-
'श्रीमान् ! ये वही हैं
जिन्हें आप कोसते रहे
प्राण हरने की सोचते रहे
कभी फूटी आँखों देखा नहीं
अब अनर्थ क्यों कर रहे ?'

दस्तूर

भ्रष्ट नौकरशाही पर
उनका आक्षेप-
'मेज की सरकार
बाएँ हाथ से
कलम थामती
दाएँ हाथ से
रेशमी बटुआ !'

संपर्क: राजभाषा अधीक्षक, ज०प्र०ना० हवाई अड्डा, पटना

क्या गांधी विचारधारा आज भी सार्थक है?

❑ किशन शर्मा

गांधी जी का जन्म 2 अक्टूबर सन् 1869 को पोरबंदर में हुआ। हिन्दू- मुसलमान को समान दृष्टि से दखने की नीति नाथू राम गोडसे को पसंद नहीं थी। इसी मतभेद के कारण उसने 30 जनवरी, 1948 को महात्मा गांधी की प्रार्थना सभा में गोली मारकर हत्या कर दी। किंतु उनकी नीतियों, विचारों की हत्या तो दिन-प्रतिदिन आजकल हो रही है यद्यपि गांधी के विचारों को लागू करने की आज पहले से ज्यादा आवश्यकता है।

गांधी जी ने कहा था, समाज के सबसे गरीब कमजोर आदमी को हमें सबसे अधिक लाभ पहुंचाने की प्राथमिकता देनी चाहिए, किंतु स्वतंत्र भारत में आज भी गरीब कमजोर आदमी रोजी-रोटी, मकान झोपड़ी के लिए भटक रहा है और सरमाएदारों की संख्या और आकार बढ़ते जा रहे हैं।

गांधी जी जाति प्रथा के कलंक को मिटाना चाहते थे, इसलिए स्वयं अछूतों की बस्ती में निवास करते थे ताकि उनकी समस्याओं का अधिक से अधिक जानकर समाधान कर सकें किंतु स्वतंत्र भारत में आज भी अछूत कहे जाने वाले जनसाधारण को जिंदा जलाने की घटनाएं बढ़ रही हैं तथा महिलाओं से बलात्कार हो रहे हैं। जाति प्रथा को बढ़ावा देकर वोट बटोरने की नीति का विस्तार हो रहा है। आज अयाशी में जीवन बिताने वाले नकली नेता, महल और कोठियों में निवास करते हैं और गरीब जनता को केवल नारे देकर भरमा रहे हैं।

गांधी जी ने स्वराज की परिकल्पना इस आधार पर की थी कि मेरे सपनों का स्वराज गरीब आदमी का स्वराज होगा, जहां छोटे से छोटा ग्रामीण नागरिक देश की नीति बनाने में भागीदार होकर यह महसूस करे कि देश निर्माण में भी वह अपनी भूमिका अदा कर रहा है। लेकिन राज्य सत्ता कुछ समृद्ध परिवारों की बपौती बन गई है। राजा-महाराजाओं की तरह, नेताओं के सपूत व रिश्तेदार ही सत्ता का लाभ उठा कर उसका दुरुपयोग कर रहे हैं। नागरिक का कार्य सिर्फ वोट डालकर समाप्त हो जाता है। कमजोर, ताकतवर गरीब और अमीर के बीच दूरी घटने के बजाए असमानता बढ़ती जा रही है। जब तक आर्थिक और सामाजिक विषमता बनी रहेगी, गांधी जी का सपना साकार नहीं होगा। समाजवाद, सर्वोदय

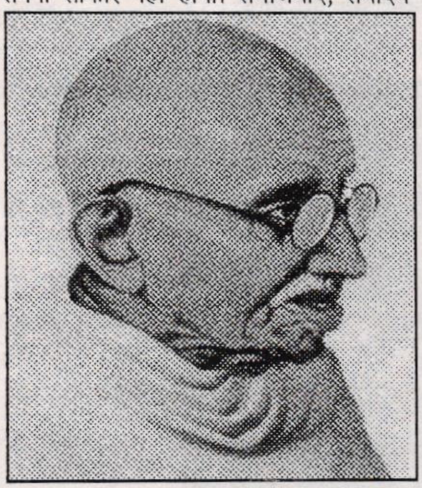

केवल नारा बनकर रह गए है। गांधी जी ने विदेशी वस्तुओं की होली जलाकर ग्रामोद्योग को अपनाया था। उनका कहना था कि जो चीज लाखों को नहीं मिलती उसे लेने से हम इंकार कर दें किंतु हम हर विदेशी चीज और विदेशी भाषा को अपना कर उसी में अपनी प्रतिष्ठा व गौरव मान बैठे हैं और अपनी प्राचीन संस्कृति से विमुख होते जा रहे हैं। दूरदर्शन पर आधुनिकता के नाम पर पश्चिम की नकल से भरपूर नग्नता, अश्लील नृत्य, हिंसक फिल्म देखकर नागरिकों के चरित्र का पतन हो रहा है। क्या यही गांधी के रामराज्य का उद्देश्य था? गांधी जी सत्ता का विकेन्द्रीकरण चाहते थे। हमने सत्ता दिल्ली में केन्द्रीत कर दी और उत्पादन के साधन जनता से छीन कर निजी हाथों में सौंप दिए।

गांधी जी ने कहा था, मैं शराबखोरी को चोरी और व्यभिचारों से भी अधिक निंदनीय समझता हूं, यदि हम शराब और अन्य नशीले पेयों की आदत के शिकार बने रहे तो हमारी स्वतंत्रता भी गुलामों की स्वतंत्रता होगी।

किंतु स्वतंत्र भारत में नशीले पदार्थों का उत्पादन और बिक्री दिन दूनी रात चौगुनी होती जा रही है। केन्द्र और प्रांतीय राज्य शराब बनाने व बेचने पर करोड़ों रुपयों का राजस्व प्राप्त कर जनता को शक्तिहीन और मूर्ख बना रहे हैं और शराब का प्रचार व पीने वालों की संख्या बढ़ती जा रही है। गांधी कहा करते थे कि अत्याचार करने वाला ही नहीं, अत्याचार सहने वाला भी अपराधी है।

आज विरोध करने की हमारी शक्ति कुंठित होती जा रही है। हम निजी स्वार्थ के कारण अन्याय, अत्याचार, गलत नीतियों को सहन कर रहे हैं। बहुराष्ट्रीय कंपनियां भारत को अपंग बनाने पर तुली हैं। विरोधी ताकतें उग्रवाद का सहारा लेकर देश को कमजोर कर रही हैं और हम आज मूकदर्शक बनकर सब कुछ चुपचाप सहन करते जा रहे हैं। गांधी जी ने कहा था अत्याचारी का पूरी शक्ति से विरोध करना भी अहिंसा है। करो या मरो।

पंजाब केसरी से साभार

बापू की जयंती पर

वह अजनबी

❑ गगनसुत नवीन

2 अक्टूबर की तड़के सुबह सारी दिल्ली अभी भी सो रही थी, लेकिन एक मैं था जो उसकी सड़कों को अपनी घिसी पुरानी चप्पलों से छान रहा था। दंगे के कारण लगी कर्फ्यू से अभी-अभी यह शहर मुक्त हुआ था। संयोग ही कहिये कि चाय की एक दुकान, सड़क किनारे, खुली मिली। वहाँ पर रखे रेडियो पर किसी माननीय मंत्री का भाषण चल रहा था- "इन दंगों और भ्रष्टाचार के खिलाफ आजादी की लड़ाई की तरह ही एक और लड़ाई से जूझनी होगी।

चुनाव का मौसम आया हुआ था। चारों तरफ दीवारें चुनावी पोस्टरों से पटी थीं। थोड़ी देर में ही लाउडस्पीकर से चुनावी शोर हक में गूँजने लगा। सहसा मेरी नजर राजघाट की ओर गयी। देखा, अर्द्ध लंगोटी पहने जीर्ण-शीर्ण शरीर धारी एक गंजा बूढ़ा वहाँ पर लाठी टेके, कमर पर घड़ी लटकाये, खड़ा है। उस अजनबी को मैं विस्फारित नेत्रों से देखता रह गया। लगा, इसे कहीं देखा है, पर कहाँ? मैं सोचने लगा।

मैंने उसे पहचानने हेतु अपने मन-मस्तिष्क कर पूरा खाका खींचते हुए बल दिया था ही कि गौर किया, वह बूढ़ा अपनी दंतहीन मुस्कान के साथ गोल-गोल चश्मे के शीशे से झाँककर मुझे ही निहार रहा है। मैं औपचारिकतावश उनसे पूछ बैठा-"बाबा, भटक गये हैं क्या? कहाँ जाना है आपको?"

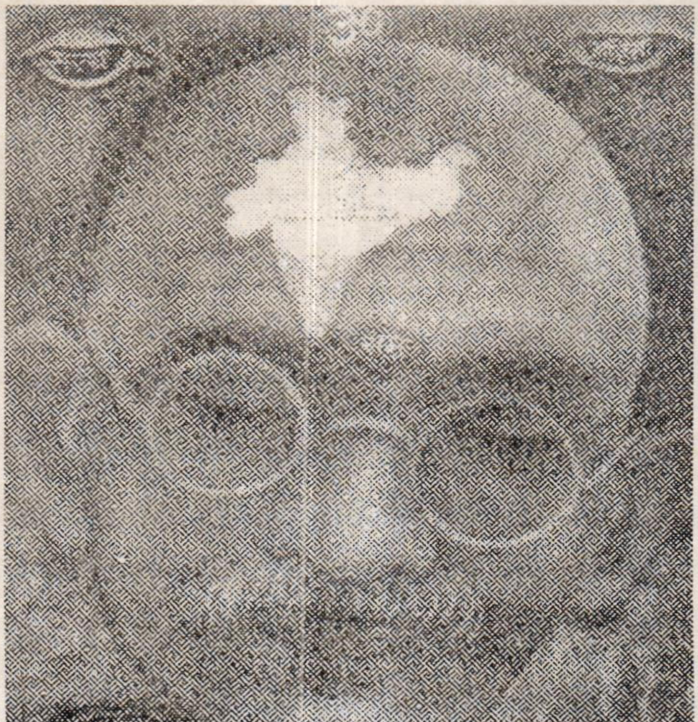

बूढ़ा मुस्कुराते हुए मेरे बाँये कंधा पर अपना दायाँ हाथ आहिस्ते से रख दिया। कहा- "मैंने अपने भारत को यहीं कहीं छोड़ा था। क्या तुमने मेरे भारत को कहीं देखा है? फिर कुछ रुककर उसने कहा- "पता नहीं, मेरा भारत कहाँ खो गया है?" और एक चिंता से उसकी ललाट पर लकीरें उभर आई।

मैंने उनसे पूछा- "ठीक याद है न, बाबा? कितने साल का होगा भारत? आपका पता है न?"

उसने कहा- "पोता! नहीं-नहीं , वह तो मेरी माँ है, तुम्हारी भी माँ है, सबकी माँ है। हमारा देश है।"

मैं मन ही मन सोचने लगा, यह बूढ़ा जरूर किसी पागलखाना से भागा हुआ कोई युग पुरुष या स्वतंत्रता सेनानी है। संभव है, बेचारा पेंशन नहीं मिलने के कारण इस हालत में आ गया हो। यह भी संभव है, मनोज कुमार की फिल्मों का जबर्दस्त फैन हो अन्यथा यह उसी टाईप का डायलॉग नहीं बोलता। यह भी संभव है, किसी खखोरन दास चट्टोपाध्याय का भूत ही हो।

अजनबी ने मुझे इस तरह घूरा जैसे वह मेरे चेहरे को भाँप लिया हो। बोला- "हाँ, भाई! यमराज ने मुझे विंटर वैकेशन में यहाँ ला पटका है। वैसे तुम घबराओ नहीं, मैं एक शाकाहारी भूत हूँ।"

बूढ़े की बात सुनकर मैं दंग रह गया। किसी तरह अपने को संभालते हुए बोला-"बाबा, आप भी बातों का अच्छा बंडल बना लेते हैं।"

मुस्कुराते हुए बूढ़े ने जबाब दिया- "अरे नहीं। मुझे तो हिंसा और झूठ- दोनों से नफरत है।" फिर उसने पूछ लिया- " वैसे अभी तुम क्या कर रहे थे?"

मैंने कहा-"दांडी यात्रा।" और वह बूढ़ा हँस पड़ा।

अचानक मेरा माथा ठनका। देखा, सामने से बहुत बड़ी भीड़ आ रही है बैनर के साथ। मालूम हुआ, गाँधी जयंती की भीड़ है। थोड़ी देर में ही जनता और मीडिया के लोगों से धिरे माननीय नेता और उनके गुट के गणमान्य लोग भी उस बूढ़ा को धक्का देते हुए बापू की समाधि की ओर चल दिये। कुछ लोगों ने जानबूझ कर धक्का दिया तो कुछ से अनजाने ही धक्का लग गया। कुछ लोगों ने बूढ़े के जीर्ण-शीर्ण स्वरूप पर भी कटाक्ष किया। बूढ़ा सब कुछ सहकर भी मुस्कुराता रहा जैसे वह गोया "कोलगेट" के प्रचार विभाग "स्टाइल" का टीका लिये हुए हो।

"वैष्णव जन तो तेने कहिये ----- रघुपति राधव राजाराम" और सर्वधर्म भजन के बाद सभी ने समाधि पर पुष्पांजलि अर्पित

शेष अंश पेज 23 पर ....

बदलता रूप रहजनी का

❑ जय प्रकाश मल्ल

कहते हैं कि विकास के साथ अपराध के तौर-तरीकों में भी व्यापक तकनीकी सुधार हुआ करता है। अगर मैं यह कहूँ कि पुलिसिया तंत्र की अकर्मण्यता के बावजूद देश से डकैती जैसे अपराध तिरोहित होते जा रहे हैं तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। क्योंकि अहले सुबह चाय की चुस्कियों के साथ पलटे जाने वाले अखबार के पन्नों में गब्बर सिंह स्टाइल की डकैती की खबर उसमें प्राय: नहीं होती।

एक प्रश्न जेहन में कौंधता रहता है कि अगर डकैती नहीं होती तो उन डाकुओं का क्या होता जिन्हें आतंक का पर्याय माना जाता था, क्या उन सबों को समाज की मुख्य धारा से जोड़ने के लिए किसी जयप्रकाश नारायण ने आत्मसमर्पण करा दिया। नहीं, अगर ऐसा होता तो यह भी एक बड़ी खबर होती। लगता है उनमें से कुछ, जिनका राजनीति से पहले से ही संबंध था, खादी के कुर्ते पायजामें, टाटा सूमों एवं राजनीतिक दलों के सहारे समाज सेवा के क्षेत्र में आए। उनकी बिरादरी के लोगों ने उन्हें सर आँखों पर बिठाया, (खुद को सुरक्षित करने के लिए) उनके लिए चुनाव में बूथ लूटे और कुछ अन्य उपायों द्वारा उन्हें देश की सर्वोच्च संस्थाओं (संसद/विधान सभा) में बैठाकर इज्जत बक्सी। लिहाजा कानून तोड़ने वाले, कानून बनाने वाले बन बैठे। इन्हीं लोगों के प्रयास से संसद/विधानसभा में बहस के स्तर में गुणात्मक परिवर्तन हुआ, तर्क की जगह माईक, कुर्सियों और टेबुल चलने लगे। वहाँ सब कुछ होता परन्तु महत्वपूर्ण मुद्दों पर बहस नहीं होती। इन्हीं की आर्थिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए (जो जाहिर है आम लोगों की जरूरतों से कई गुना ज्यादा होगी।) फिरौती, रंगदारी और चंदा का सहारा लेना पड़ा। इन तीनों में रिस्क कुछ भी नहीं। देनेवाला बड़े प्रेम से अपनी गाढ़ी कमाई का पैसा अटैची में भरता स्वयं चलकर नियत स्थान तक पहुँचा देता। उसमें न पुलिस का डर न गोलियों का खर्च। खर्च भी तो बहुत ही मामूलीं, मोबाइल का एक कॉल।

फिरौती को डकैती की अगली कड़ी ही माना जाना चाहिए। यह भी कानून के रखवालों एवं तोड़नेवालों के पारस्परिक प्रणय संबंधों की उपज है। इसमें अपराधी अपराध कर गुजरते हैं, परन्तु मामला थाने में दर्ज नहीं कराया जाता। जब यह शैशवावस्था में था, तब इसके लिए किसी व्यक्ति का अपहरण किया जाना आवश्यक था, और उसके छोड़े जाने के बदले जो रकम अपहरण कर्ताओं द्वारा अपहृत व्यक्ति के निकट संबंधियों से माँगी जाती फिरौती कहलाती। समय के साथ-साथ इसके तौर-तरीकों में संचार सुविधाओं के बढ़ने के फलस्वरूप व्यापक परिवर्तन हुआ। अब अपहरणकर्त्ताओं द्वारा यह उद्योग जेल के अंदर भी रहकर आसानी से संचालित किया जाता है। साक्ष्य के रूप में भी उनके विरूद्ध कोई मामला नहीं बनता क्योंकि उन दिनों वे सरकारी मेहमान हुआ करते हैं। इस संदर्भ में उल्लेखनीय है कि एक लोकतांत्रिक देश के गृह मंत्री (जिनपर आंतरिक सुरक्षा की जिम्मेवारी होती है।) की बेटी का अपहरण एक आतंकवादी गुट द्वारा कर लिया गया। (वैसी स्थिति में जब मंत्रियों के कुत्तों को भी कमांडों सुरक्षा प्रदान की जाती है।) और फिरौती के रूप में कोई रकम नहीं वर्‌न जेल में बंद उक्त गुट के साथियों की रिहाई की माँग रखी गई। संपूर्ण विश्व देखता रहा देश के आंतरिक सुरक्षा की कीमत पर मंत्री की बेटी रिहा करा ली गई। तब से फिरौती के रूप में कहीं रकम तो कहीं राजनैतिक माँगों का सिलसिला आरंभ हुआ। विमान व अभिनेता का अपहरण फिरौती के बदलते स्वरूप की अगली कड़ी है।

रंगदारी का रंग चित्रकार की तूलिका द्वारा चित्रों के सौंदर्य को चार चाँद लगाने वाला रंग नहीं वर्‌न वह काला रंग है जो समाज के बाहुबली अथवा आंतरिक विश्व (अन्डरवर्ल्ड) के लोगों द्वारा आम लोगों से रकम वसूलने का साधन बनता है। वसूल की जाने वाली यह राशि राज्य द्वारा लगाये जाने वाले करों से अलग है, इसीलिए इसे रंगदारी टैक्स भी कहते हैं। इसकी आवृति दैनिक, साप्ताहिक, मासिक, त्रैमासिक, अर्द्धवार्षिक या वार्षिक हो सकती है, जो करदाता के कर चुकाने की क्षमता पर निर्भर करती है। प्रदेश के एक नेता जो अनेकानेक आपराधिक अग्नि परीक्षाओं से तप कर निकला है का एक अरमान कुछ दिन पूर्व अखबारों में आया कि यदि मेरे क्षेत्र का कोई व्यक्ति यह कहे कि मेरे साथ रंगदारी वसूली गई है तो मैं सार्वजनिक जीवन से संन्यास ले लूँगा। (गोया उनके संन्यास ले लेने से देश नेतृत्व विहीन हो जायेगा) संप्रति हत्या, अपहरण, रंगदारी आदि के पचासों मामले लंबित हैं। उक्त नेता के रंग का यह आलम है कि जब वे लोकतंत्र के सर्वोच्च पर्व चुनाव के लिए खड़े होते हैं, तो उनके क्षेत्र में केवल उन्हीं का रंग दिखाई पड़ता है। उनके विरूद्ध खड़े लोगों के न तो चुनाव कार्यालय ही खुल पाते, न झंडे बैनर आदि ही दिखाई पड़ते। प्रेमचन्द ने 'वरदान' में लिखा है कि सभी धार्मिक कार्य भिक्षा के सहारे चलते हैं। धार्मिक कार्यों के साथ-साथ सामाजिक कार्यों में भी पैसे का लेन-देन भिक्षादान चंदा के रूप में होने लगा। रकम के लेन-देन का एक माध्यम रिश्वत और चन्दा में अब बहुत ही सूक्ष्म अन्तर रह गया है।

चंदा सक्षम व्यक्ति ही वसूलते हैं,

शेष अंश पेज 43 पर

सरदार पटेलः जिनके लिए राष्ट्र ही सब कुछ

❑ ई०के०के०सिंह

लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल का स्मरण आज राजनीतिज्ञों के गिरते हुए चरित्र, किसी भी तरह से कुर्सी से चिपकने के लालच एवं ऐश्वर्य में पलने की मंशा से उत्पन्न परिस्थिति में प्रत्येक भारतीय के मन में बरबस आने लगता है। विश्व के मानव समुदाय का यह एक दस्तूर है कि जब वह कठिनाई में फंसता है तो एक दिव्य एवं अदृश्य शक्तिवाद महापुरुष को याद करने लगता है। कोई राम-कृष्ण के रूप में, कोई ईसा मसीह के रूप में, कोई खुदा-अल्ला के रूप में इत्यादि। जब राष्ट्र के संगठन एवं सुरक्षा की बात उठी है तो सरदार पटेल का आदर्श सामने आता है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि सरदार मात्र एक पुरुष ही नहीं बल्कि एक महापुरुष के अवतार के रूप में अवतरित हुए थे। इस महापुरुष के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर चर्चा करके हम अपने को टटोलें।

भारत-रत्न लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल का जन्म गुजरात सूबे के खेड़ा जिले में करमसद गाँव में एक किसान परिवार में 31 अक्टूबर 1875 ई० को हुआ था। बाल्यावस्था से ही पटेल साहब अन्याय के विरूद्ध संघर्ष करने में अंग्रेतर थे। घर में पागल सांड़ (Madbull) के नाम से वे पुकारे जाने लगे थे। एक बार कक्षा में शिक्षक विलम्ब से आये तो विरोध स्वरूप वर्ग में गीत गाने लगे, शिक्षक ने डाँटना शुरू किया तो उनका जमकर विरोध किया। एक शिक्षक लेखन सामग्री स्वयं लाकर अधिक दाम पर बच्चों को लेने के लिए बाध्य करते थे। पटेल साहब ने सामुहिक रूप से इसका बहिष्कार किया। एक दिन एक शिक्षक गणित का प्रश्न गलत ढंग से हल कर रहे थे तो उनकी गलती की ओर इन्होंने इशारा किया। शिक्षक द्वारा क्रोधित स्वर में संदेश दिए जाने के उपरांत सरदार ने प्रश्न हल ही नहीं किया बल्कि उनकी कुर्सी पर जा बैठे। एक शिक्षक संस्कृत एवं गुजराती दोनों विषय पढ़ाते थे परन्तु संस्कृत से उनका अधिक लगाव था। पटेल साहब ने संस्कृत के बदले गुजराती ले ली। शिक्षक महोदय काफी नाराज हुए। इन्होंने कहा मैं आपकी भलाई के लिए ही लिया हूँ जब सभी संस्कृत ही ले लेंगे तो गुजराती आप किसको पढ़ायेंगे और एक दिन आप गुजराती भी भूल जाएंगे। गाँधी जी को एक पत्र मिला जिसमें लिखा गया था, "मेरी पत्नी कुरूपा है, अच्छी नही लगती है"। यह सुनकर सरदार तपाक से बोले कि लिख दीजिए अपनी आँख फोड़ लें और उसी के साथ रहें।

1890 ई० में मैट्रिक की परीक्षा पास की और फिर मुख्तारी। अपने अग्रज विट्ठल भाई पटेल की इच्छा को देखते हुए उन्हें अपने

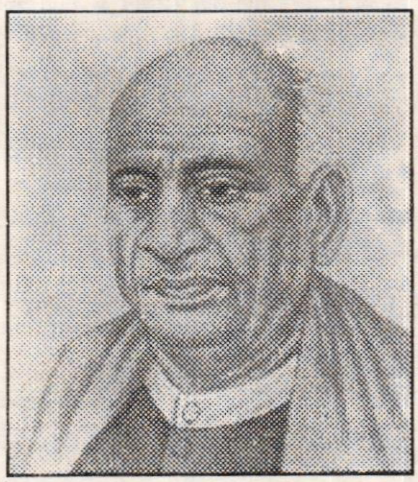

स्थान पर बैरिस्ट्री की पढ़ाई करने के लिए इग्लैण्ड पहले भेजा। 11 जनवरी 1909 को बोरसद की अदालत में एक मुकदमे में बहस कर रहे थे, उसी समय एक तार मिला जिसमें उनकी पत्नी की मृत्यु का शोक-संदेश था। इस स्थिति में भी पटेल साहब ने तार को मोड़ कर जेब में रख लिया तथा अदालत में बहस को जारी रखा। 1910 ई० में स्वयं बैरिस्ट्री पढ़ने इग्लैण्ड गए तथा 1913 ई० में प्रथम श्रेणी से पासकर अहमदाबाद लौटे और अहमदाबाद में ही वकालत शुरू की। वकालत पेशा में काफी प्रसिद्धि प्राप्त कर रहे थे। इसी बीच 1916 ई० में गाँधी जी के संपर्क में आए तथा सब कुछ त्यागकर आजीवन गाँधीजी के आज्ञाकारी सहयोगी बने रहे। 1919 ई० में चम्पारण(बिहार) का दौरा किया। यहाँ स्त्रियों को पर्दे में रखने का तीखा प्रहार करते हुए आम सभा में कहा कि "गाँधीजी आपको आर्शीवाद देते हैं और मैं आपको भला-बुरा कहने आया हूँ। ये स्त्रियाँ कौन हैं? आपकी माँ, बहन, पत्नी। इनको पर्दे में रखकर आप मानते हैं कि इनके सतीत्व की रक्षा आप कर पाएंगे। इतना अविश्वास क्यों? आपने इन्हें गुलाम पशु बनाकर रखा है इसलिए इनकी सन्तान आज पशुओं जैसी गुलाम रह गई है।" 1920-21 ई० में असहयोग आन्दोलन में भाग लिया। 1928 ई० में बारदोली आन्दोलन में पटेल साहब को इतनी सफलता मिली कि गाँधीजी ने इन्हें "सरदार" के नाम से उद्घोष किया और तभी से पूरे देश में सरदार के नाम से जाने लगे। 1928 ई० में ही प्रिंस ऑफ वेल्स के भारत आगमन का जोर विरोध किया। 1930 ई० में सविनय अवज्ञा आन्दोलन दाण्डी यात्रा की पूर्व तैयारी में सरदार जी-जान से लग गए थे। 1931 ई० में कराँची कांग्रेस अधिवेशन की अध्यक्षता का दायित्व सरदार पटेल को दिया गया। यहाँ पर यह भी उल्लेख करना यथोचित होगा कि उस समय अनेक प्रान्तों में क्रान्तिकारी युवकों और बंगाल में क्रान्तिकारी युवतियों की जेल की काली कोठरी में बन्द कर उन्हें तरह-तरह की यातनाएँ दी जा रही थीं। जनता के लाख आग्रह करने के बावजूद गाँधीजी ने भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरू की फाँसी रद्द करवाने के लिए जरा भी पहल नहीं की। इन तीनों स्वतंत्रता सेनानियों को निश्चित तिथि से एक दिन पूर्व फाँसी पर झुला दिया गया। भारतीय युवकों में गाँधीजी के प्रति काफी नाराजगी एवं रोष था। कराँची काँग्रेस अधिवेशन में पहुँचने पर गाँधीजी को काला झण्डा दिखलाया गया साथ ही साथ काले रंग के फूल उनके हाथ में दिए गए। साथ में सरदार को भी इस माहौल का सामना करना पड़ा। खुले अधिवेशन में बार-बार विरोधात्मक नारे

लगाए गए। सरदार ने देशवासियों को अध्यक्षीय भाषण के दौरान जो संक्षिप्त संदेश दिया उससे सभा-मंच की चारों ओर से तालियों की गड़गड़ाहट में खुशी का शमां बंध गया और देश में अदम्य उत्साह का सृजन हुआ। 1931 ई० में मध्य प्रदेश के प्रखर नेता एन०बी०खरे जो तत्कालीन मुख्यमंत्री थे काँग्रेस आलाकमान की अनुमति के बिना गवर्नर से मिलकर तीन मंत्रियों को हटाने का उन्होंने निर्णय कर लिया। पटेल साहब उनके खिलाफ सख्त कार्यवाही करने में आगे रहे। काँग्रेस छोड़कर हिन्दू महासभा में खरे शामिल हो गए। 1934 ई० में बम्बई में काँग्रेस से उम्मीदवार नहीं बनाए जाने के कारण नारीमन ने काँग्रेसी प्रत्याशी के विरूद्ध कार्य किया। अपने को अल्पसंख्यक कहते हुए अन्याय करने का दोष लगाया। सरदार पटेल संसदीय दल के अध्यक्ष थे। अतः उनके विरूद्ध अनुशासनिक कार्यवाही करने में जरा भी देर नहीं की।

1942 ई० में "अँग्रेज भारत छोड़ो" आंदोलन के गाँधीजी पांचजन्य उद्घोषक एवं मंत्रदाता थे तो सरकार इस कुरूक्षेत्र के मैदान में अर्जुन सदृश थे। चक्रवर्ती राजगोपालाचारी एवं अन्य कुछ विशिष्ट नेता इस आंदोलन से असहमत थे। तत्कालीन काँग्रेस अध्यक्ष आजाद ने तो जेल से ही आंदोलन स्थगित करने के लिए वायसराय को पत्र लिखा था। सैय्यद महमूद ने जेल से ही वायसराय को पत्र लिखकर अपने को आंदोलन से अलग कर लिया था। उस विषम परिस्थिति में सरदार ने कहा कि "अँग्रेजों भारत छोड़ो" प्रस्ताव में कुछ भी हटाना मान्य नहीं है। "अगर कोई दूसरा प्रस्ताव आना ही है तो वह होगा" "एशिया छोड़ो" अँग्रेज शासक हिन्दू-मुस्लिम संघर्ष को लेकर अपनी हुकूमत को बरकरार रखना आवश्यक समझते हैं तो ब्रिटेन का शासन चलाने के लिए सिर्फ एक सप्ताह का समय मुझे दे दिया जाए तो इग्लैण्ड, वेल्स एवं स्कॉटलैण्ड को आपस में संघर्ष करने के लिए तैयार कर दूँगा। इसी संदर्भ में गाँधीजी ने कहा कि "आप हमें भगवान के भरोसे नहीं छोड़ सकते हैं तो अराजकता में छोड़ दें लेकिन कृपा कर भारत छोड़िए।" 1944 ई० में असंतोष के कारण नौसेना विद्रोह हुआ तो सरदार ने इस हड़ताल का समर्थन नहीं किया। उनकी राय थी कि नौसेना में इस प्रकार की अनुशासनहीनता नहीं होनी चाहिए।

15 अगस्त 1947 ई० को अखण्ड भारत का, अँग्रेजी शासकों के कुचक्र में जिन्ना के आ जाने के कारण, दो भागों में विभाजन के फलस्वरूप भारत एवं पकिस्तान दो स्वतन्त्र देश हुए। पंडित नेहरू एवं जिन्ना की सहमति से ब्रिटिश बैरिस्टर सर सीरिल रेडेक्लिफ को सीमांकन करने का भार सौंपा गया। इनको अखण्ड भारत के बारे में कुछ भी जानकारी नहीं थी। एक नौसिखुआ के द्वारा सीमांकन करने के फलस्वरूप एक ही मकान की एक दीवार पकिस्तान में तो इसका दरवाजा भारत में। विभाजन के कारण अनुमान है कि पाँच लाख लोगों की हत्याएँ हुई तथा एक करोड़ चालीस लाख लोग शरणार्थी या मुहाजिर हो गये। अपार सम्पत्ति की क्षति हुई। भारत की भूमि पर अनकहे-अनचाहे महाभारत सा वीभत्स दृश्य रहा।

15 अगस्त 1947 ई० की संध्या तक सभी देशी रियासतों का भारत में उनकी स्वेच्छा से विलयन हो गया परन्तु हैदराबाद, जूनागढ़ और कश्मीर को छोड़कर। विभाजन के बाद देशी रियासतों की भूमि एवं जनसंख्या क्रमशः भारतीय संघ की 48 प्रतिशत थी जो पूरे भारत में फैली हुई थी। पटेल साहब के प्रयास से हैदराबाद एवं जूनागढ़ का भी विलयन हो गया। अगर पंडित नेहरू सरदार साहब के कार्य तथा योजना में रोड़ा नहीं अटकाए होते तो कश्मीर भी पूर्णरूपेण भारत का अंग उसी समय हो गया होता। रेडेक्लिफ एवार्ड के पूर्व कश्मीर में पाकिस्तान से होकर जाने का स्थल मार्ग था परन्तु पटेल जी ने अपनी चतुराई से भारत की सीमा में एक स्थल मार्ग ऐसा ले लिया जिससे हम कश्मीर में बिना पाकिस्तान गए जा सकें। कश्मीर का विलय नहीं होने के कारण आज पचपन वर्ष से भारत महायुद्ध के कगार पर खड़ा है। अगर देशी रियासतों का विलय नही हुआ होता तो कहा जा सकता है कि भारत की स्थिति मुगल शासकों के पहले जैसी हो जाती।

20 जनवरी 1948 ई० को प्रार्थना सभा में बापू जा रहे थे तो उनपर बम द्वारा हमला किया गया। हमलावर मदनलाल डोगरा पकड़ भी गया। पटेल साहब ने दिल्ली पहुँचते ही बिड़ला हाउस के हर कोने में पुलिस की तैनाती करवा दी। इसपर घनश्याम दास बिड़ला ने अपनी नाराजगी एवं गाँधी जी की नापसंदगी प्रकट करते हुए सरदार साहब से शिकायत की। उन्होंने कहा कि "आप क्यों चिन्ता करते हैं? यह आपका काम नहीं है, जिम्मेवारी इसमें मेरी है। मैं तो चाहूँगा कि यहाँ आने-वाले हर व्यक्ति की पूरी तलाशी ली जाए परन्तु बापू ने इस तरह की व्यवस्था को साफ इनकार कर दिया। 30 जनवरी 1948 की संध्या पाँच बजे के दस मिनट तक सरदार गाँधीजी के साथ थे। बापू पार्थना स्थल की ओर रवाना हुए एवं पटेल अपनी पुत्री मणिवेन के साथ अपने निवास की तरफ। प्रार्थना स्थल की ओर रवाना होते ही कुछ ही क्षण में बापू सदा के लिए हमसे अलग हो गए। 5 मार्च 1948 को पटेल साहब का स्वास्थ्य काफी खराब हो गया, वे बेहोशी की हालत में बड़बड़ाते हुए बोलने लगे कि "मुझे बापू के साथ जाना था किन्तु वे अकेले चले गए।"

सरदार साहब के बारे में विशिष्ट व्यक्तियों के विचार:-

अंग्रेज शासक सर लाकडार्ग का कहना था कि "नेहरू को पट्टी पढ़ा सकता हूँ परन्तु पटेल को नहीं।" अंग्रेज पत्रकार एवं ब्रेसन ने 1950 ई० में नोट किया है "नेहरू सरकार के प्रधान हैं लेकिन सरकार को सरदार पटेल चलाते हैं।"

जेनरल थोराट ने एक दिन भोजन के टेबुल पर पटेल साहब से कहा कि पक्ष में जिस प्रकार आपकी चलती है, आप सरलता से

भारत के प्रथम राष्ट्रपति देशरत्न डा० राजेन्द्र प्रसाद ने पटेल साहब की अंत्येष्ठि के समय कहा था, "सरदार पटेल के पार्थिक शरीर को ही अग्नि भस्म कर रही है किन्तु कोई भी अग्नि उनके यश, कीर्ति को भस्मिभूत नहीं कर सकेगी। हम अपने लिए शोकग्रस्त हैं, उनके लिए नहीं।"

> गाँधी जी ने कहा था, "सरदार वल्लभ भाई पटेल राष्ट्र-पुरुष हैं। हिन्दुस्तान में यदि किसानों का राज हो तो वल्लभ भाई उनके राजा हैं।"

प्रधान बन सकते थे। सरदार ने सरल भाव से कहा कि "पक्ष मुझे ही चाहता था लेकिन नेहरू यह आघात कभी भी सहन नहीं कर पाते। अगर नेहरू को कुछ हो जाता तो नियति मुझे भी जीने न देती। अगर हम दोनों की मृत्यु इस समय हो जाए तो नवजात स्वतन्त्र देश का ख्याल कौन करेगा?"

1935 ई० में वायसराय लार्ड हेलिफेक्स ने कहा "नेहरू, पटेल के जैसे कुशल एवं होशियार नहीं हैं। कई बार तो नेहरू बाल सहज लगते हैं।"

महान मानवतावादी एम० एन० राय ने लिखा है कि "एक दिन इस भारत सृष्टा की भी आँखे बन्द हो जायेंगी, लेकिन बाद में भारत का क्या होगा"।

जस्टिस चागला ने कहा था "जिन विकट समस्याओं के बीच सरदार ने राष्ट्र निर्माण किया उसके सामने विस्मार्क एवं कबीर जैसे राष्ट्र निर्मातागण थरथरा जाते"। 1920-30 दशक में पंडित नेहरू इलाहाबाद में, देशरत्न राजेन्द्र प्रसाद पटना में, देशबन्धु चितरंजन दास, कलकत्ता में, बैरिस्टर विट्ठल भाई पटेल बम्बई में, चक्रवर्ती राजगोपालाचारी मद्रास में एवं पटेल अहमदाबाद में नगर पालिकाओं या नगर निगमों के अध्यक्ष चुने गए थे। नेहरू ने यह स्वीकार किया कि नगर विकास कार्य में देश भर में वल्लभ भाई पटेल सर्वाधिक सफल रहे थे।

महादेव भाई देसाई ने अपनी डायरी में लिखा "पटेल न कठोर थेन विनयी, न गृहस्थ और न वितरागी। वे ठेठ किसान गुण सम्पन्न थे"।

सरदार पटेल के जीवनी-लेखक रंजन परमार ने सरदार का चित्रण इन शब्दों में किया है, "वल्लभ भाई जिस प्रकार शौर्य के प्रतीक थे उसी प्रकार चातुर्य के धनी भी थे। स्वतन्त्रता संग्राम में प्रतिदिन रत महारथी जैसे ही स्वराज के सूत्र संभालने में कुशल सारथी थे, वे जितने प्रभावी व सफल सेनापति थे उतने दक्ष शासक भी। युद्ध नीति और राजनीति तो उनकी चेरी थी और वे उनके स्वामी अधिनायक। सामान्य जनता के बीच आंदोलन का वातावरण निर्माण करने में वे जिस हद तक पारंगत थे उतने ही निपुण"। पंडित नेहरू ने एक बार कहा था कि "वल्लभ भाई मुझे यदि न मिले होते तो जो कार्य हुए हैं, वे नहीं हो पाते। इतना सारा अच्छा अनुभव मुझे उनसे ही मिला है।"

गाँधी जी ने कहा था, "सरदार वल्लभ भाई पटेल राष्ट्र-पुरुष हैं। हिन्दुस्तान में यदि किसानों का राज हो तो वल्लभ भाई उनके राजा हैं।"

काका कालेलकर ने कहा, "भारत के भावी नागरिक सरदार पटेल को नहीं भूल सकेंगे।

भावनगर के महाराजा कहा करते थे, "जब भी सरदार साहब से मिला, उन्हें ऐसा लगता था कि जैसे अपने पिता से मिले हैं।"

रेम्या रोला ने पटेल की तुलना "कर्म की चट्टान का तीर्थ यात्री" कहकर की थी।

विश्व प्रसिद्ध दार्शनिक और भारत के द्वितीय राष्ट्रपति डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने लिखा है "वे कम बोलते थे किन्तु जो कुछ भी वह बोलते थे वह गूढ़ और असंदिग्ध ढंग का होता था। उनकी वाणी राष्ट्र की आव़ाज होती थी जिसके संबंध में न तो कोई अशुद्ध कर सकता था और न भ्रान्ति हो सकती थी वह किसी की प्रकार परिस्थिति के निर्णायक, भावी रूप के विधाता तथा सुदूर भविष्य की ठीक-ठाक देख लेने की क्षमता रखते थे। जब तक भारत जीवित है उनका नाम वर्त्तमान भारत के ऐसे राष्ट्रनिर्माता के रूप में सदा स्मरण किया जाता रहेगा।"

नवाबज़ादा लियाकत अली खाँ, (पाकिस्तान का पहला आला वज़ीर) ने कहा था, "सरदार जो कहते थे वही उनका आशय होता था और उनका जो आशय होता था वही वे कहते थे।"

लोगों द्वारा शिकायत किए जाने पर महात्मा गाँधी ने कहा, "वल्लभ भाई न तो पहले कौमवादी थे और न अब हैं। मुझे उनपर पूरा भरोसा है कि वे ऐसा व्यवहार कदापि नहीं करेंगे जिससे मुसलमानों के साथ बेईसाफी हो।" सरदार पटेल द्वारा हैदराबाद समस्या का सामाधान निकाल लिए जाने पर गाँधीजी ने कहा,"सरदार ने तो बड़े सस्ते में यह सौदा निपटा लिया।"

गाँधीजी को एक बार कहना पड़ा, "वल्लभ भाई जैसा शक्तिशाली व्यक्ति हमारे साथ है, यह ईश्वरीय अनुकंपा क्या कम है।"

भारत के प्रथम राष्ट्रपति देशरत्न डा० राजेन्द्र प्रसाद ने पटेल साहब की अंत्येष्ठि के समय कहा था, "सरदार पटेल के पार्थिव शरीर को ही अग्नि भस्म कर रही है किन्तु कोई भी अग्नि उनके यश, कीर्ति को भस्मिभूत नहीं कर सकेगी। हम अपने लिए शोकग्रस्त हैं, उनके लिए नहीं।"

सरदार पटेल के कथन के कुछ अंश -

विंसटन सदैव भारत के खिलाफ बोला करते थे, आखिरकार 19 जून 1949 को एक सभा से चर्चिल को करारा उत्तर देते हुए सरदार पटेल ने कहा, "आपलोग यही सोच कर बोलना सीखें कि अब आप स्वतन्तत्र भारत से बातचीत कर रहे हैं।" फिर चर्चिल की जबान भारत के खिलाफ आगे जिन्दगी भर न खुली।

मुझपर कई बार हमला होता है कि धन्ना सेठों का साथी है, "मैंने जबसे गाँधीजी का साथ क़िया तब से यह प्रतिज्ञा ले ली कि अपनी कोई मिल्कियत नहीं रखूंगा। यह मैंने सीखा है। इससे बढ़कर समाजवाद और कोई होता हो तो मैं नहीं जानता।"

सरदार पटेल की सोच थी, "न मेरा कोई परिवार है, न जाति बल्कि राष्ट्र ही सब कुछ है।"

गाँधीजी की तरह सर्वसमर्थ होकर भी लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल अपने को शून्य में विलीन कर आजीवन राष्ट्र की सेवा में समर्पित रहे। इस महापुरुष को कोटिशः प्रणाम।

संपर्कः- श्रीकृष्ण नगर,रोड नं०-23,
एक्सटेंशन, कैमूर कुंज,
पटना-800001

........पेज 16 का शेष अंश

की और चल दिये। वापसी में भी भीड़ का धक्का बूढ़ा को लग ही गया। मैंने बूढ़ा को गिरते देखा तो उन्हें लपक कर उठाया। उनकी घड़ी और छड़ी अलग छिटक गई थी। दोनों उठाकर उन्हें दिया। कहा-" ये सभी तो गाँधी जी के नाम पर वोट बटोरते हैं बाबा। याद भी उन्हें साल में दो ही बार करते हैं और वह भी सिर्फ पाँच मिनट के लिए।"

बूढ़ा बोला - चलो, याद तो कर लेते हैं और मुस्कुराने लगा। मैंने कहा- अरे कहाँ! उससे तो ज्यादा कौए और कबूतर उनकी याद करते हैं। ये जो इतना सम्मान जगकर यहाँ से गये हैं, उन्हीं में से कोई एक कल अपने वोट बैंक बढ़ने के खातिर उनकी मूर्ति को तोड़- फोड़कर विपक्षी खेमें पर दोष मढ़ देगे। फिर उसे वे चुनावी मुद्दा बना लेंगे।"

बूढ़ा मुस्कुराया। पूछ बैठा- अरे तुम? मैंने झेपते हुए कहा- मैं भी गाँधी बाबा को याद करता हूँ पर परीक्षा तक ही और वह भी किताब कॉपी में ही।"

फिर बूढ़े से देश के बारे में हरेक बिन्दु पर काफी चर्चा हुई। वह बार-बार यही दुहराता रहा- हमें भ्रष्टाचार मिटाने के लिए एक और आजादी की लड़ाई लडनी होगी, असहयोग और सविनय अवज्ञा आंदोलन की तरह लड़ाई।

मैंने कहा- बस, आप भी हमारे मंत्रीजी की ही भाषा बोलने लगे हैं।"

मेरे ऐसा कहने पर उनके चेहरे पर एक नयी चमक आ गयी। उत्साहित होकर उन्होंने कहा- अच्छा, वे भी एक नया भारत लायेंगे! यह तो बताओ, वे किस दल के हैं- नरम दल के कि गरम दल के?

तभी मंत्री जी अपने काफिले के साथ वहाँ आ गए। हाथ जोड़कर बूढ़े से बोले- बाबा, दिन में तो मैं नरम दल का हूँ। फिर बूढ़े की गर्दन तक अपने हाथ के हँसिया को पहुँचाकर बोल उठे- और रात में गरम दल का हूँ बूढ़े। वोट मुझे दोगे तो दिन में मिलूँगा अन्यथा रात को। समझे! असहयोग या सविनय अवज्ञा आंदोलन करोगे तो भारत ही नहीं, दुनिया छोड़ दोगे। वोट मुझे करो या मरो -यही सत्याग्रह है मेरा आपसे। कहते हुए मंत्री महोदय उसी तरह हाथ जोड़े आगे बढ़ गये। नारे गूंज उठे- मंत्रीजी जिंदाबाद! भारत माता की जय! महात्मा गांधी अमर रहें! बापू के सपनों का भारत मंत्रीजी बनायेंगे।"

इतना सुनना था कि वह अजनबी बूढ़ा "हे राम!" कहकर न जाने कहाँ गुम हो गया। मैंने नजरें दौड़ायीं । वह कहीं नजर नहीं आया। तभी मेरी दृष्टि गाँधीजी की प्रतिमा पर जा टिकी। अब तक मेरे मानस-पटल पर उस अजनबी बूढ़े की पूरी तस्वीर बन चुकी थी और जो कुछ धुंधली पहचान जेहन में थी वह भी साफ हो चुकी थी।

संपर्क- द्वारा श्री अरुण कुमार सिन्हा
बजरंगपथ, बजरंगपुरी-पटना-7

सम्मान

वर्ष 2002 का बुकर पुरस्कार कनाडा के 'यांग मार्टल' को उनकी पुस्तक 'लाईफ ऑफ पाई' के लिए दिया गया है। इस पुस्तक में लेखक ने पांडिचेरी के एक चिड़िया घर में पले बच्चे की कहानी लिखी है।

-सत्य प्रकाश

गरीबी में पले, भारतीयता में ढले

लाल बहादुर शास्त्री

❑ सुधांशु कुमार

किसी व्यक्ति की महानता की परख इस बात से की जाए कि वह कहाँ से चला और कितनी ऊँचाई तक पहुँचा। इस दृष्टिकोण से लाल बहादुर शास्त्री धरती के बहुत नीचे स्तर से उठे और हिमालय के शिखर पर अपनी जीवन पताका फहरा गए। गरीबी में पले, और भारतीयता में ढले शास्त्री जी अपनी निष्ठा, कर्मठता, ईमानदारी और सीधे-सच्चे स्वभाव एवं साधारण रहन-सहन के कारण प्रधान मंत्री के पद पर आसीन होकर राष्ट्र के जन-मानस में रेखांकित हो गए।

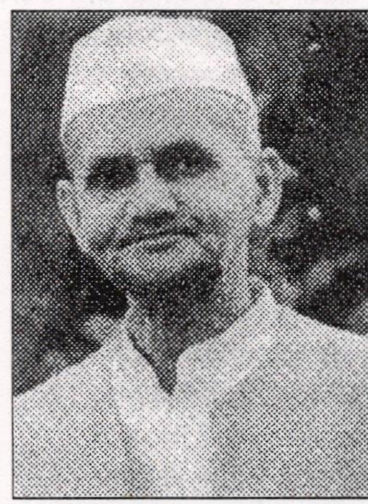

1965 के भारत-पाक युद्ध के वक्त भारत में अनाज की कमी हो गयी थी और अमरीका घटिया गेहूँ की आपूर्ति भारत को कर रहा था और बाद में उसे भी बंद करने का धमकी दे रखा था, शास्त्री जी ने राष्ट्रवासियों का आह्वान करते हुए कहा "हम एक वक्त भूखे पेट रह लेंगे पर अपनी आन पर आँच नहीं आने देंगे।" सप्ताह में एक समय अन्न न खाने की उनकी अपील को लोगों ने खुशी से स्वीकार किया। यह था शास्त्री जी के प्रति देशवासियों का प्यार और सम्मान जो विरले किसी राजनेता को मिल पाता है। जय जवान, जय किसान' का नारा देनेवाले लाल बहादुर शास्त्री की 1 सितंबर 1965 की वह बात, जब पाकिस्तान के राष्ट्रपति जनरल अयूब खान ने कश्मीर पर टैंकों से भरी हमला कर दिया था, काबिले गौर है, जिसमें शास्त्री जी ने कहा था-"जीतने के लिए जो भी जरूरी हो करो क्योंकि हारना नहीं है।" भारतवासियों को याद है कि भारत के पुराने टैंकों ने ही पाकिस्तानी टैंकों का दिवाला निकाल दिया और दो सप्ताह के युद्ध में ही पाकिस्तान का जोश ठंढा हो गया। शास्त्री जी कद में छोटे पर काम में बडे थे।

संपर्क: एस/363, शकरपुर, दिल्ली-92

प्रगतिशील विचारक स्वामी विवेकानन्द

❑ डॉ० वैद्यनाथ शर्मा

सामान्य जनजीवन में स्वामी विवेकानंद एक आध्यात्मिक संत दिव्य पुरुष के रूप में श्रद्धा और प्रतिष्ठा के सत्यपात्र बने हुए हैं। उनके व्यक्तित्व का यह विलक्षण पहलू है, लेकिन उन्होंने एक प्रगतिशील विचारक तथा आधुनिक चिंतक के रूप में भी हमें विशेष अनुप्राणित किया है। वे एक अत्यंत प्रतिभाशाली बुद्धिजीवी थे। एक जिज्ञासु छात्र के रूप में उन्होंने आधुनिक विज्ञान, विश्व इतिहास एवं दर्शन का गहरा अध्ययन किया था। समकालीन विचारधारा की बारीकी से वे पूर्व परिचित थे। उन दिनों फ्रांसीसी क्रांति के नेता रौवेल पियरे के वे उपासक बन गये थे तथा कोलम्बिया के स्वतंत्रता आंदोलन का उन्होंने खुलकर समर्थन किया था।

इसी पृष्ठभूमि में उनका चिंतन एवं विचार लोगों के सामने आया। उन्होंने अपने परिष्कृत मानवतावादी प्रगतिशील दृष्टिकोण का परिचय देते हुए स्पष्ट शब्दों में कहा- "समूचा संसार जब तक एक साथ कदम नहीं बढ़ाता तब तक प्रगति संभव नहीं है। जैसे-जैसे दिन बीतते हैं, यह स्पष्ट होता जा रहा है कि संकोर्ण नस्ली अथवा राष्ट्रीयकोण से किसी भी समस्या का समाधान संभव नहीं है।" राम कृष्ण के महाप्रयाण के उपरान्त उन्होंने पाँच वर्षों तक एक भिक्षुक के रूप में समूचे देश का परिभ्रमण किया। अपने भ्रमण के दौरान उन्हें यहाँ के जनजीवन का बड़ा ही कटु अनुभव प्राप्त हुआ। इस अनुभव ने उन्हें काफी उद्वेलित किया। इसके उपरान्त उन्होंने अपने एक पत्र में लिखा- "गरीबों के लिए काम की व्यवस्था करने के लिए भौतिक सभ्यता की यहाँ तक विलास बाहुल्य की आवश्यकता है। रोटी, रोटी। मैं यह स्वीकार नहीं कर सकता कि जो ईश्वर मुझे यहाँ रोटी नहीं दे सकता, वह स्वर्ग में मुझे अनंत सुख देगा। उफ् भारत को ऊपर उठाया जाना है! गरीबों की भूख मिटायी जाती है! शिक्षा का प्रसार किया जाना है। पंडे पुरोहित नहीं चाहिए; हमें सामाजिक आतंक नहीं चाहिए। हरेक के लिए रोटी, हरेक के लिए काम की अधिक सुविधाएँ चाहिये।"

स्वामी विवेकानंद सामान्य जन का आध्यात्मिक उत्थान चाहते हैं लेकिन इसके लिए वे राजनीतिक और आर्थिक पुनर्निर्माण के घोर हिमायती थे। इस संबंध में उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा था कि भूख से पीड़ित इंसान के गले में धर्म उड़ेलना उनके साथ मजाक करना है, उनका घोर अपमान करना है। इसीलिए तो उन्होंने मिशनरियों से पूछा था कि "आप

अविश्वासियों की आत्माओं की रक्षा की आवाज तो उठाते हैं लेकिन आप उनके शरीरों की भूखमरी से रक्षा क्यों नहीं करते।" एक सच्चे प्रगतिशील विचारक के रूप में उन्होंने सामाजिक जीवन के क्षेत्र में जन्मे अंध विश्वासों पर कटु आघात किया। अस्पृश्यता की भावना को उन्होंने कलंक के रूप में ग्रहण किया। जाति की श्रेष्ठता को उन्होंने दंभ के रूप में स्वीकार किया। पंडे-पुरोहितों की पोथियों में लिपटी भूठी धार्मिक भावना को उन्होंने आतंक के रूप में स्वीकार किया। उन्होंने इस संबंध में स्पष्ट रूप से घोषणा की-"मैं आप लोगों को अंध विश्वासी मूर्खों के बजाय पक्के अनीश्वरवादियों के रूप में देखना पसंद करूँगा। अनीश्वरवादी जीव तो होता है। वह किसी काम का तो आ सकता है। किन्तु जब अंधविश्वास जकड़ लेता है तब तो मस्तिष्क ही मृतप्राय हो जाता है, बुद्धि जम जाती है और मनुष्य पतन के दलदल में अधिकाधिक और गहरे डूब जाता है। यह कहीं ज्यादा अच्छा है कि तर्क और युक्ति का अनुक्षरण करते हुए लोग अनीश्वरवादी बन जायं बजाय इससे कि किसी के कह देने मात्र से अंधों की तरह 20 करोड़ देवी-देवताओं को पूजने लगें।"

स्वामी विवेकानंद ने अपने इन्हीं विचारों से देश क्या विश्व के जीवन में जागरण का शंखनाद किया। वे इंसान में आत्म विश्वास, साहस, दृढ़ता तथा कठोर कर्मठता का भाव भरना चाहते थे। उसके लिए उन्होंने लोगों से साहसी एवं दृढ़व्रती बनने का आह्वान किया। उनकी दृष्टि में इंसान के जीवन की श्रेष्ठता इसी में है कि वह कायरता को छोड़ें एवं साहस का परिचय दें। वे किसी भी प्रकार के सामाजिक अंधविश्वासग्रस्त बंधन को झूठा बंधन मानते थे। आत्मा के परिष्कार तथा उन्नति के लिए वे स्वतंत्रता को पहली शर्त्त के रूप में स्वीकार करते थे। उनकी दृष्टि में स्वतंत्रता कोई राजनीतिक अधिकार नहीं थी, अपितु वह तो चौकोर उन्नति का एक अवसर थी इस संदर्भ में उन्होंने स्वतंत्रता की परिभाषा देते हुए कहा-"हम अपने शरीर, अपनी बुद्धि और अपनी सम्पत्ति को बिना दूसरों को प्रांगण में प्रकाश उड़ेलना और सुंदर भविष्य के निर्माण के निर्माण में तत्पर होना है। हारवर्ड विश्वविद्यालय में भाषण देते हुए उन्होंने इस संबंध में कहा था-"अमूर्त्त अद्वेत को हमारे दिन प्रतिदिन के जीवन में सजीव एवं काव्यात्मक शक्ति बन जाना चाहिये, नितांत उलझी हुई पौराणिक कथाओं में से ठोस नैतिक स्वरूप उभरने चाहिए, मस्तिष्क को चकरा देनेवाले सिद्धांत से अत्यधिक वैज्ञानिक एवं व्यावहारिक मनोवृत्ति उभरनी चाहिए।"

विवेकानंद इस रूप में सचमुच एक प्रगतिशील संत थे। उनके चिंतन, विचार एवं साधना का एक मात्र क्षेत्र कठोर संघर्षशील जीवन था। वे स्वर्ग एवं नरक संबंधी मान्यताओं को व्यर्थ का बकवास मानते थे। वे तो इस कठोर धरती को ही जीवन के जीवन्त सत्य के रूप में स्वीकार करते थे। 'प्रैक्टिकल वेदान्त' पुस्तक में उन्होंने लिखा है- "कहीं एक स्वर्ग या नरक है इसकी चिंता किसे है? आत्मा है या नहीं है, इसकी किसे परवाह है? कोई अपरिवर्तनशील सत्ता है इसके बारे में किसे व्यग्रता है? हमारे सामने तो यह संसार है और दुःख-पीड़ाओं से भरा पड़ा है। इस संसार में उतरे जैसे बुद्ध उतरे थे और इन दुःख-पीडाओं को कम करते मर जाओ। अपने को भूलो यही पहला सबक सीखना है। तुम आस्तिक हो या नास्तिक अनीश्वरवादी हो या वेदान्ती, ईसाई हो या मुसलमान-एक सबक जो सबके सामने स्पष्ट होना चाहिए, वह यह है कि अपने नन्हें अह्म को नष्ट करो और सच्ची आत्मा का निर्माण करो"

अत: निष्कर्ष रूप में यह स्पष्ट है कि स्वामी विवेकानंद एक प्रगतिशील विचारक थे। अध्यात्मवाद के रंग में अपनी आत्मा एवं विचारधारा को पूर्ण रूप से डुबोने के बाद भी उन्होंने खुले मस्तिष्क से धर्म एवं संपादय के स्वस्थ रूप पर प्रकाश डालाया। उन्होंने एक प्रगतिशील विचारक के रूप में आधुनिक वैज्ञानिक युग की बहुविधि मान्यताओं को ग्राहृयता की कसौटी पर कस के उसे बिना हिचक के स्वीकार किया था। वे एक संत पुरुष थे, कठोर साधक थे लेकिन उनकी साधना एवं चिंतनधारा अंधविश्वास एवं परंपरागत जड़ मान्यता के कूल किनारों को लाँघती उन्नत एवं स्वस्थ जीवन के व्यापक प्रांगण में विचरण करती रही। धर्म में गहरी आस्था रखकर भी वे तर्क और युक्ति के समर्थक थे। यही कारण था कि वे अंधविश्वास, दैवी संदेश की अनुभूति और दैव-प्रेरित ज्ञान के घोर विरोधी थे। उनके लिए धर्म अमूर्त और अनुर्वर नहीं था। वे धर्म को दिन प्रति दिन के व्यावहारिक जीवन के लिए परम उपयोगी तत्व के रूप में स्वीकार कर यह कहते थे कि धर्म को सार्वजनिक जीवन में सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक दशा के सुधार की दिशा में मुख्य तत्व के रूप में ग्राहृय मानते चलो। व्यक्ति की सच्ची स्वतंत्रता और सम्पन्नता को वे समुदाय की स्वतंत्रता और सम्पन्नता में निहित मानते थे। उनके विचार और उनकी साधना के केन्द्र बिन्दु में वही सामुदायिक और सामाजिक संपन्नता और खुशियाली थी जिसकी प्राप्ति के साधन के रूप में उनका परिष्कृत-प्रगतिशील जीवन-दर्शन ही श्रेय और प्रेय था। कोई क्षति पहुँचाये, जिस तरह चाहे अपनी इच्छानुसार उपयोग कर सके और समाज के सभी सदस्यों को सम्पत्ति शिक्षा ज्ञान प्राप्त करने के समान अवसर प्राप्त हो।"

विवेकानन्द एक धार्मिक एवं संत पुरुष थे। लेकिन धर्मान्धता, अंधविश्वास के बंधन से वे बिलकुल मुक्त थे। धर्म उनके लिए अनुर्वर एवं उन्मत्त नहीं था। उन्होंने धर्म को व्यावहारिक जीवन की पूर्णता एवं शुद्रता का आधार माना था। जनता की सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक दशा को उन्नत करनेवाले, तत्वों को वे धर्म की सीमा में स्वीकार करते थे। हालाँकि वे एक अपरिमित सत्ता- 'ब्रह्म' में पूरा विश्वास करते थे किन्तु ईश्वर को वे कोई अलौकिक या अतिमानवीय सत्ता के रूप में स्वीकार नहीं करते थे। वे ईश्वर को विश्व की परम, प्रत्यक्ष सत्ता, आदर्श एवं शक्ति का केन्द्र-बिन्दु मानते थे। इस केन्द्र-बिन्दु का सीधा लगाव उनकी दृष्टि में मानव कल्याण से था। अत: विवेकानंद के धार्मिक दृष्टिकोण का केन्द्र बिन्दु मनुष्य ही था। उन्होंने लोगों से कहा कि मनुष्य में ही ईश्वर को खोजो क्योंकि इस संसार या ब्रह्माण्ड से परे कोई ईश्वर नहीं है। यह ब्रह्माण्ड ही ब्रह्म है जो शाश्वत एवं स्वप्रकाशित है। वे इस बात में विश्वास नहीं करते थे कि सृष्टि ईश्वर-रचित है। उन्होंने काफी बल देकर कहा-"यह ब्रह्माण्ड न तो किसी ब्रह्माण्डेतर ईश्वर का बनाया हुआ है और न किसी अलौकिक प्रतिभा का सृजन है। यह अपनी सृष्टि स्वयं करता है, स्वयं विघटित होता है और स्वयं अभिव्यक्त होता है।"

धार्मिक विचारों के क्षेत्र में स्वामी विवेकानंद की प्रगतिशीलता एवं अंधविश्वास मुक्तता बहु.. ही स्पष्ट थी। वे आत्मा-परमात्मा, जीव, जगत, माया, बंधन इत्यादि बातों के संदर्भ में बहुत ही खुले दिल से विचार करने वाले संत थे। वे स्वयं को वेदान्ती कहते थे। वे उपनिषद् के इस सिद्धांत को मैं वह हूँ और तू वह है अपने जीवन का प्रेरणा-स्त्रोत मानते थे। अद्वैत वेदान्त की ओर वे विशेष आकृष्ट थे तथा इस सिद्धांत को वे सर्वाधिक वैज्ञानिक मानते थे, लेकिन शंकराचार्य के अद्वैत से उनका अद्वैत भिन्न था। जहाँ शंकराचार्य के लिए अद्वैत शाश्वत अमूर्त्त तथा अपरिवर्तनशील था, वहाँ विवेकानंद के लिए यह सिद्धांत निरन्तर गतिशील और सक्रिय था। एक आलोचक के शब्दों में- "शंकराचार्य का वेदांत तात्विक चिंतन की संकीर्ण सीमा में सिमटा हुआ था जबकि विवेकानंद समस्त संसार को दृष्टि-परिधि में लेते थे।" यही कारण था कि विवेकानन्द के विचारों में सिद्धांत के तल पर संकीर्णता नहीं थी। वे सभी को समान रूप से स्वीकार करने के लिए तैयार रहते थे। ईश्वरवादी हो या अनीश्वरवादी, सर्वेश्वरवादी हो या एकतादेवादी, बहुदेववादी हो या नास्तिक सभी उन के लिए प्यारे थे। उनमें व्यापक धर्म में दीक्षित होने के लिए एक ही शर्त्त थी और वह थी उदात्त रूप से इस चरित्र का गठन जो व्यापक और उदार विचारधारा से सम्पन्न हो। उनको इस बात की तनिक भी चिंता नहीं थी कि संसार में बहुत से मत जन्म ले रहे हैं और पनप रहे हैं। वे इसे स्वाभाविक मानते थे। वे तनिक भी दूसरी विचारधारा के प्रति असहिष्णु नहीं थे। इनको दूसरे मत या सिद्धांत से तनिक भी भय नहीं था। वे इस बात में यकीन करते थे कि "पंथों की संख्या बढ़ती है तो बढ़ने दो। जब कोई वेगपूर्ण और तीव्रधारा प्रवाहित होती है तब ही छोटे-छोटे भंवर और नाले बनते हैं। विचारों के संघर्ष से ही चिन्तन में तीव्रता आती है।"

संपर्क : पूर्व हिंदी विभागाध्यक्ष,
मगध विश्वविद्यालय,
श्रीकृष्णनगर, पटना

स्त्री, तुम मिटने के लिए नहीं हो

जयप्रकाश कर्दम

बचपन में पिता, फिर भाई, शादी हो जाने पर पति और बाद में पुत्र, जिन्दगी के हर पड़ाव पर स्त्री किसी न किसी पुरुष के नियंत्रण में या उसके अधीन रहती है। इतने सारे निषेध और वर्जनाएं उस पर लाद दी जाती हैं कि वह यह बात लगभग भूल सी जाती है कि वह भी एक व्यक्ति है, अपने जीवन पर उसका अधिकार है। अपने जीवन को अपने अनुसार अपनी इच्छा से न जीकर दूसरे की इच्छा और आदेश के अनुसार जीने से ज्यादा बड़ी त्रासदी और क्या हो सकती है। लेकिन स्त्री इस त्रासदी को भोगने के लिए अभिशप्त है। बचपन से उसे यह सिखाया गया है 'तू लड़की है'। यह कहने के पीछे आशय उसे यह अहसास कराने का होता है कि तू स्वतंत्र नहीं है, तुझे कोई इच्छा या आकांक्षा अपने मन में नहीं पालनी चाहिए। अर्थात् उसे न इच्छाएं पालने का अधिकार है न स्वप्न देखने का। उसे हर काम वह करना है, जो उसका पुरुष चाहता है। उसे कैसे उठना-बैठना है, कैसे खाना-पीना है, कैसे चलना है, कहाँ जाना है, कहाँ वस्त्र पहनने हैं कैसे पहनने हैं, क्या पढ़ना है, क्या नहीं पढ़ना है, उसे अपने आपको किस तरह रखना चाहिए, किस तरह नहीं रखना चाहिए, किससे बात करनी चाहिए, उसे हर काम अपनी नहीं, शासक पुरुष की इच्छा और आकांक्षा के अनुरूप करना है।

लड़की के साथ परिवार की मर्यादा जुड़ी है। उसके ऐसा-वैसा करने से परिवार की मर्यादा भंग हो जाती है। लड़के के साथ ऐसा नहीं होता है। लड़का ऐसा-वैसा कुछ भी करे परिवार की मर्यादा अप्रभावित रहती है। शांति यादव की एक कविता है 'बाप की टोपी' जिसमें वह कहती है कि हर निषेध केवल लड़की के लिए है, लड़कों पर मर्यादा का कोई बंधन नहीं है। उसके अनुसार 'बेटी जहाँ भी जाती है बाप की टोपी उसके साथ जाती है। कहीं कोई पत्ता हिला नहीं कि बाप की टोपी पहले मैली हो जाती है। इसलिए हर लड़की को हमेशा यह सिखाया-समझाया जाता है 'अपने बाप की टोपी का ख्याल रखना।' बाप की टोपी परिवार की इज्जत, कुल-खानदान की मर्यादा सब कुछ बेटी पर टिकी है। परिवार की इज्जत और मर्यादा को बेटी के चरित्र से जोड़कर देखने वाला यह वही समाज है जो धर्म के नाम पर कुंवारी लड़कियों को देवदासी घोषित कर आजीवन संड-मुसंड पण्डे-पुजारियों द्वारा बलात्कृत होने के लिए छोड़ देता है। स्त्री-अस्मिता को आजीवन बलात रौंदने-कुचलने का ऐसा घृणित उदाहरण दुनिया में कहीं नहीं मिलेगा। कोई युवती स्वेच्छा से किसी मनपसंद युवक से प्रेम करे, उससे शादी करे उसकी इजाजत यह समाज नहीं देता, लेकिन उसे देवदासी बनाकर वासना के भूखे ब्राह्मण के हवाले कर मंदिर की चारदीवारी के अन्दर बंद करने पर गौरवान्वित होता है। ऐसी-तैसी ऐसे धर्म और समाज की जो किसी की इच्छा, भावना और स्वतंत्रता को कुचलकर उसे यातना, दर्द और बर्बरता की भट्टी में झोंकता है। लानत आनी चाहिए ऐसे समाज पर जहाँ कब्र में पैर लटकाए बूढ़े लोग नवयौवनाओं को वासना भरी दृष्टि से घूरते हैं और केशवदास के अंदाज में 'चन्द्रबदन मृग लोचनी बाबा कहि कहि जाई' कहकर अपना कलेजा पकड़ते हैं, जहाँ रामनाम की माला जपने वाले साधु-सन्यासी किसी सुन्दर स्त्री को देखकर मनकों की गिनती गिनना छोड़ अपना ध्यान उस स्त्री के उरोज और नितम्बों पर केन्द्रित कर देते हैं, जहाँ प्रेम को तो अपराध माना जाता है लेकिन बलात्कार पर मुँह बंद रहते हैं। शर्म आनी चाहिए ऐसे समाज का हिस्सा होने पर जहां स्त्री घर में न घर के बाहर, न अपनों के बीच न परायों के बीच कहीं पर सुरक्षित नहीं है। वह चारों ओर से भेड़ियों से घिरी है जो उसे कच्चा चबा जाने के लिए जीभ लपलपाए तैयार बैठे हैं। एक सर्वेक्षण के अनुसार देश में हर 54 मिनट में एक स्त्री के साथ बलात्कार होता है। यह आंकड़ा उन घटनाओं का है जिनकी रिपोर्ट पुलिस थानों में दर्ज हो पाती है। जिन घटनाओं की रिपोर्ट तक दर्ज नहीं हो पाती वे इनसे कहीं बहुत ज्यादा संख्या है। यदि ठीक तरीके से और एक-एक घटना की जानकारी एकत्र की जाए तो शायद हर मिनट में बलात्कार की एक घटना जरूर मिल जाएगी। भेड़ियों के समाज में स्त्रियों की असुरक्षा को लेकर 'लंदन रेप क्राइसिस सेंटर' की महिलाओं द्वारा तैयार कविता का उल्लेख यहां बहुत जरूरी है जिसका हिन्दी रूपान्तर चित्रा पंचकर्ण ने 29-8-2002 के जनसत्ता में 'स्त्री के विरूद्ध' शीर्षक से चौपाल स्तम्भ के अंतर्गत प्रस्तुत किया है। कविता इस प्रकार है- 'रात के समय घर से अकेले मत निकलो/ इससे मर्दों को प्रोत्साहन मिलता है/किसी भी समय अकेले मत निकलो/कैसी भी परिस्थिति मर्दों को प्रोत्साहित करती है/घर में मत रहो/ घुसपैठिए

यह स्त्री की सबसे बड़ी विडम्बना है कि जीवन भर पुरुष से शोषित, प्रताड़ित और लांछित होने के बावजूद वह पुत्र को जन्म देकर आनंदित और गर्वित होती है।

और सगे-संबंधी बलात्कार कर सकते हैं/बिना वस्त्र के मत जाओ/ इससे मर्दों को प्रोत्साहन मिलता है/ वस्त्रों समेत मत जाओ/ किसी भी तरह के वस्त्र मर्दों को उत्तेजित करते हैं/ बचपन को टाल दो/ कुछ बलात्कारी बालिकाओं से बलात्कार करते हैं/ बुढ़ापे को टाल दो/ कुछ बलात्कारी वृद्धाओं को पसंद करते हैं/ पिता, दादा, नाना, चाचा, ताऊ या भाई से रिश्ता तोड़ दो/ ये वो रिश्तेदार हैं जो कभी-कभी नवयौवनाओं से बलात्कार करते हैं/पड़ोसी मत बनाओ/शादी मत करो/ क्योंकि बलात्कार शादी में कानूनी है/ निश्चिंत होने के लिए/ स्वयं को मिटा दो।'

स्त्री के प्रति पुरुष समाज का व्यवहार कितना हिंसक, बर्बर और यातनापूर्ण रहा है इस कविता से आगे शायद कुछ कहने की जरूरत नहीं है। पुरुष समाज के बीच हर स्त्री सहमी, सिमटी और घबरायी हुई-सी है। उसके साथ कब, क्या हो जाए इससे हमेशा आशंकित और आतंकित रहती है। सिमोन द बाऊवर ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'सेकेण्ड सेक्स' में लिखा है कि स्त्री बचपन से ही पिता और भाई के नियंत्रण में तथा उन पर आश्रित और उनसे शासित होती है। धीरे-धीरे वह इसकी इतनी अभ्यस्त हो जाती है कि शादी हो जाने पर वह पति पर निर्भर हो जाती है और उससे शासित होना चाहती है। एक सर्वेक्षण ने यह बात बतायी है कि स्त्रियां पति के रूप में ऐसे पुरुष को पसंद करती हैं जो उनके प्रति वफादार, उनको प्यार करने वाला हो, किन्तु साथ ही वह दबंग भी हो। उन पर अपना अधिकार भी जताए, अर्थात् उन पर शासन करे। दब्बू पुरुष स्त्रियों को पसंद नहीं है। सिमोन गलत है या यह सर्वेक्षण गलत है हम यह नहीं कह सकते। दोनों अपनी जगह ठीक है; लेकिन स्त्री मनोविज्ञान का यह एक पक्ष है। स्त्री मानसिकता का दूसरा पक्ष भी है और वह यह कि पुरुष समाज ने स्त्री के साथ जितने जुल्म और ज्यादती की है, जितनी यातनाएं उसको दी है उससे स्त्री का मन पुरुष समाज के प्रति घृणा से भरा है। पुरुष समाज के प्रति कोई सम्मान उसके मन में नहीं है। स्त्री की यह एक विशेषता है कि वह प्रजनन करती है। प्रजनन न हो तो संसार नहीं चलेगा। स्त्री तो शादी न करे, किसी पुरुष के साथ शारीरिक संबंध न बनाए। वह प्रजनन को रोक सकती है, यह उसके अधिकार में है। लेकिन प्रजनन करते समय वह अपनी कोख से पुरुष पैदा करे या स्त्री, इस पर उसका वश नहीं है। यदि इस पर भी उसका वश हो जाए तो पुरुष समाज से उसने आज तक जितना और जो कुछ सहा है उसे देखते हुए वह अपनी कोख से शायद पुरुष को कभी जन्म नहीं देना चाहिए। लेकिन यह स्त्री की सबसे बड़ी विडम्बना है कि जीवन भर पुरुष से शोषित, प्रताड़ित और लांछित होने के बावजूद वह पुत्र को जन्म देकर आनंदित और गर्वित होती है। ग्रामीण या अशिक्षित समाज की तो बात छोड़िए शहरों और महानगरों के उच्च शिक्षित परिवारों तक में भी कहने के लिए भले ही सब कहें कि वे लड़की और लड़के में भेद नहीं मानते लेकिन पुत्र होने पर उनके अन्दर जिस सुख-संतोष और पूर्णता का भाव पैदा होता है, पुत्री के पैदा होने पर नहीं होता है। यह अलग बात है कि शिक्षित-सम्पन्न लोग खान-पान, वस्त्र और शिक्षा आदि के मामले में लड़कियों की उपेक्षा अब नहीं करते हैं।

'लंदन रेप क्राइमिस सेन्टर' की महिलाओं की ऊपर उल्लिखित कविता बलात्कार से मुक्ति पाने के लिए स्त्रियों को स्वयं को मिटा देने की सीख देती है। यह पलांयन है। पलायन कायरता का दूसरा नाम है। कब तक वे स्वयं को मिटाती रहेंगी? जरूरत इस बात की है कि स्त्री अपनी शक्ति को पहचाने, अपनी शक्ति और अधिकारों का प्रयोग करे। वह हिम्मत जुटाए और सहना बंद करे। जब तक लज्जा, मर्यादा के नाम पर कुर्बान होकर स्वयं को घोटने की प्रवृत्ति का परित्याग वह नहीं करेगी तथा 'अपनी मुक्ति का मार्ग उसे स्वयं खोजना है' यह विश्वास अपने अंदर पैदा कर वह हाथ-पैर नहीं मारेगी तब तक उसकी स्थिति में बदलाव की कोई संभावनाएं नहीं है। उसे अपनी वर्जनाओं की जंजीरों को स्वयं तोड़ना पड़ेगा। इस संबंध में युवा कवि मुकेश मानस की एक कविता 'एक लड़की' की ये पंक्तियां बहुत महत्वपूर्ण हे- 'ऐ लड़की, ओ लड़की, सुन लड़की तू ये भी बोल/ तू वो भी बोल/तू यूं मत सह/ तू चुप मत रह।' सचमुच यह चुपचाप सब कुछ सहने का समय नहीं है। स्त्री को यदि अपनी अस्मिता प्यारी है, वह मुक्त होना चाहती है तथा सम्मान की जिन्दगी जीना चाहती है तो उसे सहना तत्काल बंद करना होगा तथा पुरुष पर निर्भरता और उससे शासित होना छोड़ स्वाभिमान से खड़ा होना होगा। अन्यथा पुरुष सदैव उसे दबाकर रखेगा, मनमर्जी उस पर चलाता रहेगा।

संपर्क-बी-634, डी० डी० ए० फ्लैट्स
ईस्ट ऑफ लोनी रोड,
दिल्ली- 110093

पाठकों से अनुरोध

- यह सुधी पाठकों के सक्रिय सहयोग का ही प्रतिकल है कि विचार दृष्टि नियमित रूप से प्रकाशित हो पा रही है। हम आपके प्रति आभार व्यक्त करते हैं।
- जिन पाठकों की सदस्यता समाप्त हो चुकी है या दिसम्बर 2002 में समाप्त होने को है, वे कृपया अपनी सदस्यता का नवीनीकरण करवा लें।
- अपने दोस्तों, संबंधियों तथा शुभेच्छुओं को भी इसकी सदस्यता ग्रहण करने के लिए प्रेरित कर पत्रिका द्वारा चलाए जा रहे जन-चेतना अभियान का आप भी एक हिस्सा बनें।

सदस्यता शुल्क

देश में - द्विवार्षिक : 100 रुपये
आजीवन : 1000 रुपये
संरक्षक : 5000 रुपये
विदेश में -द्विवार्षिक :

विश्व स्तर पर भारतीय किसान की शान

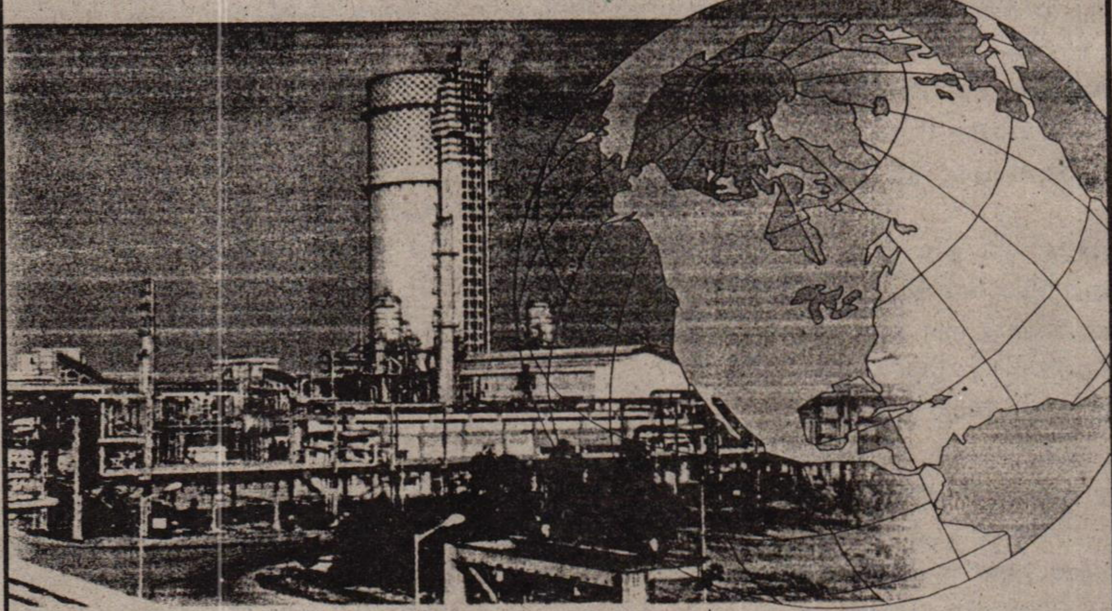

इफको नाइट्रोजीनस एवं पोटाशिक उर्वरकों के उत्पादन एवं विपणन के क्षेत्र में विश्व की अग्रणीय संस्था के रूप में उभरकर सामने आई है। गत तीन दशकों से भी अधिक समय से इफको किसानों की सेवा कर रही है। इस हेतु इफको किसानों को उत्तम किस्म के उर्वरक उपलब्ध करवा रही है एवं उन्हें उर्वरकों के संतुलित प्रयोग की जानकारी प्रदान कर रही है ताकि वे अपनी फसल उत्पादकता बढ़ा सकें।

अपनी सफलता के उच्च सोपानों पर पहुंचने के लिए इफको ने किसानों की सहकारी समितियों के विकास एवं उनके हर स्तर पर सुदृढ़ीकरण के लिए **"मिशन 2005"** तैयार किया है। इफको ने ग्रामीण समुदाय की सेवा करने के उद्देश्य से सामान्य बीमा के क्षेत्र में प्रवेश किया है और जापान की टोकियो मेरीन एण्ड जनरल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड के सहयोग से इफको–टोकियो जनरल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड का प्रवर्तन किया है।

इफको अपना कार्य व्यापार विदेश में भी फैला रही है। इसी प्रयोजन से इफको विदेश में एक संयुक्त उद्यम स्थापित करने के लिए कार्य कर रही है।

इफको

इंडियन फारमर्स फर्टिलाइजर कोआपरेटिव लिमिटेड

34, नेहरू प्लेस, नई दिल्ली–110 019

कृपया हमारी वेबसाइट **http://www.iffco.nic.in** देखें

विकास का योग - उर्वरक प्रयोग

Goldmine/del

ठिठकी-सहमी हमारी आधी आबादी

परमानंद दोषी

भारतीय महिलाओं पर उत्पीड़न और उनकी दशा-दिशा की दूर्दमनीय स्थिति से हम भली-भाँति परिचित हैं। उनकी प्रगति के दावे नितान्त खोखले हैं। प्रगति पथ पर वे इंच भर भी आगे नहीं बढ़ सकी हैं। निरन्तर पिछड़ती जा रही हैं वे। जीवनी-साहित्य के सुप्रसिद्ध हस्ताक्षर एवं महिला विषयक प्रसंगों पर निरन्तर कुछ न कुछ सार्थक और सटीक लिखते रहने वाले लेखक श्री परमानन्द दोषी की प्रस्तुत रचना में इन्हीं विचारों का विवेचन है।

-संपादक

महिलायें हमारी आधी आबादी हैं। इतनी बड़ी शक्ति की उपेक्षा कर कोई समाज व राष्ट्र सम्यक् प्रगति नहीं कर सकता। यों तो विश्व भर में महिलाओं की स्थिति संतोषजनक नहीं है, भारत में तो वे कैसी विषम स्थिति में रहकर जीवन-यापन कर रहीं हैं- यह किसी से छिपी बात नहीं है।

लैंगिक विषमता के दारूण दंश झेलती हमारी नारियों को अपने यहाँ दोयम दर्जे की नागरिकता प्राप्त है। पितृसत्तात्मक समाज में पुरुषों का जो वर्चस्व कायम है, उसके चलते स्त्रियों का अपना स्वतंत्र अस्तित्व सदैव खातरे में पड़ा रहता है। जघान्य हिंसा-प्रतिहिंसा का जैसा दारुण दुख हमारी महिलाओं को झेलना पड़ता है, उसके स्मरण मात्र से हमारे रोंगटे खड़े हो जाते हैं। अपने घर में भी हमारी महिलायें सुरक्षित नहीं हैं। शयन-कक्षों को तो छोड़िये, अपनी माँ की कोख की अजन्मी कन्याओं की आये दिन भ्रूण हत्यायें हो रही हैं। स्वावलम्बी होने के सपने संजोती स्त्रियाँ जीवन भर पराश्रित रहने पर मजबूर रहती हैं। आत्मनिर्भरता वाली उनकी राहों में जान-बूझ कर रोड़े अटकाये जाते हैं।

कहने को तो उनकी रक्षा-सुरक्षा के लिए बहुत सारे कानून बने हुए हैं मगर वे कागजी कानून अमली जामा पहनने को तरसते रहे हैं। इक्की-दुक्की महिलायें सेवा और समृद्धि के क्षेत्र में प्रवेश कर अपना स्थान बना भी लेती हैं तो उससे समग्र नारी समाज के विकसित होने की बात की पुष्टि नहीं होती।

सन् 2001 का सारा वर्ष महिला-उत्थान को केन्द्रित और समर्पित साल के रूप में मनाया गया। 3 मार्च को विश्व भर में महिला दिवस के रूप में मनाये जाने का प्रावधान है। इसके अतिरिक्त बालिका वर्ष, किशोरी वर्ष जैसे आयोजन भी किए जाते रहे मगर परिणाम वही ढाक के तीन पात वाला रहे।

इसी वर्ष पिछली 26 जनवरी को राष्ट्र के संबोधन के अवसर पर हमारे राष्ट्रपति महोदय ने महिला उत्पीड़न की घटनाओं में निरन्तर हो रही वृद्धि पर घोर चिन्ता व्यक्त की थी। हमारे कवि हृदय प्रधान मंत्री ने अपनी काव्य रचनाओं में अनेक स्थलों पर स्त्रियों की दयनीय स्थिति का उल्लेख किया है। मगर सिर्फ चिन्ता व्यक्त करने से ही समस्यायें सुलझ नहीं जातीं। उनके लिए अनवरत ईमानदार कोशिशें की जानी चाहिऐ। पुरुषों को महिलाओं के प्रति संवेदनशील होने की प्रबल आवश्यकता है। हमारा पुरुष समाज का जब तक महिलाओं के प्रति अपेक्षापूर्ण रवैये में उचित तब्दीली नहीं आयेगी, तब तक शासन और सत्ता द्वारा विधि एवं कानून के जरिए उनके उत्थान की दिशा में विशेष कुछ नहीं हो सकेगा।

दहेज जैसे कुप्रवृत्तियों-कुप्रथाओं का हमारे समाज से पूर्णत: उन्मूलन हो जाने पर भी स्थिति बहुत अंशों में सुधर सकती है। इसके लिए महिलाओं को और उनसे सम्बन्धित संगठनों को अपने अभिक्रम पर आगे बढ़ कर आंदोलन की राह पकड़नी होगी तभी दहेज-दानव से समाज की विमुक्ति प्राप्त हो सकेगी। दहेज की ही भाँति अन्यान्य अन्धविश्वास जिनसे हमारा समाज ग्रसित है, उन पर प्रहार करना पड़ेगा। घरेलू हिंसाओं को शीघ्रातिशीघ्र रोकना पड़ेगा।

इसे शुभ लक्षण माना जाना चाहिए कि महिलाओं में अपने समाज के उन्नयन के लिए जागरूकता उत्पन्न हुई है। पत्र-पत्रिकायें और पुस्तकें भी महिलाओं के व्यापक उत्थान में योगदान देने के लिए भारी संख्या में प्रकाशित होने लगी हैं।

समस्यायें बड़ी पुरानी और जकड़ी हुई है- निश्चय ही उनके समाधान के लिए दृढ़ इरादे और संकल्प की अपेक्षा है।

महिला दिवस को रस्मी तौर पर साधारण ढंग से आयोजित करके अपने कर्तव्यों की इतिश्री समझ लेने से कुछ भी नहीं होगा। सुधार संशोधन की दीपशिखा को अहर्निश जलाए रखने से ही प्रगति का पथ प्रकाशमय हो सकेगा। महिला शताब्दी के इस प्रेरक पुनीत अवसर पर कुछ अभिनव, अनूठा, सार्थक सटीक करने का दृढ़ संकल्प लेकर उद्देश्य-मार्ग पर हम बढ़ चलें, बढ़ते ही चलें जायें, जब तक मंजिल खुद हमारे पैरों के आगे न आ जाये।

संपर्क: विशेष कार्य अधिकारी,
बिहार राज्य सहकारी
भूमि-विकास बैंक,
बुद्धमार्ग, पटना-1

पानी के प्रश्न पर दक्षिण के दो प्रांत पानी-पानी

विचार कार्यालय, बैंगलोर

पानी का महत्व इसलिए है कि विश्व का कोई विज्ञान इसका निर्माण नहीं कर सकता। प्रकृति प्रदत्त पानी को ही सुरक्षित रखकर इसका उपयोग किया जा सकता है। पानी का मूल स्रोत समुद्र, नदियाँ और पहाड़ हैं। भारत सदा-सर्वदा से नदी-नालों और पहाड़ों का देश रहा है। सच तो यह है कि इसे नदियों का देश कहा जाता है। यहाँ सिंधु, गंगा, ब्रह्मपुत्र, साबरमती, माही, नर्मदा, साप्ती, ब्राह्मणी, महानदी, यमुना, गोदावरी, कृष्णा पेन्नार और कावेरी कुल 14 बड़ी नदियाँ हैं। इसके अलावा छोटी-बड़ी करीब 4000 नदियाँ देश के किसी न किसी भाग से जल अधिग्रहण करती हैं। लेकिन इन नदियों के जल का कुशल प्रबंधन नहीं होने की वजह से एक ही समय में देश के कुछ भागों में भयंकर सूखे की समस्या और दूसरे हिस्से में प्रलयंकारी बाढ़ की समस्या रहती है। फलतः बाढ़ और अकाल को ही लेकर पानी का विवाद ज्यादा बढ़ता है। कावेरी के पानी को लेकर कर्नाटक और तमिलनाडु का विवाद आज चरम पर है। दरअसल इस मसले पर पिछले तीन दशकों से कर्नाटक और तमिलनाडु के बीच वार्ता जारी है, लेकिन उसका अभी तक कोई सार्थक परिणाम नहीं निकला है।

कावेरी सिर्फ एक नदी ही नहीं बल्कि हेमवती, काबिनी, भवानी और अमरावती समेत कई नदियों का एक समूह है। इसका उद्गम स्थल कर्नाटक होने के नाते इस पर पूरा नियंत्रण उसी का है। कर्नाटक से निकलकर ये नदियाँ तमिलनाडु, केरल और पांडिचेरी के कई क्षेत्रों से गुजरते हुए बंगाल की खाड़ी में गिरती हैं। कर्नाटक और तमिलनाडु दोनों ही राज्यों में किसान ऐसी फसलों की खेती कर रहे हैं जो पानी की माँग ज्यादा करती हैं। कर्नाटक का कावेरी के पानी पर नियंत्रण रहने के कारण स्वाभाविक है कि वहाँ की सरकार अपने किसानों की जरूरतों को प्राथमिकता देती है। इस प्राथमिकता की वजह से तमिलनाडु के किसानों को तकलीफ होने लगती है जिसके कारण विवाद खड़ा हो जाता है।

दरअसल दोनों राज्यों के बीच पचास साल के समझौते में कर्नाटक भारी घाटे में था क्योंकि कर्नाटक नदी के ऊपरी किनारे पर बसा राज्य है। आधा से अधिक पानी देने के बावजूद ऊपरी किनारे पर बसे कर्नाटक को 11 लाख एकड़ से ज्यादा जमीन की सिंचाई नहीं करने दी जा रही है जबकि इसके एक तिहाई हिस्से से भी कम का योगदान करनेवाला तमिलनाडु 1990 तक 25 लाख एकड़ जमीन की सिंचाई कर रहा था। आखिरकार तमिलनाडु के किसान कावेरी के पानी की वजह से तीन-तीन फसलें उगा रहे हैं जबकि कर्नाटक के किसानों को दो ही फसलों से संतोष करना पड़ रहा है। इसलिए कर्नाटक की मजबूरी यह है कि वह तमिलनाडु को पानी तो देना चाहता है लेकिन अपने लोगों की जरूरतों को नजर अंदाज भी नहीं कर सकता। इसलिए कर्नाटक के मुख्य मंत्री एस०एम० कृष्णा का कहना है,"हमें तमिलनाडु को पानी देने में कोई एतराज नहीं है, लेकिन इस बार एक तो बरसात बहुत कम हुई और कावेरी में मिलनेवाली नदियों से जलाशय भर नहीं सके। हमें पानी के साथ ही अपनी मजबूरी भी बांटनी चाहिए। हम इस मसले में किसी से भी बातचीत के लिए तैयार हैं।" कावेरी नदी का जल-विवाद दिनों दिन गहराता ही जा रहा है। तमिलनाडु को कावेरी नदी का पानी जारी करने पर दिल्ली में हुए समझौते और उच्चत्तम न्यायालय के आदेश से कर्नाटक राज्य में व्यापक असंतोष है। इसके परिणाम स्वरूप पिछले दिनों केन्द्र द्वारा पानी जारी करने के खिलाफ भांडा और मैसूर के किसानों ने मैसूर-बैंगलोर मार्ग पर अपनी साइकिलें, बैलगाड़ियाँ और ट्रक खड़े कर यातायात को बाधित रखा। दरअसल कर्नाटक सरकार का कहना है कि तमिलनाडु को जहाँ फसल बोने के लिए पानी चाहिए वहीं कर्नाटक की खड़ी फसलों को अभी पानी की जरूरत है। दूसरी बात यह है कि कर्नाटक के 174 ताल्लुकों में से 154 सूखा प्रभावित हैं जहाँ पेयजल चारा, बिजली आदि क्षेत्रों में इस्तेमाल के लिए 1562 करोड़ की सहायता की जरूरत है।

इधर तमिलनाडु ने आरोप लगाया है कि कर्नाटक ने उच्चत्तम न्यायालय के आदेश के बाद भी उसे पानी नहीं देकर न्यायालय की अवमानना की है। कर्नाटक सरकार का कहना है कि उसके जलाशय में पानी का स्तर तेजी से गिर रहा है। इसके बाद भी उसने 4 से 18 सितंबर तक 8. 2 टीएम सी एफटी पानी तमिलनाडु को दिया है।

इस प्रकार कावेरी जल विवाद पर कर्नाटक और तमिलनाडु की सरकारें पानी-पानी हैं। हालाँकि यह जल विवाद तो करीब सौ साल पुराना है। बीच-बीच में दोनों राज्यों के बीच समझौते तो हुए पर उन पर अमल थोड़े दिनों तक ही हो पाए। बाद में उल्लधु के साथ ही दोनों राज्यों की राजनीति गरमाती रही है। इस बार यह विवाद कुछ नया मोड़ लेता नजर आ रहा है। कावेरी जल विवाद पर जिस तरह क्षेत्रीय राजनीति उभरी है, उससे यह स्पष्ट है कि पानी की आड़ में राष्ट्रीय नजरिए को

दरकिनार कर दिया गया है और किसान के कंधे पर धनुष रखकर दानों सरकारें तीर चलाने पर आमादा हैं। जरूरत इस बात की है कि दोनों सरकारें मिल बैठकर पानी के बंटवारे के प्रश्न पर उदारता का परिचय दें और टकराव से बचें।

एक बात और काबिले गौर है कि भारत में नदियों की कुल जलराशि के लगभग एक-तिहाई का ही उपयोग हो पा रहा है जबकि दो-तिहाई जल नदियों के माध्यम से समुद्र में व्यर्थ चला जाता है। विश्व के विकसित देशों में नदियों का पानी व्यर्थ में बह जाने देना एक अकल्पनीय स्थिति है। अमरीका और यूरोपीय देशों में नदियों का अपवहन समुद्र में नहीं होने दिया जाता और उसके संपूर्ण जल का उपयोग जल अधिग्रहण क्षेत्र में ही कर लिया जाता है। यह जल प्रबंधक के लिए एक अनुकरणीय उदाहरण है, किंतु भारत में अभी तक यह बात साकार नहीं हो पाई है।

तमिलनाडु द्वारा दायर अवमानना याचिका पर सुनवाई के बाद उच्चत्तम न्यायालय ने कर्नाटक को आदेश दिया कि वह प्राधिकरण के फैसले के अनुसार तमिलनाडु के लिए जल कावेरी नदी से प्रतिदिन 9000 क्यूसेक पानी छोड़े। इसके अतिरिक्त प्रधानमंत्री ने भी उसे पानी छोड़ने का निर्देश दिया। बावजूद इसके एस०एम०कृष्णा के मंत्रिमंडल ने तमिलनाडु को पानी देने से इंकार कर दिया। 3 अक्टूबर 2002 को दायर हलफनामें में कहा गया कि यह सवाल ही नहीं उठता कि कर्नाटक अपने जलाशयों से पानी छोड़े। दूसरी ओर तमिलनाडु को कावेरी का पानी छोड़े जाने के खिलाफ आंदोलन के जोर पकड़ने के कारण बैंगलोर और मैसूर के बीच रेल और सड़क सेवा निलंबित कर दी गई जबकि कर्नाटक के मांड्या जिले में प्रदर्शनकारी हिंसा पर उतर आए।

– संजय प्रकाश, बैंगलोर से

पूरा गांव बिकाऊ

विचार कार्यालय, दिल्ली

एक दौर वह था जब उन्नत कृषि और समृद्ध किसान के नाम से पंजाब के गांवों को जाना जाता था और आज कंगाली के दौर से गुजर रहे पंजाब के भटिंडा जिले का एक गांव हरकिशनपुरा खरीदार के इंतजार में है। यकीन मानिए 1170 एकड़ जमीन का 125 परिवारों वाला पूरा का पूरा यह गांव बिकाऊ है। पंचायत द्वारा लगभग **गांव बिकाऊ है** का बोर्ड कोई भी पढ़ सकता है। ऐसा भी नहीं कि उस गांव के लोग मेहनती नहीं हैं या काम करने से जी चुराते हैं। लेकिन सूखे की प्राकृतिक आपदा की वजह से गांव वाले असहाय हैं। दूसरी ओर अलग-अलग खनिजों की कमी के कारण वहाँ की जमीन की उपजाऊ शक्ति खत्म हो चुकी है। इसकी वजह पानी की कमी है क्योंकि ट्यूबवेल के लिए गहरी खुदाई करने के बावजूद किसी को विश्वास नहीं कि जो पानी निकलेगा, वह सिंचाई के लायक होगा।

अब सुनिए इस गांव के बेचे जाने की कहानी। एक हजार की आबादी वाले इस गांव के किसानों पर पाँच करोड़ रुपये से अधिक का कर्ज है। कर्ज नहीं चुका पाने पर अब तक कई किसानों ने तो आत्महत्या तक कर ली है। अब तो स्थिति यह है कि यहाँ के किसानों को न तो कोई बैंक, न कोई आढ़तियाँ या फाइनांस कम्पनी इन्हें कर्ज देने को तैयार है और न ही दुकानदार उधार में राशन देने को। मजबूरन यहाँ के दस-दस एकड़ वाले किसानों को रोजी-रोटी के जुगाड़ में मजदूरी के लिए रामपुरा फूल कस्बे में जाना पड़ता है। बदतर स्थिति तो यह है कि यहाँ की जवान बेटियों की शादी नहीं हो पा रही है और जवान लड़के कुँवारे बैठे हैं। पिछले पाँच-छह वर्षों से इस गांव में कोई शादी नहीं हुई है। भले ही चुपचाप चुन्नी ओढ़ाकर किसी लड़की को विदाकर दिया गया हो।

उदारीकरण के जोश में अपना होश गंवाती जा रही सरकार के उन आर्थिक नीतिकारों की आँखें पंजाब के हरकिशनपुरा गांव की दयनीय स्थिति को देखकर खुलनी चाहिए तथा पंजाब सरकार की गर्दन शर्म से झुक जानी चाहिए। वैश्वीकरण और विनिवेशीकरण के इस दौर में जिस प्रकार औद्योगिक क्षेत्र को विकसित कर दुनिया से मुकाबला करने की अंधी दौड़ में भारत शामिल हो रहा है उससे कृषि क्षेत्र की अहमियत कम होती जा रही है। फलत: पूरे देश के किसानों की आर्थिक स्थिति बद्-से-बदतर होती जा रही है। अच्छे-अच्छे किसान गांव छोड़कर शहर की ओर पलायन करने को विवश हैं। भारत सरकार को किसानों की जर्जर स्थिति से उबारने के लिए गंभीरता से विचार करना होगा अन्यथा हरकिशनपुरा की राह पर अनेक गांव चल पड़ेंगे।

DENSA

PHARMACEUTICALS PVT. LTD.

Fact. Add. :Plot No. 10, Dewan & Sons Udyog Nagar,
Taluka Palghar, Dist. Thane, MAHARASHTRA

Phone No.: (952525) 55285/54471, Fax: 55286

&

DANBAXY

PHARMACEUTICALS PVT. LTD.
(SOFT GELATIN)

Fact. Add: Plot No. K-38, MIDC Tarapur,

Boisar, Dist. Thane, MAHARASHTRA

Office Address:

1, Anurag Mansion, Ashokvan,
Shiv Vallabh Raod, Dahisar (E),
Mumbai-400068
Phone No.: 8974777, Fax: 8972458

MR. DEVENDRA KUMAR SINGH, C.M.D

जाली पासपोर्ट के धंधे में लिप्त सलेम गिरफ्त में

कुख्यात अंडरवर्ल्ड सरगना अबू सलेम और उसकी महिला मित्र व बालीवुड अदाकारा मोनिका बेदी को जाली पासपोर्ट के धंधे में लिप्तता के कारण पुर्तगाल की राजधानी लिस्बन में इंटरपोल ने गिरफ्तार कर लिया है। इंटरपोल के सूत्रों के अनुसार अबू सलेम के ठिकाने के बारे में ग्लोबल पोजीशनिंग सिस्टम के उपयोग से उसके द्वारा 18 और 19 सितंबर को इस्तेमाल उपग्रह फोन के जरिए पता चल सका।

विदित हो कि भारत और पुर्तगाल के बीच हालांकि प्रत्यार्पण संधि नहीं है लेकिन भारत आतंकवाद तथा कैसेट किंग गुलशन कुमार की हत्या सहित कई मामलों में उसका प्रत्यर्पण चाहता है। बताया जाता है कि सलेम के संबंध ओसामा बिन लादेन के अलकायदा संगठन से भी है। इस बीच आंध्रप्रदेश में कुरनूल पुलिस ने सलेम और बेदी को छद्म नामों से पासपोर्ट दिलाने में कथित रूप से मदद करने के आरोप में एक सहायक इंस्पेक्टर समेत तीन व्यक्तियों को गिरफ्तार किया है। पुर्तगाल में गिरफ्तार अबू सलेम, उसकी अभिनेत्री पत्नी मोनिका बेदी और एक अन्य सहयोगी सबीना आजमी ने फर्जी नाम से कुरनूल के एक फर्जी पते के आधार पर हैदराबाद से पासपोर्ट हासिल किए थे। हैदराबाद पासपोर्ट कार्यालय से जारी किए गए पासपोर्ट में कुरनूल को गृहनगर बताया गया था।

दाउद इब्राहिम और छोटा शकील के पूर्व साथी अबू सलेम ने अस्सी के दशक के प्रारंभ में भोपाल से मुंबई पहुँचने के बाद अंधेरी में खोमचा लगाकर आजीविका अर्जित करना शुरू किया था लेकिन कुछ बरस बाद ही वह अपराध जगत से जुड़ गया।

सत्य प्रकाश, दिल्ली से

गाँधी जयंती पर यह शर्मनाक कृत्य

पिछले 2 अक्टूबर को राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के जन्म दिवस पर उ०प्र० के मेरठ कॉलेज परिसर में स्थापित उनकी प्रतिमा को कुछ अज्ञात शरारती तत्वों ने खण्डित कर शर्मनाक कृत्य किया। सुबह उनका सिर धड़ से

अलग जमीन पर पड़ा मिला। रस्म अदायगी के लिए राजनीतिज्ञों को वहाँ दस घंटे बाद ही पहुँचने की फुर्सत मिली और वह भी सिर्फ अखबार वालों को मुँह दिखाने के लिए। यहाँ के विधायकों, मंत्रियों तथा बापू के नाम की कसमें खा-खांकर सामाजिक संगठनों के नाम पर दुकानें चलाने वाले कथित सफेद पोशों ने तो जानकारी मिलने के बाद भी मौके पर पहुँचने की जरूरत नहीं समझी। यहाँ तक कि नगर के प्रथम नागरिक होने का गौरव रखनेवाले नगर प्रमुख की भी अनुपस्थिति पूरे दिन खलती रही।

इस शर्मनाक घटना की जाँच करायी जाए और दोषियों के विरूद्ध कठोर कार्रवाई की जाए।

विनोद रंजन, दिल्ली से

डाकघरों में भी जमा कराया जा सकेगा आयकर रिटर्न

विचार कार्यालय, दिल्ली

आम आयकर दाताओं की दिक्कतों को देखते हुए डाकघरों में भी आयकर रिटर्न जमा करने की सुविधा लोगों को मुहैया करायी जाएगी। इसके अलावा कर से संबंधित सभी दावों का निपटान भी 30 नवम्बर 2002 तक कर दिया जाएगा।

जन-शिकायतों के तुरंत समाधान के लिए प्रधानमंत्री कार्यालय में राज्य मंत्री विजय गोयल ने राजस्व विभाग के अधिकारियों के साथ एक बैठक की। जन-शिकायतों के तुरंत समाधान के क्रम में यह पांचवी बैठक थी।

बैठक में सबसे अहम मुद्दा आयकरदाताओं को होने वाली समस्याओं के समाधान का था, क्योंकि प्रधानमंत्री कार्यालय से हर महीने औसतन 100 से 150 शिकायतें राजस्व विभाग के पास भेजी जाती हैं। इनमें से अधिकांश का संबंध ज्यादा जमा कराये गये कर या ज्यादा काटे गये कर की वापसी से होता है। इस कार्य में देरी होने से आम आयकरदाता परेशान है। बैठक में इस प्रकार के दावों के बारे में अधिकारियों ने बताया कि उन्होंने निपटान के लिए 30 नवम्बर-2002 का लक्ष्य निर्धारित किया है और इस अवधि में सभी मामलों का निपटारा कर दिया जाएगा।

आयकर रिटर्न भरने वाले आयकरदाताओं की लम्बी कतारों में कमी लाने के लिए भी बैठक में विभिन्न सुझावों पर विचार किया गया। इस संबंध में ऐसी व्यवस्था करने पर जोर दिया गया, जिससे ग्रूप हाउसिंग सोसाइटियां, रेजीडेंट एसोसिएशन, बड़ी संख्या के कर्मचारियों वाली विशाल कम्पनियां एक साथ अपने कर्मचारियों की रिटर्न जमा करा सके। इसके लिए डाकघरों में भी आयकर रिटर्न दाखिल कराने की सुविधा मुहैया कराने पर सभी सहमत थे।

बैठक में शिकायतों के जल्द से जल्द समाधान के लिए यह सुझाव दिया गया कि प्रधानमंत्री कार्यालय से प्राप्त गंभीर शिकायतों पर कार्रवाई करने का जिम्मा आयकर विभाग के एक अधिकारी को दिया जाए।

आतंकवादी-बर्बरता की पराकाष्ठा

अक्षरधाम मंदिर पर हमला

संजय सौम्य

गुजरात के गाँधीनगर स्थित अक्षरधाम मंदिर पर पिछले दिनों आतंकवादियों द्वारा किया गया हमला न केवल उनकी बर्बरता की पराकाष्ठा है बल्कि यह भारत की अस्मिता, उसके स्वाभिमान एवं संयम पर भी हमला है जिसकी जितनी भी निंदा की जाए कम होगी। निश्चित रूप से यह भारत की बहुरंगी संस्कृति और यहाँ की लोकतांत्रिक परंपरा पर हमला है। यह बात ठीक है कि विश्व समुदाय और खासकर अमेरिका सहित भारत के सभी राज्यों एवं राजनीतिक दलों द्वारा इस पैशाचिक हमले की निंदा की गयी, पर क्या इस निंदा मात्र से आतंकवाद खत्म हो जाएगा? यह प्रश्न आज इसलिए महत्त्वपूर्ण है कि पाकिस्तान अब हद से पार कर गया है। अमेरिका आतंकवाद के संदर्भ में जिस तरह दोहरे मापदण्ड को अपना रहा है और भारतीय हितों की अनदेखी कर पाक हरकतों को रोकने में आनाकानी कर रहा है, ऐसे समय में भारत को अमेरिका के साथ अपने रिश्तों पर चिंतन-मनन कर उस पर पुनर्विचार करना होगा। ऐसा प्रतीत होता है कि भारतीय संसद पर हुए हमले से भी भारत सबक नहीं ले सका क्योंकि गुजरात पर गिद्ध दृष्टि होने की संभावना के बावजूद भी न तो अपेक्षित सतर्कता बरती गयी और ना ही आतंकवाद से निपटने के मामले में सरकार अपनी नीति और नजरिए में बदलाव लायी। गाँधीनगर के स्वामी नारायण मंदिर में श्रद्धालुओं पर तीन आतंकवादियों ने अंधाधुध गोलियों से 40 लोगों को निशाना बनाया जिसमें दर्जन से अधिक लोग मारे गए। यह बात अलग है कि बाद में दो आतंकवादी कंमाडो दस्ते एवं सुरक्षा कर्मियों के हाथों मारे गए। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि अक्षरधाम की दिल दहलाने वाली यह घटना

गुजरात का अक्षरधाम मंदिर

कश्मीर की चुनावी प्रक्रिया में खलल न डाल सकने से उपजी उन आतंकवादियों की खीझ का परिणाम है। जम्मू-कश्मीर विधान सभा चुनाव को रोकने में जब ये आतंकवादी असफल रहे तब हताशा में इन लोगों ने गुजरात की ऐसी पवित्र जगह को चुना जहाँ ऐसे जघन्य अपराध की आशंका नहीं थी और गुजरात को इसलिए भी चुना क्योंकि यहाँ कुछ माह पहले सांप्रदायिक दंगा भड़का था और अभी भी वहां तनाव कायम है। भारत के प्रधानमंत्री ने इसे सुनियोजित षड्यंत्र कहा है। खैर, समय का तकाजा यह है कि हर हाल में यहाँ सांप्रदायिक सौहार्द बनाए रखा जाए और इसे बनाए रखते हुए ऐसी साजिशों को सफल न होने दें। आतंकवादियों की इस चुनौती को बड़ी गंभीरता से लेते हुए सरकार का भी दायित्व है कि वह इसका कड़ा मुकाबला करे।

ऐसे समय याद आती है अक्टूबर 1947 की साबरमती आश्रम की बात, जब नेहरू की नीतियों से उद्वेलित सरदार पटेल ने गुस्से में बापू से कहा था-"आप देख ही रहे हैं कि कबाइलियों के वेष में पाकिस्तान ने भारत पर कश्मीर सीमा में आक्रमण कर दिया है। नेहरू जी ने दो बार इस विषय में आप से बातचीत की पर वह अभी मौन ही हैं। आप कहें तो सीमा पर 5000 चरखो भिजवा दूँ, लोग सूत भी कातेंगे और 'वैष्णवजन तो तेने कहिए' सुनकर शायद दुष्टों का हृदय परिवर्तन भी हो जाए।" बापू ने पटेल के आक्रोश को समझा और कहा-"कमजोर की अहिंसा कायरता है, वह अहिंसा नहीं है, मजबूरी है। कश्मीर आक्रमण के मामले में हिंसा का जवाब हिंसा से ही देना होगा।" उनका आशय था-

"क्षमा, शोभती उस भुजंग को
जिसके पास गरल हो,
उसको क्या जो विषहीन,
दंतहीन, विनीत, सरल हो।"

गुजरात के स्वामीनारायण मंदिर पर पाकिस्तान के आतंकवादियों का हमला हुआ, यह स्पष्ट हो जाने के बाद हमारे लिए पाकिस्तान के हमलावरों का केवल बचाव करते जाना ही लाजिमी नहीं है बल्कि अब हमें कारगर प्रतिकार भी करना पड़ेगा। केन्द्र सरकार को इस संदर्भ में कोई न कोई कड़ा निर्णय लेना होगा और अमरीका के मनोवैज्ञानिक दबाव से उबरना ही होगा।

गुजरात की गौरव-यात्रा का मतलब

विचार कार्यालय, अहमदाबाद

पिछले तीन बार से रूकी कार्यवाहक मुख्य मंत्री नरेन्द्र मोदी की बहुप्रतीक्षित गुजरात गौरव यात्रा राज्य के सभी 182 विधान सभा क्षेत्रों का सफर कर बिना किसी विरोध और हंगामे के निकल गयी, यह गुजरात और देश की जनता के लिए अच्छी बात मानी जानी चाहिए क्योंकि लोगों को यह आशंका थी कि इससे दंगे कहीं फिर न भड़क उठे। गुजराती समाज इस माने में बधाई के पात्र हैं। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि गोधरा कांड पर गुजरात की जनता को बांटने की कोशिश में लगातार लगे हैं-सत्ता के हुकमरान ताकि अपनी अंदरूनी कमजोरी को छिपाया जा सके और गुजरात के चुनाव में सफलता हासिल की जा सके। पर सच तो यह है कि गुजरात की शांतिप्रिय जनता पर इसका कोई प्रभाव पड़ सकेगा, इसमें संदेह है।

गुजरात का तीन-चार हजार वर्ष पुराना इतिहास रहा है। गाँधी की यह धरती कला और संस्कृति की एक अत्यंत समृद्ध भूमि रही है। देश और दुनिया ने गुजरात को अत्यंत समृद्ध नाट्य परंपरा, संगीत और साहित्य के लिए जाना है, हत्या और हठधर्मी के लिए नहीं। दूध की नदी के इस राज्य को पिछले दिनों खून की नदी में डुबोया गया। क्या यह गौरव की बात है? गोधरा और पूरे गुजरात में सरेआम कत्ल हुआ, क्या इस पर गौरव महसूस किया जा सकता है? तो आखिर गौरव यात्रा किस बात की? यह सवाल देशवासियों के मन में कौंध रहा है? यह भी नहीं कि देशवासी इस गौरव यात्रा की असलियत को नहीं समझ पा रहे हैं। गुजरात में हिन्दुत्व कार्ड खेलकर चुनावी जीत हासिल करना इतना आसान नहीं। हाँ, इतना अवश्य है कि पिछले दिनों राजस्व मंत्री हरेन पाण्ड्या के इस्तीफे और केशुभाई के अनमनेपन से भाजपाई एकता के दरकने का जो आसार नजर आ रहा था, नरेन्द्र मोदी ने इस गौरव-यात्रा के जरिए उनपर झीनी चादर डालने में बहरहाल सफलता पायी है। भय और असुरक्षा के माहौल में होनेवाले गुजरात का चुनाव किसके लिए फायदेमंद होगा, यह कहना अभी मुश्किल है। लेकिन इतना तय है कि चुनाव में भाजपा और कांग्रेस के बीच जोरदार टक्कर होगी। कांग्रेस अध्यक्ष बाघेला और कार्यवाहक मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी ने फगवाल से चुनाव का बिगुल बजा दिया है, पर गेंद जनता के पाले में है। उसे शांति और अशांति तथा सद्भाव और बिखराव के बीच का चुनाव करना है।

एक ओर जहाँ नरेन्द्र मोदी गुजरात की गौरव यात्रा पर गर्व कर रहे हैं वहीं दूसरी ओर प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी न्यूयार्क में गुजरात की हिंसा के कारण शर्म से सिर झुक जाने की बात कह रहे हैं। प्रधान मंत्री ने अप्रवासी भारतीयों को संबोधित करते हुए कहा कि वे जहाँ कहीं भी गए गुजरात हिंसा का जिक्र हुआ।

इसी प्रकार कुछ दिनों पूर्व गुजरात में हुए भयावह दंगों का जायजा लेने आए अनिवासी भारतीयों के एक तीस-सदस्यीय दल का कहना था कि गुजरात का दंगा उनकी कल्पना से भी दो-दो कदम आगे भयावह था।

गुजरात की इस गौरव यात्रा से जिस गौरव के निर्माण की उम्मीद भाजपा तथा संघ परिवार के लोग कर रहे थे, वह कहीं नजर नहीं आया। हाँ, संघ कार्यकर्ता की भीड़ अवश्य नजर आयी, किंतु आम जनता में कोई उत्साह नहीं देखा गया। कारण कि विगत छह माह में गुजरात का काफी गौरव खत्म हो चुका है। अपनी सौम्यता और मधुरता के लिए प्रसिद्ध गुजरात पर क्रूरता और अमानवीयता का ठप्पा लग गया है। गुजरात के उद्योग-धन्धे चौपट हो चुके हैं। इसलिए गुजरात गौरव यात्रा का मतलब है हिन्दुत्व कार्ड खेलकर विधान सभा का चुनाव में विजय हासिल करना।

विनिवेश के सवाल पर सरकार और संघ आमने-सामने

पिछले दिनों केन्द्र में भाजपा नीत गठबंधन सरकार के तीन मंत्रियों-जॉर्ज, नाईक और जोशी की बैठक के बाद केन्द्र के सरकारी उपक्रमों विनिवेश की गुत्थी और उलझती नजर आ रही है। रक्षा मंत्री जॉर्ज फर्नांडिस, पेट्रोलियम मंत्री राम नाईक और मानव संसाधन मंत्री मुरली मनोहर जोशी ने जहाँ पेट्रोलियम क्षेत्र की कंपनियों को निजी हाथों में सौंपना उचित नहीं समझा वहीं विनिवेश मंत्री अरुण शौरी की निराशा आज वरिष्ठ मंत्रियों की बैठक के बाद और बढ़ गयी।

विनिवेश विरोधी खेमे के बढ़ते दुस्साहस को देखते हुए प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने विनिवेश नीति की जमकर वकालत की और साफ कर दिया कि सरकार अब इस मसले पर पीछे कदम नहीं हटाएगी। दूसरी ओर राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सरसंचालक कु०सी० सुदर्शन सरकार की विदेशी निवेश व आर्थिक सुधार नीतियों से खुश नहीं हैं। उन्होंने सरकार का नाम लिए बिना साफ लब्जों में चेताया कि "जो लोग स्वदेशी विकास पथ के बजाए विकास के विदेशी रास्ते पर चलना चाहते हैं उन्हें पद से हटना पड़ेगा।" श्री सुदर्शन ने कहा कि अगर देश विकास के लिए विश्व बैंक, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष व विश्व व्यापार संगठन के दिखाए रास्ते पर चलेगा तो सिवाय आर्थिक गुलामी के कहीं और नहीं पहुँच पाएगा। उदाहरण है कि पूर्वी एशिया में थाइलैंड, इंडोनेशिया व कोरिया जैसे देश अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष की सलाह मानकर ही बर्बाद हुए हैं। उनका कहना है कि विश्व बैंक, आई०एम०एफ०और डब्लू टी०ओ०का मकसद विकासशील देशों के संसाधनों पर कब्जा जमाना है। सरकार को अपनी नीतियों को ग्राम केन्द्रित व रोजगार परक बनाना होगा। इस प्रकार देखा जाए तो सरकार और संघ सरकारी आर्थिक नीतियों को लेकर अभी आमने-सामने हैं।

उल्लेखनीय है कि हिंदुस्तान पेट्रोलियम और भारत पेट्रोलियम के निजीकरण का सरकार के अंदर से ही विरोध को देखते हुए मंत्रिमंडल की विनिवेश संबंधी समिति ने सितंबर के शुरू में हुई बैठक में इन पर फैसला तीन माह के लिए टाल दिया था।

राजधानी एक्सप्रेस दुर्घटना

सेवा, समर्पण व मानवता की जीती जागती *मिसाल भी पेश की बिहारवासियों ने*

घायलों के फरिश्ते बन गए रफीगंज के लोग

विचार कार्यालय, पटना

जिस बिहार की छवि चारा, अलकतरा, मेधा, अपहरण, बलात्कार, लूट, डकैती और हत्या के कारण देश-दुनिया में लगातार धूमिल होती चली जा रही है उसी राज्य के वासियों ने औरंगाबाद के रफीगंज के निकट विगत 9 सितम्बर की रात 10 बजकर 40 मिनट पर हुई हावड़ा-नई दिल्ली राजधानी एक्सप्रेस दुर्घटना के बाद अपनी नकारात्मक छवि के धुर विपरीत सेवा, समर्पण और मानवता की जीती-जागती मिसाल पेश की।

सेना के एक सेवानिवृत्त जवान शमशेर बहादुर सिंह एवं रफीगंज प्रखंड के दोसीसा पंचायत के फेसरा एवं मालीगांव के लोग यात्रियों को मदद नहीं करते तो शायद कई और लोग जान गंवा देते। यह महज संयोग था कि शमशेर बहादुर जिंदा बच गए। उन्होंने अकेले एक सौ यात्रियों की जान बचायी। खून और पसीने से सराबोर शमशेर ने दिन भर दुर्घटनाग्रस्त डिब्बे में फंसे यात्रियों को ट्रेन से निकाला। 9 सितम्बर की रात रफीगंज के पास धावा पुल पर जब राजधानी एक्सप्रेस के दुर्घटनाग्रस्त हो जाने के बाद बोगियों से मासूम बच्चों एवं महिलाओं की चीख-पुकार सुनाई दे रही थी तो सबसे पहले रफीगंज इलाके के ग्रामिणों ने ही घायलों को बोगियों से निकालकर मानवता की मिसाल पेश की। दुर्घटना के तुरंत बाद फसरा गांव के लोगों ने हाथ में लाठी और टार्च लेकर जिला प्रशासन के पहुँचने के पहले ही लगभग डेढ़ सौ यात्रियों को सुरक्षित निकाल लिया। घायल तपन घोष, एस०आलम ने बताया कि गांव वालों की मदद देखकर तो उनके दिमाग में बिहारियों के प्रति पहले से जमी खराब मानसिकता खत्म हो गयी। लगभग चार दर्जन घायलों के अनुसार फेसरा गांव के लोगों ने जो उनकी सेवा की शायद वे इस कर्ज को नहीं उतार पाएंगे। हावड़ा निवासी जैनुल आबदिन ने बताया कि बिहार के लोग यात्रियों की न केवल बड़ी तत्परता से सेवा की बल्कि उनके सामानों की सुरक्षा भी की। आम तौर पर ऐसा देखा गया है कि दुर्घटना के बाद लोग यात्रियों के सामानों को लूट लेते हैं लेकिन इस बार ग्रामीणों ने सामानों की सुरक्षा कर एक उदाहरण पेश किया। कोलकाता की रहनेवाली अफरीन खान का सात साल का लड़का हमजा खान जब बोगियों के बीच पीस गया था और माँ तड़प रही थी तो रफीगंज के श्याम सुन्दर ने बच्चे के शव को निकालकर तड़पती माँ को सौंपा था।

> **ग्रामीणों के इस सेवा भाव में यह नहीं देखा गया कि मृतक या घायल किस धर्म का है। बिना किसी भेदभाव के इंसानियत की मिसाल पेश की गयी।**

ग्रामीणों के इस सेवा भाव में यह नहीं देखा गया कि मृतक या घायल किस धर्म का है। बिना किसी भेदभाव के इंसानियत की मिसाल पेश की गयी। कुछ दुधमुँहे बच्चे, जो अपनी माँ के वक्ष से चिपककर रो रहे थे, इस क्षेत्र की महिलाओं ने उन्हें अपना दूध पिलाकर मातृत्व का परिचय दिया। कोलकाता के विपिन बिहारी सिंह ने बिहारवासियों के सेवा भाव को देखकर कहा कि बिहार के प्रति उनके पहले की बनी धारणा ही बदल गयी, इस दुर्घटना के बाद यात्रियों का सामान न लूटा जाना एक सराहनीय कार्य रहा। एक ओर जहाँ बचाव और राहत कार्य में आस-पास के ग्रामीणों ने जो भूमिका निभायी वह प्रशंसा के योग्य है तो दूसरी ओर राजनेताओं ने इस दुर्घटना में मृत यात्रियों की लाशों पर अपनी-अपनी रोटी सेंक कर जमकर राजनीति की।

द्वितीय श्रमिक आयोग की रिपोर्ट श्रमिक विरोधी

सितंबर में द्वितीय राष्ट्रीय श्रम आयोग की रिपोर्ट सरकार को सौंपे जाने के बाद इसके प्रस्तावों पर प्रश्न उठने लगे हैं। दिल्ली सरकार के उद्योग एवं श्रम मंत्री दीपचंद बंधु ने इस रिपोर्ट को गरीब एवं श्रमिक विरोधी बताते हुए कहा है कि आयोग की सिफारिशें देश के करोड़ों मजदूरों को सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने की दिशा से कोसों दूर हैं। प्रस्तावित कानूनों से अकेले दिल्ली के 45 लाख से ज्यादा संगठित व असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों के हितों पर कुठाराघात होगा।

उदाहरण के तौर पर मैनेजमेंट रिलेशन अधिनियम 2002 में 300 कर्मचारियों से कम संख्या वाली औद्योगिक इकाइयों में कर्मचारियों की छँटनी सरकार की अनुमति के बिना भी हो सकेगी। इसी प्रकार आयोग द्वारा प्रस्तावित लघु उद्योग अधिनियम 2002 उन लघु उद्योगों पर लागू होगा जिनमें मजदूरों की संख्या 19 से ज्यादा नहीं है। इस अधिनियम के खण्ड छह में श्रमिकों की अस्थाई छँटनी, सेवा निलंबन, विवादों के निपटान आदि से संबंधित प्रावधान काफी कठोर हैं। अधिनियम के खण्ड 17 में मालिक द्वारा किसी भी श्रमिक की किसी भी समय अस्थाई छँटनी करने तथा अस्थाई छँटनी की 45 दिन से अधिक अवधि होने पर श्रमिक की सेवा निलंबन की व्यवस्था है।

राष्ट्रीय श्रम आयोग की सिफारिशों पर केन्द्र सरकार द्वारा आयोजित सभी राज्यों के श्रम मंत्रियों द्वारा चर्चा की गई किंतु बिना कोई नतीजे के समाप्त हो गई।

इस बीच ध्यातव्य यह भी है कि इधर लगभग पिछले दो दशक से कार्य संस्कृति की सेहत में जिस प्रकार गिरावट आती जा रही है उससे राष्ट्र के समुज्जवल भविष्य पर सवाल खड़ा हो गया है। जब हम काम ही नहीं करेंगे तो प्रगति कैसे हो पाएगी। हर आदमी आज कम से कम काम कर अधिक से अधिक धन कमाने की धुन में है। चाहे वह सरकारी-गैर सरकारी दफ्तर हों, कल-कारखाने हों या फिर खेत-खलिहान, सभी क्षेत्रों में नहीं काम करने या कम काम करने की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। यहाँ तक कि भवन निर्माण में लगे राजमिस्त्री अथवा कुली भी मालिक की अनुपस्थिति में काम के प्रति उदासीनता दिखाते हैं। यह प्रवृत्ति हमारे देश के लिए भयानक और गंभीर है जिसकी ओर भी मजदूर-मालिकों का ध्यान जाना चाहिए।

एक दाम - सदा आराम

एक दाम की दुकान

Kanchan

फैंसी रेडिमेड वस्त्रों के विक्रेता।

प्रो० गोपाल प्रसाद सिंह

Readymade Garments, Khas-Mahal More,
Chiraiyantand, Patna-1

1 अक्टूबर से हाजीपुर में पूर्व मध्य तथा जयपुर में उत्तर पश्चिमी रेलवे का मुख्यालय प्रारंभ

देश का सबसे आधुनिक एवं नवीनतम सूचना प्राद्यौगिकी से युक्त बिहार में पहला पूर्व मध्य क्षेत्रीय रेलवे का मुख्यालय हाजीपुर में एक अक्टूबर 2002 से प्रारंभ हुआ। इसी प्रकार जयपुर में भी पहली बार उत्तर-पश्चिमी रेलवे के क्षेत्रीय कार्यालय को मूर्त रूप दिया गया।

झारखण्ड, उत्तर प्रदेश तथा छतीसगढ़ राज्यों तक फैले बिहार के इस इकलौते रेल जोन पूर्व मध्य रेलवे के अन्तर्गत सोनपुर, समस्तीपुर, दानापुर, मुगलसराय एवं धनबाद पाँच मंडलों में कुल 372 रेलवे स्टेशन होंगे। रेल पथ की कुल लंबाई 3449.60 कि०मी० होगी जिसमें 2632.48 कि०मी० बड़ी लाइन तथा 817.12 कि०मी० मीटर गेज लाइन होगी।

रेल मंत्री नीतीश कुमार तथा बिहार के सभी राजनीतिक दलों एवं बिहारवासियों की एकजुटता से पहली बार बिहार को मिले इस तोहफे की विशेषता यह है कि चार राज्यों के अन्तर्गत फैला यह जोन सर्वाधिक आयवाला हो गया है। इस जोनल रेल से चलनेवाली मेल एक्सप्रेस गाड़ियों की संख्या 77 तथा सवारी गाड़ियों की संख्या 228 हो गयी है।

हाजीपुर में 12600 वर्गमीटर में बननेवाले पूर्व मध्य रेलवे के मुख्य प्रशासनिक भवन का शिलान्यास 1 अक्टूबर को रेलमंत्री नीतीश कुमार द्वारा किया गया। यह भवन भारत का सबसे मादक भवन होगा। कर्मचारियों के 498 यूनिट एवं अधिकारियों के लिए 147 यूनिट समेत कुल 645 आवास निर्मित होंगे।

-राजकिशोर राजन, हाजीपुर से

स्पंदित प्रतिबिम्ब

(1) अमरनाथ 'अमर' के प्रथम काव्य संग्रह 'स्पंदित प्रतिबिन्ब' की रचनाएँ अस्तित्व के लिए संघर्षरत, जीजिविषा से भरे और 'जूझतें हुए मन की कविताएँ हैं। उनकी कविताओं में यह संघर्ष, व्यक्तिगत और सामाजिक आंतरिक और बाह्य, यथार्थ और भावना के अनेक स्तरों पर देखने को मिलता है। इसी संघर्ष से कवि को जीवन की प्रेरणा और जिंदगी की परिभाषा मिलती है।

रोशनी के लिए
संघर्ष जब बढ़ जाता हैं
तब सन्तारों को बनते हुए
खुद चिराग बन जल उठता हूँ मैं हॉं
यही परिभाषा बन गयी है जिंदगी की

(2) कवि ने जिंदगी की जो परिभाषा गढ़ी है वह हारे हुए मन का फलसफा नहीं है बल्कि उसके मन की दृढता का प्रतीक है। कवि का विश्वास है कि झुलसी हुई कल्पनाएँ और टुकड़ों में विभक्त यथार्थ ही जीवन का अनिवार्य और सम्पूर्ण सत्य नहीं हो सकता, इसीलिए घोर निराशा के क्षणों में भी वह संघर्ष की राह नहीं छोड़ता बल्कि अपने 'घायल डैनों में उड़ने की ललक' पैदा करता है। 'भीड की तरहाई' में चुस्कियों से भरी चम्पई शाम को याद करता है, और अपने संघर्ष की चेतना को जागृत करता है।

ऐसे में ढूंढता हूँ
चाय की चुस्कियों से भरी
वो चम्पई शाम
वो जीवित क्षण ज़िदगी का जीवंत अहसास
और अपना संघर्ष

(3) यद्यपि अमरनाथ अमर की कविताओं में आत्म संघर्ष का स्वर ही मुखर है परंतु उनका संघर्ष एकांगी है कवि की दृष्टि वीरान झोपड़ियों में भी गयी है और इतिहास के पन्नों पर भी, शहरों से गुजरता हुआ वह जीवन की निरीहता को महसूस करता है, इसी लिए वह मानवता के हित में पुरानी और नयी मान्यताओं के बीच संतुलन की तलाश करता है और अपने ज्ञान के उपयोग द्वारा नग्न मानवता को ठकना चाहता है।

स्कूल कॉलेज और
विश्वविद्यालयों
में तैयार किए छात्रों से
मैं बताना चाहता हूँ
एक परिछात्रा
ताकि नग्न मानवता को ढँक
सकूं

(4) अमरनाथ 'अमर' की लगभग सभी कविताओं ने प्रकृति व्यापक रूप से उपस्थित है। प्रकृति के माध्यम से ही वह अपनी आशा-निराशा, जय-पराजय, अपनी सभी अनुभूतियों को व्यक्त करते है, ऐसे समय मे जबकि कविता में प्रकृति प्रायं विलुप्त हो गयी है, उनकी कविताओं में प्रकृति की व्यापक उपस्थिति उन्हें औरों से अलग एक विशिष्ट स्थान प्रदान करती है। वे बर्फ के पिघलने टुकड़े में अस्तित्व की अकुलाहट देखते हैं और जीवन के संघर्ष में प्रकृति से ही जिजीविषा और प्रेरना ग्रहण करते हैं। माना/खण्डित है। मनोकामनाएँ

रूकी हुई सी है साँसे
अनिश्चित है ज़िदगी/
फिर भी आज भी/
खड़े हैं पर्वत/
बहती हैं नदियाँ छाते हैं बादल/
पड़ती हैं बूंदे/
छाती है हरियाली उछलती हैं सागर की लहरें/
हिलोर लेती है उमंगे किसके लिए/
हमारे लिए ही तो।

(5) संग्रह को अनेक कविताओं में प्रेम अपनी पूरी उदात्ता के साथ मौजूद है। जब स्पदित भावना के बीच प्रेमिक के स्पर्श की गुदमुदाहट चाँदनी बन जानी है, तब ऐसे क्षणों में गीत होह या गजल, 'हवा पर तैरती धूप को खुश्वू का आभास' हो या फिर 'रात की जहां में किसी चिराग के बीच किसी छाया का प्रतिबिम्ब' सब कुछ प्यार में बदल जाता है। ऐसे क्षणों को व्यक्त कर पाने में शब्द असमर्थ हो जाते हैं।

हम तुम अब एक हैं
यह कल्पना है/ या यथार्थ
प्रश्न है या उत्तर
नहीं बोल पाएगे/ ये शब्द
शायद बोल जाए
तुम्हारी खामोशी

कविताओं के साथ-साथ इस समूह में कुछ गीत थी हैं जो अपनी सरलता लयात्मकता और माधुष से प्रभावित करते हैं इन गीतों में यहाँ एक और अपने सपनों के गाँव के पीछे घूट जाने का दुख है वहीं दूसरी ओर बदली की घूप के समान सुखद प्रतीत होने वाली प्रियतमा की याद भी है।

अमर जी की कविताए खुद से वात करती हुई चलती है। जीवन के कठिन संघर्षो से 'झूमता हुआ मन जीवन के संकल्पों विकल्पों पर विचार करना है। कभी अपने जिवन के बारे में सोचता है तो कभी वर्तमान के बारे में और अंत में अपनी घनराशा और हताश की घूल मादु सुखद भविष्य के प्रति आश्वस्ति के भाव से भरा दिखता है। अमर जी की कविताओं में दुख है, संघर्ष है, निराश है, पर पराजय नहींहै, और इसी लिए उनकी कविताए मूल्यवान बन जाती है।

संग्रह की कविताओं में जगह-जगह प्राकृतिक प्रतीकों का प्रयोग किया गया है, ये प्रतीक नये थले ही न होंपर अर्थ निर्वाह करने में सक्षम अवश्य है, कही कहीं पर अमर जी ने अलग कह कर प्रयोग किए हैं जैसे चाँद तुम ही आ जाओं नीद की गोली बन कर' या 'खामोशी की गूंज' आदि। ऐसे स्थल कम है पर ऐसे स्थल कवि की काव्य क्षमता और उसकी नवीन दृष्टि की ओर संकेर्न करते हैं।

-ब्रजेश कुमार

घुमंतू आदिवासी आज भी नागरिकता और मताधिकार से वंचित

देश में लगभग 10 करोड़ विमुक्त घोषित घुमंतू आदिवासी ऐसे हैं, जिन्हें विदेशी अंग्रेजी हुकूमत ने जन्मजात अपराधी घोषित कर दिया था। स्वतंत्रता प्राप्ति के 55 साल बाद भी ये आदिवासी देश की नागरिकता और मताधिकार से वंचित हैं। आज भी समाज इन जनजातियों से नफरत करता है। पुलिस इनके साथ बिना किसी साक्ष्य के अपराधियों जैसा सलूक करती है। लेकिन सुखद बात यह है कि न्यायमूर्ति वेंकटचलैया की अध्यक्षता में पिछले दिनों गठित संविधान समीक्षा आयोग ने तमाम अटकलबाजियों को दरकिनार करते हुए इन 10 करोड़ आदिवासियों को संविधान के दायरे में लाने की ऐतिहासिक सिफारिश की है। सिफारिश में कहा गया है कि सरकार इन आदिवासी जनजातियों की तर्ज पर ही विकास सुनिश्चित करे। यदि यह संभव न हो तो सरकार एक विशेष आयोग का गठन करे तथा इनके सामाजिक, आर्थिक पुनर्वास के साथ ही शैक्षिक विकास के लिए सुविधा व संसाधन मुहैया कराए। आयोग ने यह भी सिफारिश की है कि पुलिस अपना नजरिया बदलकर इनके साथ अपराधियों जैसा सलूक करना बंद करे। यदि सरकार आयोग की इन सिफारिशों को कार्यान्वित करती है तो 10 करोड़ घुमंतू आदिवासी जनजाति के लोगों के जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन आना निश्चित है।

देश के विभिन्न राज्यों में कमोवेश दो सौ बिरादरी वाले करीब 10 करोड़ आदिवासी जनजाति की व्यथा-कथा यों है। जंगल, जमीन और जल से अगाध प्यार करनेवाले ये आदिवासी अत्यंत ही स्वाभिमानी और जुझारू प्रकृति के होते हैं। जब विदेशी हुकूमत आदिवासियों के जल, जंगल और जमीन पर जबरन कब्जा करने लगा, तो उन्होंने उनका मुँहतोड़ जवाब दिया। मजबूरन अंग्रेजी सरकार ने इन घुमंतू आदिवासियों को 1871 में जन्मजात अपराधी घोषित कर 52 सेटलमेंट एरिया में सत्रह फुट ऊँची तार के बाड़ों में कैद कर दिया। यह सिलसिला 1947 तक चलता रहा। 1952 में सरकार ने इन्हें विमुक्त घोषित कर दिया तथा किसी तरह का संवैधानिक अधिकार नहीं दिया। आजादी के बाद आज तक न केवल ये घुमंतू आदिवासी नागरिकता और मताधिकार से वंचित है बल्कि समाज इनसे घृणा करता है। शिक्षा, आवास और तमाम तरह के सामाजिक विकास से वंचित इन आदिवासियों की सामाजिक हैसियत यह है कि इन्हें अपने मृत परिजनों को जलाने के लिए भी सार्वजनिक श्मशान स्थलों का उपयोग करने नहीं दिया जाता। पारदी, सांसी, घंटीचोर और हकड़ आदिवासियों को अपराधी घोषित करने में किसी तरह का परहेज नहीं किया जाता।

विचार कार्यालय, दिल्ली

कब मिटेगी छूआछूत की बीमारी

चकवाड़ा की घटना समाज के लिए कलंक

विचार कार्यालय, जयपुर

पिछले दिनों राजस्थान के जयपुर जिले के चकवाड़ा गांव में दलित-सवर्ण में छुआछूत को लेकर जो टकराव हुआ वह भारतीय समाज के लिए निश्चित रूप से कलंक माना जाएगा। इक्कीसवीं शताब्दी के आज के दौर में दलित वर्ग के लोगों को तालाब में स्नान करने तथा मंदिर में प्रवेश करने से रोका जाए इससे बढ़कर शर्मनाक बात और क्या हो सकती है। जी हाँ, जयपुर जिले के फागी तहसील स्थित इस चकवाड़ा गांव में अनुसूचित जाति के लोगों को वहाँ के तालाब के पानी का प्रयोग और वहाँ के विश्वनाथ मंदिर में पूजा करने की अनुमति आज भी नहीं है। पिछले दिनों जब दलितों ने मंदिर में जाकर पूजा-अर्चना करने की कोशिश की तो तथाकथित ऊँची जाति के लोगों ने इसका न केवल विरोध किया, बल्कि हिंसात्मक रवैया भी अपनाया। हरियाणा के झज्जर जिले के दुलीना गांव में गौहत्या के संदेह से उपजी अफवाह से पाँच दलितों की हत्या सवर्ण मानसिकता का ही द्योतक है। वर्ण व्यवस्था पर आधारित हिंदू समाज में शूद्रों को आखिर कब. सम्मान मिलेगा और उन्हें अपमानजनक सामाजिक व्यवहार से कौन बचाएगा, हिंदू समाज को इस सवाल पर गंभीरता से विचार करना होगा।

बिडंबना यह है कि छुआछूत की यह समस्या केवल जयपुर के इस चकवाड़ा गांव की ही नहीं बल्कि राजस्थान के साथ तमिलनाडु, बिहार, ऊ०प्र०, तथा महाराष्ट्र एवं गुजरात के अनेक गांव भी इस रोग से ग्रस्त हैं। तमिलनाडु में दर्जनों ऐसे गांव हैं जहां दलितों को मंदिरों में प्रवेश करने की अनुमति नहीं है। कुछ माह पूर्व केरल में एक दलित मंत्री के पुत्र की शादी के वक्त मंदिर में घटी घटना से आप अवगत ही हैं। कई गांवों में छूआछूत की यह कुप्रथा की जड़ें इतनी गहरी बनी हुई हैं कि न्यायालय के आदेशों के बावजूद भी दलितों को मंदिरों में प्रवेश की इजाजत नहीं दी जाती है। फलतः दलित वर्ग के लोग उबकर ईसाई, बौद्ध अथवा इस्लाम धर्म अपनाने को बाध्य हो रहे हैं। इसके बावजूद भी हिन्दू धर्म का तथाकथित उच्च तबका नहीं चेत पा रहा है।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि भारतीय संविधान में असपृश्यता को पूरी तरह नकारा गया है फिर भी छुआछूत की जड़ों को काट कर फेंका नहीं जा सका है, कारण कि छुआछूत को बढ़ावा देने वाले दोषी लोगों को सजा नहीं दी जा रही है। बल्कि सच तो यह है कि वैसे लोगों का वर्चस्व समाज तथा राजनीति में और बढ़ता जा रहा है। मगर ऐसे लोग यह भूल जाते हैं कि समय के बदलते परिवेश में दलित, शोषित तथा पीड़ित वर्गों में भी अब चेतना आ रही है और संविधान में प्रदत अधिकारों को पाने की ललक उनमें जाग रही है। अभाव केवल अशिक्षा का है। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि छूआछूत की इस मानसिकता से मुक्ति केवल संविधान और कानून के सहारे नहीं मिल सकती और न इस समस्या का निदान जोर-जबर्दस्ती से होगा। छूआछूत की इस बीमारी को दूर भगाने के लिए एक ओर जहाँ हिन्दू धर्म के ठेकेदारों को हिन्दुत्व के मूल दर्शन के मद्देनजर अपनी मानसिकता में बदलाव लाना होगा वहीं सामाजिक धार्मिक स्वैच्छिक संगठनों को भी इस समस्या के निदान के लिए कदम बढ़ाना होगा। इसे जानांदोलन का रूप देना होगा।

दलितों के लिए सही शिक्षा का स्वरूप

❑ विजय प्रकाश, भा०प्र०से०

शिक्षा के सरोकारों से प्रत्यक्षतः संपृक्त रहने वाले भारतीय प्रशासनिक सेवा के वरिष्ठ अधिकारी श्री विजय प्रकाश शिक्षा की दशा दिशा से सुपरिचित रहे हैं। कौन सी शिक्षा पद्धति हमारे लिए सर्वथा उपयुक्त होगी, व्यक्तिगत स्तर पर इस सवाल पर भी आप गहराई से चिन्तन-मनन करते रहे हैं।

दलित कहे जाने वाले लोगों के लिए कैसी तालीम मुफीद होगी- अनुभवी एवं विद्वान लेखक ने इस मुद्दे पर जो रौशनी डालने का प्रंशसनीय प्रयत्न किया है उसे अनुवर्ती पंक्तियों में प्रस्तुत किया जा रहा है। -संपादक

आज की शिक्षा व्यवस्था केवल मध्यवर्गीय मूल्यों पर आधारित है। निचले, दलित तबके इस फ्रेम में कहीं नहीं हैं। गाय, भैंस, सुअर, बकरी चरानेवाले, मछली मारनेवाले, जंगलों में जड़ी-बूँटियाँ चुनने वाले, डोमगिरी, लोहारगिरी, बढ़इगिरी जैसे काम करने वाले तबके से इस शिक्षा व्यवस्था को कोई लेना देना नहीं है। यही कारण है कि दलित तबके के बच्चे इस व्यवस्था में सफल नहीं हो पाते। जबकि सफलता सीखने का सबसे मोटिवेटिंग फैक्टर है। इस तर्क के वैज्ञानिक आधार पर जरा गौर करें। दिमाग में 100 बिलियन न्यूरान होते हैं, लगभग आसमान के सितारों के बराबर। ये न्यूरान हमारी सभी गतिविधियों, मसलन देखने, सुनने, समझने आदि के लिए पूरी तौर पर जिम्मेवार होते हैं। ऐसे में एक बच्चा जब जन्म लेता है तो ये न्यूरान उसके आसपास के परिवेश में मौजूद स्थितियों के साथ तारतम्य बैठाना शुरू करता है। दो-तीन सालों में तो ये न्यूरान उस परिवेश के आदि हो जाते हैं। जैसे हम यह मान लें कि कोई बच्चा जन्म से ही देख नहीं सकता, ऐसे में दो-तीन साल बाद उसकी आँखों का ऑपरेशन वगैरह कर किसी तरीके से आँख की गड़बड़ी दूर भी कर दी जाये तो उसकी आँखों से जुड़े न्यूरान आसपास दिख रही चीजों को ग्रहण नहीं कर सकेंगे, क्योंकि वे इसे न ग्रहण करने के आदि हो चुकें हैं। ठीक इसी तरह एक डोम के यहाँ जन्म लेने वाला बच्चा या फिर ऐसे ही समाज में पैदा लेने वाला बच्चा भी अपने आस-पास के परिवेश में इस कदर ढल गया रहता है कि उसे विद्यालय के बंद कमरे में किताबी ज्ञान दिया जाये तो वह सब उसे नागवार गुजरेगा।

मनोवैज्ञानिक होवार्ड गार्डेनर के अनुसार पहले इंटेलिजेंस जहाँ एक ही तरह का था, वहीं अब यह सात प्रकार का होता है। शाब्दिक, तार्किक, रागात्मक, विकासात्मक, शरीरिक, सामाजिक और अन्तः ज्ञानात्मक, मध्यवर्ग के बच्चों में तार्किक और शाब्दिक इन्हीं दो तरीके के इंटेलिजेंस पाये जाते हैं। जबकि दलित तबके में रागात्मक, शारीरिक और सामाजिक इंटेलिजेंस ज्यादा होती है। वहीं दूसरी तरफ स्कूलों में जो पढ़ाई होती है, उसमें तार्किक और शाब्दिक, दो ही तरह के इंटेलिजेंस का उपयोग हो पाता है। ऐसे में दलित या पिछड़े वर्ग का बच्चा तार्किक और शाब्दिक आधार पर चल रही शिक्षा में शुरू से ही पिछड़ने लगता है। उनका मन पढ़ाई से उचटने लगता है। आज के विद्यालयों में पाठ्यक्रम का जो कंटेंट होता है, उसमें वैसी चीजों का ही समावेश रहता है जो सीधे रूप से नौकरी से जुड़े हों। आज के हरिजंन विद्यालय भी कमोवेश इसी स्थिति से गुजर रहे हैं। ऐसे में इन विद्यालयों में पढ़ने वाले दलित बच्चे विद्यालय के माहौल से सहज नहीं हो पाते। इसके दो परिणाम सामने आते हैं। एक या तो बच्चा पढ़ाई से बिल्कूल विमुख हो जाता है और दूसरा यह कि बच्चे अपने माँ-बाप और समाज से घृणा करने लगता है। दूसरे परिणाम का कारण यह है कि जब बच्चा अपने विद्यालय की पढ़ाई को समझने लगता है तो उसे अपना समाज गलत नजर आने लगता है। जैसे स्कूलों में यह सिखलाया जाता है कि डोमगिरी अच्छी चीज नहीं है या फिर सुअर, बकरी के बीच रहना श्रेयस्कर नहीं है। दूसरी तरफ उन दलित बच्चों का परिवेश ऐसा ही होता है। ऐसे में उन्हें अपने स्कूल में पढ़ाई जाने वाली बातों और अपने परिवेश में विरोधाभास नजर आने लगता है। यह अनुभव उन्हें खराव प्रवृत्तियों की ओर ढकेलता है। नक्सलवाद, उग्रवाद, आतंकवाद जैसी चीजें इन्हीं स्थितियों का परिणाम है।

स्कूलों में पढ़ाई जाने वाली बातों और अपने परिवेश में विरोधाभास नजर आने लगता है। यह अनुभव उन्हें खराव प्रवृत्तियों की ओर ढकेलता है। नक्सलवाद, उग्रवाद, आतंकवाद जैसी चीजें इन्हीं स्थितियों का परिणाम है।

अब सवाल यह उठाता है कि इन्हें पढ़ाने का आधारभूत तरीका क्या हो, इसके लिए हमें तीन बिन्दुओं पर फोकस करना होगा। पहला लर्निंग स्टाइल, दूसरा परिवेश और तीसरा टिचिंग मेथड। पहले लर्निंग स्टाइल की बात करते हैं। भेंड, बकरी, सुअर, मछली, गाय, जंगल, पेंड, पहाड़ जैसी चीजों के बीच पल रहे बच्चों को हम यदि ये पढ़ायें कि अर्जेंटीना में उद्योग के क्या हालात हैं तो इससे इन बच्चों को क्या मतलब है। ग्रैंड ट्रैंक रोड शेरशाह ने बनवाया था तो वे यह जानना चाहेंगे कि उसमें लगे मजदूरों की क्या दशा थी। वे कहाँ के थे आदि जानने की ललक उनमें ज्यादा होगी। हम ये कहें कि पहाड़ों पर कैसे जीव-जन्तु पाये जाते हैं तो वे इससे ज्यादा जुड़ेंगे। हम परिवेश को लें। यदि हम वैसे बच्चों को यह कहें कि क्लास रूम में बैठ कर कविता याद करें या गिनती याद करें तो वे इस बात से उतने राजी नहीं होंगे। वहीं हम उन्हें यह कहें कि बाहर चर रही गायों की गिनती करके आयें तो वे ऐसा करने को तुरन्त तत्पर होंगे। इसी तरह उन्हें चटाई बुनने जैसे कामों में लगायें तो वे इसमें ज्यादा

शेष पृष्ठ 62 पर

आचार क्रांति के पहले विचार क्रांति होती है

-मुनिश्री लोक प्रकाश 'लोकेश'

अणुव्रत उद्बोधन यात्रा पर उद्बोधन सप्ताह के समापन-

जबतक समाज में सत्ता और संपत्ति का आधिपत्य रहेगा, समस्याएं बनी रहेंगी। मनुष्य की पाशविक प्रवृति को शिक्षा के माध्यम से बदलना होगा और धर्म को प्रतिष्ठित करने के लिए जीवन में नैतिक मूल्यों का समावेश करना होगा। ये उद्गार हैं अणुव्रत धारा के अग्रणी प्रेरक मुनिश्री लोकेश प्रकाश 'लोकेश' जी के, जिसे विगत 2 अक्टूबर को गाँधी जयंती पर अखिल भारतीय अणुव्रत महासमिति द्वारा नई दिल्ली के राजघाट स्थित राष्ट्रीय गाँधी संग्रहालय के सभागार में आयोजित अणुव्रत उद्बोधन यात्रा सप्ताह के समापन समारोह में मुख्य अतिथि के पद से उन्होंने व्यक्त किए।

वर्तमान राजनीति पर मुनिश्री ने चिंता व्यक्त की और कहा कि आचार क्रांति के पहले विचार क्रांति होती है जिसका आज राजनीति सहित सभी क्षेत्रों में अभाव दिखता है।

इसके पूर्व राष्ट्रीय गाँधी संग्रहालय के गाँधीवादी निदेशक डॉ०वाई० पी० आनन्द ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि यह अहिंसा की ही देन है कि समाज आज खड़ा है अन्यथा टूट-फूट कर यह क्षत-विक्षत हो जाता। इस अवसर पर मुनिश्री धर्मेश कुमार ने कहा कि अहिंसा न केवल मस्तिष्क को प्रभावित करती है बल्कि यह दिलों को भी बदल देती है।

प्रारंभ में राजधानी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय के पूर्व प्राध्यापक तथा अ० भा० अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष प्रो० धर्मेन्द्र नाथ अमन ने अहिंसा उद्बोधन यात्रा सप्ताह के उद्येश्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि समाज के हर क्षेत्र में गिरती नैतिकता, गिरते आदर्श, सिद्धांत, परंपराएं, सभ्यताएं और मर्यादाएं हमें यह सोचने को विवश कर रही हैं कि हम बापू के बताए रास्ते पर चलें और उनकी अहिंसा के दर्शन को जन-जन तक पहुँचाएं। इस क्रम में प्रो० अमन ने अणुव्रत कार्यक्रमों की जानकारी देने के क्रम में कहा कि 16 एव 17 नवंबर को नई दिल्ली के दीनदयाल उपाध्याय मार्ग स्थित राजेन्द्र भवन के सभागार में समान धर्मी संस्था **राष्ट्रीय विचार मंच** की ओर से राष्ट्रीय अधिवेशन आयोजित है, जिसमें **आजादी के बाद वैचारिक क्रांति के नए आयाम और हमारा दायित्व** विषय पर चर्चा होगी।

इस अवसर पर फतेहपुर मस्जिद के शाही इमाम मौलवी आजमी ने अपने उद्गार में कहा कि हिंसा से हिंसा को दबाया नहीं जा सकता। धर्म में किसी भी इंसान या जानवर से बदला लेना बहुत बड़ा गुनाह है। अंत में विमल जी के इस गीत ने सुधी श्रोताओं के मानस को झकझोरा-

"हिंसा पीड़ितं विश्व राह महावीर की तकता है
वर्तमान को वर्तमान की आवश्यकता है.."

प्रस्तुति : दीपक कुमार, दिल्ली

.........पृष्ठ 17 का शेष भाग

बदलता रूप रहजनी का

उसके लिए याचककर्ता को छद्म या वास्तविक संस्था से जुड़ा होना आवश्यक है। चंदा वसूलने वाला यदि समर्थ हो, सरकार में गहरी पैठ हो तो देनेवाला स्वयं हीं चिरौरी मिन्नत कर नोटों की गड्डी स्वदेशी या विदेशी मुद्रा में घर या कार्यालय में पहुँचा जाता है। दान, भिक्षा या चंदा देने वाले को बदले में क्या चाहिए, कुछ भी तो नहीं, सिर्फ सौदा पक्का करने का आश्वासन बस। देश को विकास के साथ-साथ उसकी सीमाओं की रक्षा भी आवश्यक है, वैसी स्थिति में जब पड़ोसी घात लगाए बैठा हो। वर्षो पूर्व निर्णय लिया गया था कि रक्षा सौदे में विचौलिए की कोई भूमिका नहीं होगी। ठीक उसी समय से, उसी तर्ज में जिसमें प्रतिबंधित पुस्तकों की बिक्री बढ़ जाती है, प्रतिबंधित वस्तुओं के मूल्य आसमान छूने लगते हैं, बिचौलियों पर प्रतिबंध उनकी संख्या को बढ़ाया ही। कुछ दिन पूर्व देश के साथ-साथ संपूर्ण विश्व ने सभी चेनलों पर देखा कि अरबों के सौदे, लाखों क. लेन-देन नोटों की गड्डियाँ, रखे जाने वाले ड्रावर, वगैरह- वगैरह। दिखाई देने वाले लोग कौन थे? वे जो देश के लिए सोते, देश के लिए जगते जब विपक्ष में होते, स्वदेशी का नारा देते, जब सत्ता में होते विदेशी वस्तुओं के आयात से प्रतिबंध हटाते, देश के लिए जीते, देश के लिए मरते। पक्ष के लोगों ने कहा, कहीं कुछ भी नहीं हुआ, विपक्ष ने कहा, होते हुए देश व संपूर्ण विश्व ने देखा। पक्ष ने कहा जो देखा वह मिथ्या था, इस पर बहस व जाँच करा कर देख ली गई, रकम सच है बाकी सब मिथ्या है! यह रकम दलाली की नहीं, चंदे की है। चंदा पवित्र है, दलाली पाप है। चंदा से दल व दल से चंदा का गौरव बढ़ता है। चंदा और दल दोनों से देश का गौरव बढ़ता है। देश आज चौराहे पर दिशाहीन खड़ा है।

संपर्क- द्वारा श्री गुलजार प्रसाद
रोड नं०-2, मकान नं०-103
श्री कृष्ण नगर, पटना

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, ज०प्र०ना० अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा, पटना पर हिंदी कार्यशाला का आयोजनः एक प्रतिवेदन

प्रस्तुति : दुर्गाशरण मिश्र

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, जयप्रकाश नारायण अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा, पटना के हिन्दी हॉल में दिनांक 23 जुलाई से 25 जुलाई 2002 तक तीन दिवसीय हिंदी कार्यशाला आयोजित हुई। उक्त कार्यशाला का शुभ उद्घाटन दिनांक 23 जुलाई 2002 को पूर्वाह्न ग्यारह बजे मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित, राष्ट्रीय विचार मंच के राष्ट्रीय महासचिव-सह-मंच के त्रैमासिक मुख-पत्र 'विचार दृष्टि' के प्रकाशक-संपादक सिद्धेश्वर तथा निदेशक, विमानपत्तन चन्दन सेन के तदुपरांत, निदेशक, विमानपत्त ने मुख्य अतिथि सिद्धेश्वर का गुलदस्ते से स्वागत किया।

कार्यशाला का दीप प्रज्ज्वलित कर उद्घाटन करते हुए श्री सिद्धेश्वर एवं श्री चन्दन सेन

अपने स्वागत-भाषण में वरिष्ठ अधीक्षक (राजभाषा) ने सिद्धेश्वर के व्यक्तित्व व कृतित्व पर चर्चा करते हुए कहा कि सिद्धेश्वर जैसे कर्मठ व पारदर्शी व्यक्तित्व अब विरल हैं। जीवन और समाज के हर स्तर पर हो रहे मूल्यों के त्वरित ह्रास के इस अराजक दौर में सिद्धेश्वर जैसे तप:पूत व्यक्तित्वों की प्रासंगिकता चिरकाल तक बनी रहेगी।

सिद्धेश्वर के कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए वरिष्ठ अधीक्षक (राजभाषा) ने कहा कि सिद्धेश्वर का हाइकु काव्य संग्रह 'पतझर की सांझ' हाइकु कविता के क्षेत्र में एक नया अध्याय है। इसमें जीवन की इन्द्रधनुषी छटा का मनोहारी चित्रण अत्यंत हृदयग्राही है। हाइकु कविताएँ रह-रहकर पाठक के मन को 'हाइजैक' कर लिया करती हैं।

अपने भाषण में वरिष्ठ सहायक (भंडार) अविनाश तिवारी ने हिन्दी-सेवा को राष्ट्र-सेवा का पर्याय बताते हुए कहा कि समय-समय पर कार्यालय में आयोजित हिंदी कार्यशालाएँ, राजभाषा हिंदी की जड़ों को पुख्ता बनाने का काम किया करती हैं। हिंदी में प्रवीणता प्राप्त तथा हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले कार्यपालकों/ गैर-कार्यपालकों के लिए, हिंदी कार्यशालाएँ वरदान हुआ करती हैं।

क्षेत्रीय मुख्यालय, कोलकाता के प्रबंधक (राजभाषा) शिवशंकर प्रसाद सिंह ने हिन्दी कार्यशाला का सिद्धेश्वर द्वारा सुशोभित करने के प्रति, अपनी हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए कहा कि सिद्धेश्वर जैसे व्यक्तित्वों की उपस्थिति से हिंदी कार्यशाला की महत्ता द्विगुणित हो जाया करती है। ऐसे व्यक्ति प्रेरणा के अजस्र स्रोत हुआ करते हैं।

हिंदी कार्यशाला के आयोजन के औचित्य पर प्रश्न चिन्ह लगाने वाले लोगों को आड़े हाथों लेते हुए श्री सिंह ने कहा कि जो लोग हिंदी कार्यशाला की प्रासंगिकता पर ऊँगली उठाते हैं, वही लोग अँग्रेजी को सरकारी कामकाज की भाषा बनाये रखने के पक्षधर हुआ करते हैं। उनकी नीयत में खोट होता है। जब तक हमलोगों में अँग्रेजी भाषा के प्रति मिथ्या व्यामोह बना रहेगा तब तक हिंदी कार्यशाला और हिंदी दिवस के आयोजन की महत्ता अक्षुण्ण रहेगी।

मुख्य अतिथि सिद्धेश्वर ने राजभाषा हिंदी की उपेक्षा करने वालों पर कुठाराघात

हिन्दी कार्यशाला में बाएँ से-श्री शिवशंकर प्रसाद सिंह, श्री युगल किशोर भगत, श्री सिद्धेश्वर, श्री चन्दन सेन तथा श्री बी.एन. सिंह

सभा को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि श्री सिद्धेश्वर

करते हुए कहा कि राजभाषा हिंदी की दुर्दशा के पीछे भारत के तथाकथित वरिष्ठ राजनेताओं तथा अधिकारियों की साम्राज्यवादी सोच है। ये लोग अंग्रेजों के चाबुक से भारतीय जनता को दहशत में रखना चाहते हैं। इनके लिए हिन्दी अशिक्षितों और गरीब लोगों की भाषा है। उच्च स्तर पर जब तक यह घृणित मानसिकता बनी रहेगी तब तक हिंदी कार्यशाला और हिंदी दिवस की अनिवार्यता बरकरार रहेगी।

हिंदी की सरलता पर चर्चा करते हुए सिद्धेश्वर ने कहा कि भारतीय सरल हैं, अत: उनकी राजभाषा भी सरल है। जिन बाबुओं और हुक्मरानों को हिंदी 'गरल' प्रतीत होती है, वास्तव में वे मन से गैर-भारतीय हैं। उनकी यह गैर-भारतीयता भारत को संवादहीनता की खाई में ढकेल रही है। जबकि हिंदी में सरकारी कामकाज करना अपने सगे-संबंधियों को पत्र लिखने के समान ही सरल है। जरूरत है अपने मन को, स्वयं को भारतीय होने के एहसास से जोड़ने की।

सिद्धेश्वर के संबोधन के पश्चात् निदेशक, विमानपत्तन चन्दन सेन ने अपने कर कमलों से सिद्धेश्वर को शॉल ओढ़ाकर सम्मानित करते हुए, उन्हें पेन सेट अर्पित किया।

अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में निदेशक, विमानपत्तन चन्दन सेन ने कहा कि केन्द्र सरकार के कार्यालयों में हिन्दी कार्यशालाएँ भारत सरकार के राजभाषा विभाग के दिशा-निर्देश के आलोक में आयोजित की जाती हैं। इन तीन दिवसीय कार्यशाला में प्रशिक्षित होने वाले कार्यपालकों/ गैर-कार्यपालकों से अपेक्षा है कि वे प्रशिक्षणोपरांत अपना कार्यालय-कार्य अधिकाधिक राजभाषा हिन्दी में करेंगे।

सिद्धेश्वर के ओजस्वी वक्तव्य के सन्दर्भ में अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए श्री सेन ने कहा कि मुख्य अतिथि के सरल शब्दों के गांभीर्य ने मेरे मन के तारों को झंकृत कर दिया है। सरल शब्दों के प्रयोग से गंभीर-से-गंभीर भाव किस प्रकार छलछला जाते हैं, यह हमलोग मुख्य अतिथि की उद्‌गार में देख चुके हैं। मुझे उम्मीद है कि हमारे प्रशिक्षणार्थी अपने कार्यालयीन कार्य में मुख्य अतिथि के सुझाव पर अमल करेंगे।

उपर्युक्त अतिथियों के अलावा युगल किशोर भगत, उपमहाप्रबंधक (संचार), बी०एन०सिंह, उपमहाप्रबंधक (ए०टी०सी०) शिशिर कुमार सरकार, वरिष्ठ प्रबंधक (ए०टी०सी०), मनोज कुमार, 'विमल', प्रबंधक (भू-प्रबंधन, राजस्व व संपदा) ने भी सभा को संबोधित किया।

धन्यवाद ज्ञापन करते हुए शिवकुमार यादव, वरिष्ठ सहायक (कार्मिक) ने कहा कि मुख्य अतिथि सिद्धेश्वर के अमूल्य मार्गदर्शन से हम कभी उऋण नहीं हो सकते। इनके उद्‌बोधन से हमारी छतंत्री के झंकृत तार सदा हिन्दी का राग अलापते रहेंगे।

श्री यादव ने हिन्दी कार्यशाला उद्‌घाटन समारोह को सफल बनाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले सभी सम्बद्ध कार्यपालकों/ गैर कार्यपालकों के प्रति भी अपनी हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित की।

संपर्क- वरिष्ठ अधीक्षक (राजभाषा)
भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण
ज०प्र०ना०अं० हवाई अड्डा,
पटना-800014

निदेशक श्री चन्दन सेन श्री सिद्धेश्वर को सम्मानित करते हुए

सह सचिवः
(1) अरविंद कुमार,अध्यक्ष, रा०वि०युवा मंच, दूरभाषः 2624480
(2) दीपक कुमार,प्रधान महासचिव, रा.वि.युवामंच, दूर०-6561093
(3) दिनेश कुमार वर्मा, उपाध्यक्ष, रा०वि० युवा मंच, दूरभाषः 2290618
(4) संजय सौम्य, कोषाध्यक्ष, रा०वि०मंच,दूर०-4921393
(5) धनंजय श्रोत्रिय, ई-404, अलकनंदा अपार्टमेंट, रामपुरी, चंद्रनगर, गाजियाबाद

संयुक्त सचिवः
(1) वेद प्रकाश सिंह, महासचिव, विश्व हिंदी समिति, न्यू यार्क, यू०एस०ए०
(2) सुधीर रंजन, नेटवर्किंग इंजीनियर, यू-207, शकरपुर, दिल्ली-92, दूरभाषः 2230652
(3) प्रो० पी०के० प्रेम, जे-41, पांडव नगर, नई दिल्ली-92
(4) शशि भूषण, हार्डवेयर इंजीनियर, ***प्लॉट नं.-102, द्वितीय मंजिल, वैशाली, सैक्टर-1, गाजियाबाद, दूरभाषः 011-4922439***

सदस्यः
(1) अमरनाथ 'अमर' दिल्ली दूरदर्शन, नई दिल्ली दूरभाषः 3363301
(2) सत्येन्द्र शर्मा, 811/8, छतरपुर, नई दिल्ली, दूरभाषः 6801590
(3) अनिल कुमार सिन्हा, भा०आ०से०,निदेशक, पुलिस ब्यूरो, सी०जी०ओ०, कम्प्लेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली
(4) अरुण कुमार भगत, ए-98, अशोक विहार, दिल्ली, दूरभाष- 2624222
(5) प्रो० दिलिप कुमार सिंह, मण्डावली, दिल्ली-92
(6) मनोज कुमार, महासचिव, राष्ट्रीय विचार मंच, बिहार, 'बसेरा' पुरन्दरपुर, पटना-1, दूर०-233179
(7) ईश्वर गोयल, जे०एम०डी० हाऊस, 4378/4बी, अंसारी रोड, दरियागंज,नई दिल्ली, दूरभाष :2264361
(8) सुरेश कुमार, मे० त्रिमूर्ति ज्वेलर्स, चास, बोकारो (झारखण्ड)
(9) राजकुमार सामन्ता, 25/3876, रेगर पुरा,करोलबाग, नई दिल्ली-5, दूरभाषः 5842774

अधिवेशन सलाहकार समिति

(1) जियालाल आर्य, भा०प्र०से०, 23, आई०ए०एस०कॉलोनी, किदवईपुरी, पटना-1, दूरभाषः 521224
(2) प्रो० साधु शरण, 'गीतिका' गली न०-1, आदित्यनगर, पटना-23, दूरभाष : 0612-287204
(3) डॉ० एन० चन्द्रशेखरन नायर, श्रीनिकेतन, लक्ष्मीनगर,पट्टम पालसपोस्ट, तिरुवनंतपुरम-4, दूरभाष : 541355
(4) डॉ० मधु धवन, के-3, अन्नानगर (ई०), चेन्नै-600102
(5) डॉ० बालशौरि रेड्डी, 27, वडिवेलिपुरम, वेस्ट मांबलम, चेन्नै-33, दूरभाष- 4893095
(6) संजय प्रकाश, 271, शेषाद्री प्लाजा, अक्किपेट, मेन रोड, बैंगलोर-53, दूरभाष- 2095255
(7) प्रो० नेहपाल सिंह वर्मा, गीत चाँदनी धाम, यशोदा कुंज, सावरकरनगर, हैदराबाद, दूरभाष : 040-7172457
(8) जितेन्द्र धीर, क्यू-283, गार्डन रीच, कोलकाता-24, दूर०-4692624
(9) मान० न्यायमूर्ति रामसूरत सिंह, एबी-6,पंडारा रोड,दिल्ली,फो. 3342886
(10) प्रो० धमेन्द्र नाथ अमन, अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-2, दूर०-2779740
(11) गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव, रंगपुरा, अहमदाबाद, दूरभाष : 6301021
(12) डॉ० विनोद कुमार, एल-38ए, मालवीयनगर, नई दिल्ली-17, मोबाइल- 9810338726
(13) के०एस०कटियार, 1, हरवंश सिंह मार्केट, संगम विहार, नई दिल्ली, मोबाइल-4041140

विनीत,

यू०सी०अग्रवाल	डॉ०अनिल दत्त मिश्र	सिद्धेश्वर
रा०अध्यक्ष	संयोजक	रा० महासचिव

राष्ट्रीय विचार मंच

प्रस्तावना (Preamble)

मंच समाज के प्रबुद्ध और सक्रिय अंगों को राष्ट्र की मुख्य धारा से जोड़कर स्वस्थ, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक मानदंडों के निर्माण में योगदान देगा तथा संवेदनशीलता एवं गत्यात्मकता प्रदान कर एक ऐसे स्वस्थ एवं नैतिक वातावरण को तैयार करेगा, जिससे समाज के धारक मूल्यों के प्रति आस्था एवं प्रतिबद्धता बढ़े तथा राष्ट्रीयता की भावना जाग्रत हो। मंच देश के विशाल किंतु संकीर्ण दायरों और मान्यताओं के कारण विभाजित, जन-समुदाय को भेद-भाव एवं पूर्वाग्रह से मुक्त कर एक साथ खड़ा करने का प्रयास करेगा, जिससे कि सामाजिक न्याय, सहयोग एवं सौहार्द पर आधारित एक नई राष्ट्रीय चेतना का निर्माण हो सके।

विचार दृष्टि

राष्ट्रीय चेतना की वैचारिक त्रैमासिकी

- दिल्ली से प्रकाशित
- पाँचवें वर्ष की ओर
- *आपके मानसिक खुराक की एक महत्वपूर्ण पत्रिका*
- *आम जन को वाणी देने का प्रयास*
- *रूढ़ियों एवं अंधविश्वासों पर हमला*
- *समाज विरोधी तत्त्वों एवं देशद्रोही ताकतों के खिलाफ एक आवाज*
- *जनमानस को एक खास दिशा में मोड़ने की कोशिश में तत्पर*
- *इसकी सदस्यता ग्रहण कर आप भी अभियान का एक हिस्सा बनें*

टिकाऊ विकास के सवाल पर जोहांसबर्ग शिखर सम्मेलन सम्पन्न

परिणाम- ढाक के वही तीन पात

पश्चिमी से बही आधुनिकता की हवा से जल, जंगल और जमीन पर खतरा बढ़ा। इस खतरे का मुकाबला करने के लिए यों तो पिछले एक दशक से संयुक्त राष्ट्रसंघ के बुलावे पर दुनिया भर के प्रतिनिधि मिलते रहे हैं, किंतु इस बार दक्षिण अफ्रीका के जोहांसबर्ग में 26 अगस्त से 4 सितम्बर 2002 तक संयुक्त राष्ट्रसंघ द्वारा बुलाया गया अब तक का यह सबसे बड़ा सम्मेलन था जिसमें संघ के 100 राष्ट्राध्यक्षों सहित सदस्य देशों के लगभग 60 हजार प्रतिनिधियों ने भाग लिया और टिकाऊ मुद्दे पर विचार-विमर्श किया।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि टिकाऊ विकास का मुद्दा सिर्फ आज के लिए ही नहीं बल्कि भविष्य के वास्ते भी बहुत महत्वपूर्ण है। क्योंकि सारी प्राकृतिक संपदाएं धीरे-धीरे नष्ट हो रही हैं और पर्यावरण बर्बाद होने से पूरी सृष्टि प्रभावित हो रही है। इसलिए सृष्टि को बचाने के लिए विकास के मौजूदा रास्ते को त्यागना होगा। यह, कोई जरूरी नहीं कि इस सम्मेलन की सारी घोषणाओं को साकार रूप दे ही दिए जाएं क्योंकि 10 साल पहले ब्राजील के रियो डी जिनेरो में हुए ऐसे ही सम्मेलन की घोषणाओं के हश्र से हम सभी अवगत हैं। उसके कोई सकारात्मक परिणाम नहीं निकले।

रियो सम्मेलन की तरह जोहांसवर्ग सम्मेलन में भी विकसित और विकासशील देशों के बीच सीधा टकराव इसलिए हुआ कि दोनों के तात्कालिक हित अलग-अलग हैं। हलाकि अब धीरे-धीरे अमीर देशों को भी यह समझ आने लगी है कि गरीबी और पिछड़ापन दुनिया के चाहे जिस किसी भी कोने में हो उसका असर अंततः उन पर भी पड़ना स्वाभाविक है। विकसित देश बड़ी चतुराई से बुनियादी मुद्दों को नजरअंदाज करने की कर रहे हैं। इस सम्मेलन का अहम मुद्दा रहा पर्यावरण तथा औद्योगिक क्षेत्रों में राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक विकास। सम्मेलन में पधारे प्रतिनिधियों एवं राष्ट्राध्यक्षों के विचारों से ऐसा लगा कि व्यापार, ऊर्जा और स्वच्छता जैसे अहम मसलों पर अमीर और गरीब देशों के बीच मतभेद अभी तक बरकरार है। इस सम्मेलन में व्यापारिक एजेंडे सतत विकास के उद्येश्यों पर हावी रहे।

अंततः सम्मेलन में हुई बातचीत के बाद प्रतिनिधियों में पर्यावरण को बचाने और गरीबी का सामना करने के लिए अंतिम कार्ययोजना पर आखिरकार 190 देशों से भी अधिक देशों में सहमति हो गयी। सम्मेलन का मुख्य ध्यान पानी, ऊर्जा, स्वास्थ्य, कृषि और जैव विविधता पर रहा। विदेश मंत्री यशवंत सिन्हा ने भारत का नेतृत्व किया। इस पृथ्वी सम्मेलन में जीवतत्वीय हेरफेर से उत्पादित खाद्य पदार्थों (जीएमफूड्स) को तीसरी दुनिया के देशों में बढ़ावा देने के मुद्दे पर अमरीकी योजना खटाई में पड़ गयी। अमरीका, अफ्रीका देशों की मदद से ऐसे खाद्य पदार्थों को तीसरी दुनिया के देशों में पहुँचाना चाहता था, लेकिन अब तक इसके पक्ष में रहे अफ्रीकी देशों ने अपना रुख बदलते हुए इस सम्मेलन में पर्यावरणवादियों का साथ देकर जीएम फूड्स का विरोध किया।

इस सम्मेलन में एक सौ के करीब राष्ट्राध्यक्षों ने भाग लिया जबकि 1992 के रियो डि जेनेरो सम्मेलन में 130 देशों के राष्ट्राध्यक्ष पहुँचे थे। दुखद यह रहा कि हर मामले में विश्व का अगुआ बनने वाले अमरीकी राष्ट्रपति जॉर्ज बुश ने इस सम्मेलन में शिरकत करने से इनकार कर दिया, जिसके परिणामस्वरूप अनेक राष्ट्राध्यक्षों ने जोहान्सवर्ग की यात्रा रद्द कर दी। जोहान्सवर्ग में जिस कार्य योजना को मंजूरी दी गई वह वायदों का एक पुलिंदा ही अधिक है। हाँ, यह सम्मेलन इस दृष्टि से महत्वपूर्ण कहा जा सकता है कि एक बार पुनः दुनिया का ध्यान विकास की विडंबनाओं और विसंगतियों की ओर गया।

पूरी दुनिया के विभिन्न राष्ट्रों के लगभग 100 प्रमुखों एवं 60 हजार प्रतिनिधियों में से 'नैशनल कैम्पेन ऑन दलित ह्युमन राइट्स' के महासचिव जॉन विंसेंट ही एक मात्र एक ऐसे प्रतिनिधि थे जो भारतीय दलितों का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। श्री विंसेंट ने इस पृथ्वी सम्मेलन में आए प्रतिनिधियों के इस विचार से अपनी सहमति जताई कि जहां जातिवाद और नस्लवाद के नाम पर लड़ी जा रही लड़ाई जीती जा रही है, वहीं उत्तर बनाम दक्षिण, गरीब बनाम अमीर और विकासशील देश बनाम विकसित देश की लड़ाई जोर पकड़ती जा रही है। उनका मानना है कि जातिवाद नस्लवाद से भी ज्यादा बुरा है। भारत में नस्ल के अंदर जातिवाद पैर जमा चुका है। एक ही नस्ल के लोग एक दूसरे की जातियों से घृणा करते हैं। यहाँ भेदभाव वाले जातीय समाज में उसी को ऊपर पहुँचने का मौका मिलता है जो दबंग हो। यहां की सरकार भी भेदभाव की समाप्ति के प्रति गंभीर नहीं है।

कुल मिलाकर देखा जाए तो पृथ्वी सम्मेलन के परिणाम बहुत उत्साहवर्द्धक नहीं रहे हैं। भारतीय विशेषज्ञों का कहना है कि यह सम्मेलन अंतर्राष्ट्रीय

गरीबी और पर्यावरण समस्याओं के ठोस और असरदार हल ढूँढ़ने में नाकाम रहा है क्योंकि विश्व के नेताओं ने समस्याओं पर मंथन तो किया किंतु वे समझौते से मुकरते रहे और विकसित देश पूर्व के समझौते को लेकर दोहरे मापदंड अपना रहे हैं। इस बात की कोई गारंटी नहीं कि जिस किसी बिंदु पर रजामंदी हुई, उस पर अमल भी हो पाएगा। दरअसल विकासशील देश प्रगति के एक ऐसे कुचक्र में फँस गए हैं, जिसकी कमान उनके हाथ में नहीं है। ऐसा तबतक संभव नहीं हो सकता जब तक आत्मनिर्भरता और नीति-स्वातंत्र्य के मोर्चे पर पांव नहीं जमाए जाते। आत्मनिर्भरता हो भी तो कैसे? विकासशील देश आधुनिक विकास की चाह में कई ऐसे समझौते पर हस्ताक्षर कर पहले ही हाथ कटवा चुके हैं। विश्व व्यापार संगठन (डब्लूटीओ) जैसे संगठनों की सदस्यता प्राप्त कर हमने भले ही विश्ववन्धुत्व की पिपंही बजाने में सफलता हासिल कर ली हो, किंतु आत्मनिर्भरता और सतत विकास के समय सिद्ध प्रतिमानों से हाथ धो लिए हैं। सच तो यह है कि विकास के प्रतिमानों को लेकर विकासशील और विकसित देशों के दृष्टिकोणों में उतना ही फर्क है, जितना पूरब और पशि्चम में। पृथ्वी को वे ही बचा सकते हैं, जो पृथ्वी के दर्द को समझते हैं।

35 राष्ट्रों की प्रथम महिलाओं का 11 वाँ सम्मेलन

विगत 25 सितंबर को मैक्सिको सिटी में पूरे अमेरिका महाद्वीप के 35 राष्ट्राध्यक्षों की पत्नियों का 11 वाँ सम्मेलन सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन में अमेरिका की प्रथम महिला लौरा बुश और कनाडा की प्रथम महिला एलिन चैरिन भी शामिल हुई। प्रारंभ में मैक्सिको के राष्ट्रपति विसेंट फोक्स और उनकी पत्नी मारथा शगुन डे फोक्स ने राष्ट्राध्यक्षों की पत्नियों का स्वागत करते हुए निर्धन बच्चों की लड़ाई को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ले जाने की बात कही।

प्रथम महिलाओं के इस 11वें सम्मेलन में लौरा बुश के अतिरिक्त कोलंबिया की लिना मारिया, वेनजुएला की मारिसाबेल रोड्रिग्ज और क्यूबाई महिलाओं के फेडरेशन की महासचिव मारिया योलांडा फेरर भी शामिल हुईं।

लोकेन्द्र नेपाल के नए प्रधानमंत्री

नेपाल के शाही परिवार के वफादार लोकेन्द्र बहादुर चंद के नेतृत्व में नेपाल नरेश ज्ञानेन्द्र द्वारा सात सदस्यीय अंतरिम मंत्रिमंडल का गठन किया गया। नए मंत्रिमंडल में प्रधानमंत्री लोकेन्द्र के साथ नेपाल सद्भावना पार्टी के कार्यवाहक अध्यक्ष बद्री प्रसाद मंडल को उपप्रधान मंत्री बनाया गया है। पूर्व विदेश सचिव नरेन्द्र विक्रम शाह विदेश मंत्री तथा प्रसिद्ध न्यूरो सर्जन डॉ० उपेन्द्र देवकोटा स्वास्थ्य मंत्री होंगे। पूर्व राजदूत बद्री प्रसाद श्रेष्ठ वित्त मंत्री बने हैं। धर्म बहादुर थापा गृहमंत्री होंगे। नवगठित मंत्रिमंडल में नेपाली कांग्रेस, नेपाल कम्यूनिस्ट पार्टी-एमाले, यूनाइटेड फ्रंट, नेपाल वर्कर्स एंड पीजेंट पार्टी, राष्ट्रीय राजतंत्र पार्टी जैसे प्रमुख राजनीतिक दलों को प्रतिनिधित्व नहीं मिला है क्योंकि इन दलों ने कहा है कि जबतक उनकी सलाह से मंत्रिमंडल का गठन नहीं किया जाता तबतक वह इसमें हिस्सा नहीं लेंगे।

वर्खास्त प्रधानमंत्री शेर बहादुर देउबा सहित प्रमुख राजनीतिक दलों ने नयी सरकार की नियुक्ति पर कड़ी प्रतिक्रिया जाहिर करते हुए इसे असंवैधानिक और अलोकतांत्रिक करार दिया है। इससे बहुदलीय प्रणाली कमजोर होगी क्योंकि प्रधानमंत्री और उपप्रधानमंत्री को छोड़ शेष सभी मंत्री गैर राजनीतिक पृष्ठभूमि के हैं।

शुभकामना

यह जानकर प्रसन्नता है कि 'राष्ट्रीय विचार मंच' दिनांक 16/17 नवंबर 2002 को दिल्ली में दो दिवसीय राष्ट्रीय अधिवेशन का आयोजन करने जा रहा है जिसमें देश-विदेश के गणमान्य, विद्वान, विचारक, नेता, साहित्यकार, प्रशासक एवं छात्र भाग लेंगे। इस संगोष्ठी में आजादी के बाद वैचारिक क्रांति के नये आयामों के तहत वर्तमान राष्ट्रीय समस्याओं पर विचारों का आदान-प्रदान होगा जिससे कि राष्ट्रीय एकता की भावना सुदृढ़ और प्रशस्त होगी।

इस मंगलकारी आयोजन की सफलता के लिए दिल्ली की साहित्यिक सांस्कृतिक संस्था 'आस्वाद' अपनी शुभकामना व्यक्त करती है।

5 अक्टूबर 02

संयोजक
'आस्वाद' दिल्ली

जिमी कार्टर को 2002 का नोबेल शांति पुरस्कार

10 दिसंबर को ओस्लो में सम्मान समारोह

जिमी कार्टर

अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति जिमी कार्टर को 2002 का नोबेल शांति पुरस्कार ओस्लो के सिटी हॉल में पुरस्कार के संस्थापक स्वीडिश उद्योगपति अल्फ्रेड नोबेल की पुण्यतिथि 10 दिसंबर को प्रदान किया जाएगा। अंतर्राष्ट्रीय संघर्षों के शांतिपूर्ण समाधान के प्रयासों, लोकतंत्र एवं मानवाधिकारों के विकास और आर्थिक एवं सामाजिक विकास के लिए दशकों तक अथक परिश्रम के लिए उन्हें इस पुरस्कार से नवाजा गया है। अमेरिका में 1977 से 1981 तक राष्ट्रपति रहे कार्टर को 156 उम्मीदवारों में से इस पुरस्कार के लिए चुना गया। पुरस्कार में उन्हें 10 लाख डॉलर दिए जाएंगे। अन्य विषयों के पुरष्कृत विजेता इस प्रकार हैं–

नोबेल पुरस्कार विजेता बाएं से जॉन बी फेन, कोइची तनाका, कुर्ट युथरिच (रसायन शास्त्र) और डा. बरनोन एल स्मिथ, डेनियल केनीमैन (अर्थशास्त्र)।

विषय	पुरस्कृत हस्ताक्षर	उम्र	देश	अनुसंधान कार्य
साहित्य	इमरे कर्टसज			इतिहास की बर्बर मनमर्जी के खिलाफ व्यक्ति के नाजुक अनुभव का भावपूर्ण वर्णन
चिकित्सा	(1) सिडनी ब्रेनर	75	ब्रिटेन	जीन का अंगों के विकास एवं कोशिकाओं की मौत की प्रक्रिया पर प्रभाव
	(1) सरजान सुल्स्टन	60	ब्रिटेन	
	(2) रॉबर्ट होर्विट्का	55	अमेरिका	
भौतिकी	(1) रेमंड डेविस	87	अमेरिका	कास्मिक एक्स-रे स्रोतों की खोज, जिसने ब्रह्मंड को नए सिरे से समझने में मदद दी
	(2) रिकाडो गिआकोनी	...	अमेरिका	
	(3) मसातोषी कोशींबा	76	जापान	
रसायन शास्त्र	(1) जॉन बी फेन	......	अमेरिका	जैविक मैक्रोमालिक्यूल का अध्ययन
	(2) कोइची तनाका	......	जापान	"
	(3) कुर्ट युथरिच	......	स्विट्जरलैंड	"
अर्थशास्त्र	(1) डेनियल काबेमैन	......	अमेरिका	मानवीय फैसलों में मनोविज्ञान का बेहतरीन प्रयोग
	(2) बरनॉन एल स्मिथ	......	इजरायल	

डॉ० सत्य भूषण वर्मा *को अन्तर्राष्ट्रीय हाइकु पुरस्कार*

जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय के पूर्व जापानी भाषा विभागाध्यक्ष एवं प्रोफेसर एमेरिसट्स डॉ० सत्यभूषण वर्मा को जापान का सुप्रतिष्ठित मासाओ का शिकि अन्तर्राष्ट्रीय हाइकु पुरस्कार से सम्मानित करने का निर्णय लिया गया है। दिसम्बर में जापान में दिया जाने वाला यह पुरस्कार भाषा व राष्ट्रीयता से परे विश्व के किसी कवि, समीक्षक या किसी ऐसे व्यक्ति को दिया जाता है, जिसका हाइकु के क्षेत्र में विशेष योगदान रहा हो। डॉ० वर्मा भारत में जापानी भाषा व साहित्य के पहले प्रोफेसर रहे हैं। वे जापान के शैक्षणिक सलाहकार व विजिटिंग प्रोफेसर भी हैं।

उल्लेखनीय है कि 5-7-5 के क्रम में तीन पक्तियों की 17 वर्णों वाली आधुनिक जापानी हाइकु के प्रवर्तक मासाओका शिकि के नाम से दिया जानेवाला यह पुरस्कार 1999 में हुए सम्मेलन में स्थापित किया गया था। शिकि जापानी हाइकु के प्रमुख चार स्तंभों में माने जाते हैं। जापानी विधा से प्रारंभ यह हाइकु कविता अब यहाँ की प्राय: सभी भारतीय भाषाओं में लिखी जा रही है तथा हाइकु की अनेक पत्रिकाएं भी प्रकाशित हो रही हैं, जिनमें अहमदाबाद से डॉ० भगवतशरण अग्रवाल के संपादकत्व में प्रकाशित 'हाइकु भारती' प्रमुख है। विचार दृष्टि परिवार की ओर से डॉ० सत्यभूषण वर्मा को हार्दिक बधाई।

प्रस्तुति: दीपक कुमार, दिल्ली

युवा साहित्यकार वृंदावन में सम्मानित

विगत 25 सितंबर को वृंदावन में भाऊराव देवरस सेवा न्यास की ओर से पं० प्रताप नारायण मिश्र की स्मृति में आयोजित युवा साहित्यकार समारोह-2002 में निम्नलिखित सात युवा साहित्यकारों को प्रशस्ति पत्र, शॉल तथा पाँच हजार रुपये की राशि भेंट कर मुख्य अतिथि एवं वृंदावन के संतश्री विजय कौशल जी महाराज ने सम्मानित किया :-

कृष्ण प्रभाकर उपाध्याय, विजय जोशी, अरुण कुमार भगत, विभांशु वैभव, डॉ० दिनेश चमोला, प्रमोद कुमार शर्मा तथा यू०सी०संतोष।

उल्लेखनीय है कि पत्रकारिता के लिए सम्मानित साहित्यकार अरुण कुमार भगत न केवल राष्ट्रीय विचार मंच के संयुक्त सचिव हैं बल्कि इसके मुख-पत्र '**विचार दृष्टि**' से भी जुड़े हैं। डॉ० भीमराव अंबेदकर विश्वविद्यालय, आगरा के कुलपति गिरीश चन्द्र सक्सेना की अध्यक्षता में आयोजित इस समारोह के मुख्य वक्ता तरुण विजय, संपादक पाञ्जन्य ने इस अवसर पर अपने उद्‌गार व्यक्त किए। मंच एवं विचार दृष्टि परिवार की ओर से सभी सम्मानित युवा साहित्यकार को हार्दिक बधाई।

-अरुण कुमार भगत, वृंदावन से

रचनाकारों से

(1) रचना भेजने के लिए कोई शर्त नहीं है, सभी रचनाकारों का हम हार्दिक स्वागत करते हैं। उदीयमान रचनाकारों को विशेष रूप से प्रोत्साहित किए जाने का प्रयास रहेगा।

(2) राष्ट्रीय भावनाओं पर आधारित तथा वैचारिक रचनाओं को प्राथमिकता दी जाएगी।

(3) रचना एक तरफ/कम्प्यूटर पर कम्पोज्ड अथवा सुवाच्य स्पष्ट लिखी होनी चाहिए।

(4) रचना के अंत में उसके मौलिक अप्रकाशित व अप्रसारित होने के प्रमाण पत्र के साथ रचनाकार, नाम व पूरा पता अवश्य लिखा होना चाहिए।

(5) रचना के साथ पासपोर्ट/स्टाम्प आकार की स्वेत एवं श्याम तस्वीर की दो प्रतियाँ अवश्य संलग्न करें।

(6) प्रकाशित रचनाएँ वापस नहीं की जाती, कृपया उसकी प्रति अवश्य रख लें।

(7) प्रकाशित रचनाओं पर फिलहाल पारिश्रमिक देने की कोई व्यवथा नहीं है, हाँ, रचना प्रकाशित होने पर अंक की प्रति अवश्य भेजी जाऐगी।

(8) किसी भी विधा की गद्य रचनाएं 1500 शब्दों अथवा दो पृष्ठों की मर्यादा में ही स्वीकार्य होंगीं।

(9) समीक्षार्थ पुस्तक की दो प्रतियां भेजना आवश्यक है।

(10) रचनाएं कम्प्यूटर पर कम्पोज्ड कराकर उसे इन्टरनेट पर भेजें जिसका E-mail - vicharbharat@hotmail.com

सम्पादक, विचार दृष्टि
दृष्टि 6, विचार बिहार, यू-207, शकरपुर, विकास मार्ग
दिल्ली-92, दूरभाष: (011) 2230652

2002-03 का कालिदास सम्मान

कन्नड़ कवि चन्द्रशेखर कम्बार को

मध्य प्रदेश सरकार के संस्कृति विभाग ने वर्ष 2002-2003 के प्रतिष्ठित कालिदास सम्मान से प्रख्यात कन्नड कवि चन्द्रशेखर कम्बार को अलंकृत करने का निर्णय लिया गया है। सम्मान के तहत प्रशस्ति पटि्टका के साथ डेढ़ लाख रुपए दिया जाता है।

शासन ने वर्ष 2002-2003 के लिए मैथिलीशरण गुप्त सम्मान से सुपरिचित कवि लेखक और आलोचक विष्णु खरे को, जगन्नाथ आजाद को इकबाल सम्मान से और शरद जोशी सम्मान से प्रयाग शुक्ल को अलंकृत किए जाने का निर्णय भी लिया है। मैथिलीशरण गुप्त सम्मान हिन्दी साहित्य के लिए और इकबाल सम्मान उर्दू साहित्य के लिए प्रतिवर्ष दिया जाता है।

कालिदास सम्मान के लिए चयनित कम्बार कन्नड विश्वविद्यालय, हम्पी के सेवानिवृत्त कुलपति हैं। उनकी ख्याति एक जाने माने कवि, नाटककार और लेखक की है। वे कर्नाटक नाटक अकादमी और राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के अध्यक्ष भी रहे हैं।

साहित्य अकादमी पुरस्कार-2001

विगत 15 अगस्त 2002 को साहित्य अकादमी, नई दिल्ली की ओर से इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में आयोजित सम्मान समारोह में साहित्य अकादमी का भाषा सम्मान निम्नलिखित साहित्यकारों को उनके आगे अंकित भाषा के लिए प्रदान किए गए-

साहित्यकारों का नाम	भाषा
1. डॉ०तुम्मापुड़ी कोटेश्वर राव-	तेलुगु
2.डॉ०टी०वी०वेकटाचल शास्त्री-	कन्नड़
3.श्री मोती बी०ए०-	भोजपुरी
4.मो०इसरायल असर गोजरी	कश्मीरी

इसके अतिरिक्त 22 अनुवादकों को अनुवाद पुरस्कारों से विभूषित किया गया। हांपी विश्वविद्यालय के कुलपति एवं कन्नड़ कवि चन्द्रशेखर कांबर इस समारोह के मुख्य अतिथि थे। प्रारंभ में अतिथियों एवं पुरस्कृत साहित्यकारों का स्वागत किया अकादमी के सचिव के० सच्चिदानन्द ने और अंत में उपाध्यक्ष गोपीचंद नारंग ने आभार व्यक्त किया। 20 अगस्त को साहित्य अकादमी के रवीन्द्र भवन में पुरस्कृत विद्वानों ने अपने विचार व्यक्त किए।

लखनऊ के सिटी मांटेसरी स्कूल को

यूनेस्को शांति शिक्षा पुरस्कार

विगत 23 सितंबर को फ्रांस की राजधानी पेरिस में आयोजित एक समारोह में लखनऊ स्थित सिटी मांटेसरी स्कूल को शिक्षा जगत के सर्वोच्च अंतर्राष्ट्रीय सम्मान यूनेस्को शांति शिक्षा पुरस्कार 2002 से सम्मानित किया गया। यूनेस्को के महानिदेशक चीरो मात सुरा ने स्कूल के संस्थापक प्रबंधक जगदीश गाँधी और संस्थापक संचालिका डॉ० भारती गाँधी को पुरस्कार स्वरूप प्रशस्ति पत्र एवं 30 हजार डॉलर की धनराशि प्रदान की। इस समारोह में विश्व भर में शांति के लिए प्रयासरत संस्थाओं के प्रतिनिधियों सहित भारत के मानव संसाधन विकास मंत्री डॉ० मुरली मनोहर जोशी ने भी भाग लिया।

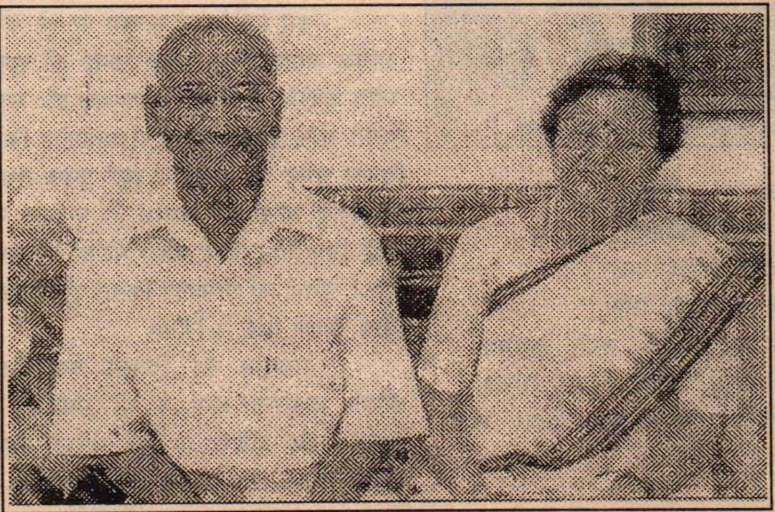

वर्ष 1981 में प्रारंभ यूनेस्को शांति शिक्षा पुरस्कार प्रतिवर्ष किसी ऐसी संस्था या व्यक्ति को दिया जाता है, जिसने शांति स्थापना की शिक्षा के लिए संसार में सबसे ज्यादा कार्य किया हो। भारत में यह पुरस्कार वर्ष 1985 में जनरल रिखी तथा वर्ष 1992 में मदर टेरसा को प्रदान किया गया था। उल्लेखनीय है कि इस वर्ष लखनऊ के सिटी मांटेसरी स्कूल को यह पुरस्कार इसलिए दिया गया क्योंकि पिछले 40 वर्षों से इस स्कूल के बच्चों में शिक्षा के माध्यम से सास्वत मूल्यों, विश्व शांति एवं विश्व एकता को विकसित करने का ऐसे विषम समय में प्रयास कर रहा है, जबकि इन जीवन मूल्यों एवं सिद्धांतों का विकास करना एक चुनौती है।

प्रस्तुति: दीपक कुमार

बिहार सरकार के राजभाषा विभाग द्वारा

उदय राज सिंह को 'राजेन्द्र शिखर' सम्मान

पिछले कई वर्षों से विवाद के घेरे में पड़ा बिहार सरकार के राजभाषा विभाग का हिंदी-उर्दू-सेवी सम्मान पुरस्कार का वितरण-समारोह अंततः 14 सितंबर 2002 को सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर राजभाषा विभाग द्वारा एक दर्जन साहित्यकारों को सम्मानित किया गया। सम्मान पानेवालों में राजा राधिकारमण प्र० सिंह के वयोवृद्ध सुपुत्र उदयराज सिंह को डॉ० राजेन्द्र प्रसाद शिखर सम्मान से नवाजा गया। इस सम्मान के तहत उन्हें एक लाख इकावन हजार रुपये सहित स्मृति चिन्ह तथा एक शॉल बिहार सरकार के राजभाषा मंत्री राम पदारथ महतो द्वारा भेंट किया गया। इस अवसर पर अम्बेदकर मिशन, पटना के संस्थापक बुद्धशरण हंस को एक लाख पचीस हजार का बाबा साहब भीमराव अम्बेदकर पुरस्कार, कथाकार मधुकर सिंह को एक लाख रुपये का जननायक कर्पूरी ठाकुर पुरस्कार तथा डॉ० श्याम सुन्दर घोष को एक लाख रुपये का बी० पी० मंडल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इक्कावन-इक्कावन हजार रुपये का नागार्जुन, फणीश्वर नाथ 'रेणु' पुरस्कार, तथा राष्ट्रकवि दिनकर पुरस्कार क्रमशः डॉ० नन्द किशोर राय नन्दन, डॉ० जवाहर सिंह तथा राजेन्द्र प्र० सिंह को प्रदान किया गया। पचीस-पचीस हजार रुपये के महादेवी वर्मा तथा बाबू गंगा शरण सिंह पुरस्कार से डॉ० गोविन्द राजन को नवाजा गया। पन्द्रह हजार रुपये के निम्नलिखित पुरस्कारों से उसके सामने अंकित साहित्यकारों को सम्मानित किया गया--

विद्याकर कवि पुरस्कार-डॉ० एन० रवीन्द्र नाथ

विद्यापति पुरस्कार - डॉ० लखी प्र० श्रीवास्तव
मोहन लाल महतो वियोगी- हरीन्द्र विद्यार्थी
भिखारी ठाकुर पुरस्कार - हीरा प्रसाद ठाकुर
डॉ० ग्रियर्सन पुरस्कार - डॉ० रामप्रवेश सिंह
डॉ० फादर कामिल बुल्के पुरस्कार - डॉ० नजीर मुहम्मद

प्रस्तुति : शाहिद जमील, प्रचार सचिव,
राष्ट्रीय विचार मंच, बिहार, पटना

चेन्नई के डॉ० मधु धवन को एक्सीलेंस ऑफ इंडिया अवार्ड

आर्थिक विकास और राष्ट्रीय एकता पर संगोष्ठी

विगत 27 सितंबर को नई दिल्ली के विश्व युवा केन्द्र के सभागार में **फ्रेंडशिप फोरम ऑफ इंडिया** की ओर से आयोजित

"आर्थिक विकास और राष्ट्रीय एकता" विषय पर आयोजित संगोष्ठी के अवसर पर भारत के पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त जी०वी०जी० कृष्णमूर्ति ने देश को आर्थिक रूप से सक्षम बताते हुए कहा कि देश में सांस्कृतिक एकता और राष्ट्रवाद ही विकास का ठोस मार्ग है। किसी भी राष्ट्र के लिए आजादी को सुरक्षित रखना वहाँ के नागरिकों का परम कर्तव्य है और राष्ट्र के प्रति सम्मान एवं वफादारी ही वे तथ्य हैं जिसके द्वारा आजादी की रक्षा की जा सकती है।

इसके पूर्व समारोह के मुख्य अतिथि तथा ऊत्तर प्रदेश के पूर्व राज्यपाल डॉ० सत्यनारायण रेड्डी ने कहा कि राष्ट्र की उन्नति के लिए छोटे-बड़े सभी कार्यों को बड़ी ईमानदारी और सच्चाई से की जानी चाहिए। जाति, धर्म और संप्रदाय के नाम जब हम बटेंगे तो देश बर्बाद होगा।

इस समारोह के अवसर पर पूरे भारत के लगभग एक सौ से अधिक समाजसेवियों सहित चेन्नई की सुपरिचित हस्ताक्षर एवं संत स्ट्रेला कॉलेज की हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ० मधु धवन को एक्सीलेंस एंड ग्लोरी ऑफ इंडिया अवार्ड से सम्मानित किया गया। डॉ० मधु संप्रति **विचार दृष्टि** की चेन्नई में ब्यूरो प्रमुख तथा राष्ट्रीय विचार मंच की तमिलनाडु शाखा की अध्यक्ष हैं। पुरस्कार स्वरूप एक प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिन्ह तथा गोल्ड मेडल भेंटकर श्री कृष्णमूर्ति एवं डॉ० रेड्डी ने समाज सेवियों को सम्मानित किया। पूरे कार्यक्रम का समन्वय फोरम के सुरेन्द्र गोपाल वाही ने किया।

समारोह को दिल्ली नगर निगम की पूर्व महापौर श्रीमती शकुंतला आर्य ने भी संबोधित किया। समारोह में दी टाइम्स ऑफ इंडिया के पूर्व वरिष्ठ पत्रकार जितेन्द्र सिंह तथा राष्ट्रीय विचार मंच के राष्ट्रीय महासचिव सिद्धेश्वर भी उपस्थित थे।

- सोनी, दिल्ली से

दिल्ली विधानसभाध्यक्ष द्वारा विश्व कीर्तिमान स्थापित

चौधरी प्रेम सिंह अमरीका में सम्मानित

दिल्ली विधानसभा के अध्यक्ष चौधरी प्रेम सिंह ने पिछले 45 वर्षों से लगातार चुनाव जीतकर विश्व कीर्तिमान स्थापित किया है। जनता के निर्वाचित प्रतिनिधि के रूप में लंबी अवधि तक स्थापित रहने की सफलता के लिए संयुक्त राज्य अमरीका के न्यूजर्सी राज्य की विधानसभा में एक प्रस्ताव पारित कर चौधरी प्रेम सिंह का अभिनंदन किया गया। उल्लेखनीय है कि अमरीका की किसी भी विधानसभा द्वारा इस तरह का सम्मान उसके अधिवेशन में पहली बार किसी भारतीय को प्रदान किया गया है। न्यूजर्सी की विधानसभा ने यह प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किया और उसे वहाँ के अध्यक्ष एल०बी०ओ० साइरस व विधान सभा सचिव कीस्टन रिबे ने हस्ताक्षर करके कहा कि चौ० प्रेम सिंह दुनिया के सबसे लंबे समय तक चुने जाते रहे हैं और जनता की सेवा करके उल्लेखनीय योगदान दिया है जो पूरे विश्व के चुने हुए प्रतिनिधियों के लिए आदर्श हैं।

सच कहा जाए तो भारतीय राजनीतिक दलों और उसके नेताओं की नैतिकता में जिस तेजी से गिरावट आ रही है, जनप्रतिनिधि अपने दायित्व के निर्वहन में जिस प्रकार अक्षम रह रहे हैं तथा उनके आचरण और संसद तथा विधान मण्डलों में उनके व्यवहार पर जिस प्रकार उँगलियाँ उठ रही हैं उसके मद्देनजर चौधरी प्रेम सिंह की निष्ठा, ईमानदारी, उनकी सौम्यता और सदाशयता से यहाँ के नेताओं को सबक लेने की जरूरत है, उनके त्याग और सेवा भाव को आदर्श मानकर उनके रास्ते पर चलने की जरूरत है। तभी जन प्रतिनिधियों की प्रतिष्ठा बच सकती है, अन्यथा जनता के बीच जिस प्रकार दिन-व-दिन उनकी छबि धुमिल होती जा रही है उससे लोकतंत्र भी खतरे मे पड़ता दिखाई दे रहा है। ऐसी विषम परिस्थिति में दिल्ली विधानसभाध्यक्ष चौ० प्रेम सिंह के व्यक्तित्व एवं कृतित्व प्रेरणादायक हैं। चौधरी साहब को विचार दृष्टि परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

–सुधीर रंजन, दिल्ली से

MAHESH HOMOEOPATHIC LABORATORY

&

GERMAN HOMOEO STORES

Saket plaza, Jamal Road,
Patna - 800001
Ph: (0612) 238292 (O)
674041 (R)

Offers a wide range of mother of mother Tinchers, Dillutin Biochemic Tablet patents, Globels

Dr Mahesh Prasad
D.M.S. (patna)

Dr. Arun kumar
D.H.M.S (patna)
Spcialist in chronic Diseases

साभार-स्वीकार

- **राष्ट्रभाषा :** (जुलाई 2002)
  संपादक : प्रो० अनंतराम त्रिपाठी
  कार्यालय : राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा-442003, नागपुर
- **साहित्य परिक्रमा :** (जुलाई-सितंबर, 2002)
  संपादक : योगेन्द्र गोस्वामी
  प्रबंध संपादक : जीत सिंह 'जीत'
  व्यवस्थापकीय कार्यालय : ए-153, अशोक विहार,फेज-2,नई दिल्ली-52
- **केरल हिंदी साहित्य अकादमी**
  शोध-पत्रिका : (जुलाई-सितंबर,2002)
  संपादक : डॉ० एन० चंद्रशेखरन नायर
  कार्यालय : श्रीनिकेतन, लक्ष्मीनगर, पट्टमपालस पोस्ट,तिरूवनंतपुरम-695004
- **अलका मागधी :** (अगस्त, 2002)
  संपादक : डॉ० अभिमन्यु प्र० मौर्य
  कार्यालय : राम लखन महतो रोड, पुराना जक्कनपुर, पटना-1
- **शब्द :** (अगस्त, 2002)
  संपादक : आरसी यादव
  कार्यालय : सी० 1104, इंदिरानगर, लखनऊ-226016
- **गोलकोण्डा दर्पण :** (सितंबर, 2002)
  संपादक : गोविन्द अक्षय
  कार्यालय : 13-6-411/2, रामसिंहपुरा, कारवान, हैदराबाद-500067
- **नालंदा दर्पण :** (जून, 2002)
  संपादक : डॉ० स्वर्ण किरण
  कार्यालय : सोहसराय, नालंदा (बिहार)
- **हिंदी कवयित्रियों की हाइकु काव्य साधना** (जुलाई, 2002)
  लेखक : डॉ० भगवत शरण अग्रवाल
  कार्यालय : साहित्य भारती, 396, सरस्वती नगर, अहमदाबाद-15
- **जिन खोजा तिन पाइयां :**
- **मूल्य मुस्कान का :**
  रचनाकार : मुनि लोक प्रकाश 'लोकेश'
  अणुव्रत भवन, दीन दयाल उपाध्याय मार्ग, दिल्ली-2
- **भारत को भारत रहने दो :**
  रचनाकार : राजेश 'चेतन'
  126, मॉडर्न अपार्टमेंट्स सेक्टर-15, प्लॉट-5 रोहिणी, दिल्ली-85
- **दी इंडियन पुलिस जर्नल :** (अक्टूबर-दिसंबर, 2001)
  संपादक : पी० एन० खुराना
  सौजन्य : अनिल कुमार सिन्हा
  कार्यालय : ब्यूरो ऑफ पुलिस रिसर्च एंड डेबलममेंट, गृह मंत्रालय, तीसरी एवं चौथी मंजिल, ब्लॉक-11, सीजीओ कम्प्लेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली-3
- **केरल हिंदी साहित्य अकादमी का इतिहास**
  लेखक : जी० आर० मधु
  प्रकाशक : केरल हिंदी साहित्य अकादमी, श्री निकेतन, लक्ष्मीनगर, पट्टमपालस पोस्ट, तिरूवनंतपुरम-695004
- **अंचल भारती :** (जनवरी-जून, 2002)
  संपादक : डॉ० जयनाथ मणि त्रिपाठी
  कार्यालय : 5/53, देवरिया रामनाथ, देवरिया-274001
- **रैन बसेरा :** (सितंबर, 2002)
  प्रधान संपादक : डॉ० जयसिंह 'व्यथित'
  प्रबंध संपादक : डॉ० विरेन्द्र सिंह ठाकुर
  कार्यालय : गुजरात हिंदी विद्यापीठ, कमलेश पार्क, महेश्वरी नगर, ओढब, अहमदाबाद - 382415
- **विश्व-विवेक :** (सितंबर, 2001)
  प्रधान संपादक : प्रो० भुदेव शर्मा
  कार्यालय : 4836 Purds Dr.,Metairie, L.A.-70003, 504-885-6932
- अधर्य : हाइकु काव्य- संग्रह
  हाइकुकार : डॉ० भगवत शरण अग्रवाल
  396, सरस्वती नगर, अहमदाबाद - 15
- प्रोफेसर (उपन्यास)
  लेखक : डॉ० बालशौरि रेड्डी
  प्रकाशक : अमित प्रकाशन
  के० बी०-97, कविनगर, गाजियाबाद-201002
- डॉ० एन० चंद्रशेखरन नायर सप्तति ग्रंथ
  संपादन : डॉ० चंद्रशेखरन नायर
  सप्तति - समारोह समिति, तिरुवनंतपुरम
- तुलसी भूषण : आचार्य रसरूप
  संपादक : डॉ० पूर्णमासी राय
  ललित प्रकाशन, ई-137, गणेश नगर, दिल्ली-92
- काँटों का वन (हाइकु संग्रह)
  कवयित्री : डॉ० विद्याविन्दु सिंह
  45, गोखले विहार मार्ग लखनऊ,
  प्रकाशक : अमित प्रकाशन, के०बी०-97, कविनगर, गाजियाबाद-201002
- सुखिया सब संसार है
  कवयित्री : अर्चना त्रिपाठी
  केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, वेस्ट ब्लॉक-7, आर० के० पुरम, नई दिल्ली-66
  प्रकाशक : ललित प्रकाशन, दिल्ली-92
- धरती का पुत्र : ऐतिहासिक उपन्यास
  उपन्यासकार : डॉ० बालशौरि रेड्डी
  प्रकाशक : अमित प्रकाशन, गाजियाबाद
- आग और आन्दोलन :
  रचनाकार : मोहन दास नैमिशराय
  बुद्ध विहार, अम्बेडकर भवन, नई दिल्ली-55

अभिनेता को पुनः रंगमंच के केन्द्र में लाया जाए

–देवेन्द्र राज अंकुर

कला सृजन अकादमी की ओर से दिनांक 27 मई 2002 का जीवनानंद सभागार में आधुनिक हिन्दी नाटक के शिखर पुरुष मोहन राकेश की स्मृति में 'मोहन राकेश व्याख्यानमाला' के अंतगर्त 'इक्कीसवीं सदी में रंगमंच की चुनौतियां' पर प्रख्यात नाट्य निर्देशक एवं राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के निदेशक देवेन्द्र राज अंकुर ने कहा कि हिन्दी रंगमंच पर ये आक्षेप लगाए जाते हैं कि इसकी कोई नियमित परंपरा नहीं है एवं हिन्दी में अच्छे नाटकों का नितांत अभाव है। ये आक्षेप सिर्फ हिन्दी रंगमंच के ऊपर हीं क्यों लगाए जाते है? आज हिन्दी-रंगमंच अन्य भारतीय भाषाओं के रंगमंच से आगे है। हिन्दी रंगमंच ने शून्य से शुरू होकर जो ऊंचाई प्राप्त की है वह सराहनीय है। हिन्दी-रंगमंच आज भी अन्य भारतीय भाषाओं के रंगमंच से कहीं ज्यादा प्रयोगशील है। वह दूसरी भाषाओं के रंगमंच के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उन्होंने 21वीं सदी में रंगमंच की चुनौतियां के संबंध में कहा कि हिन्दी रंगकर्म या अन्य भाषाओं के रंगकर्म जिसे हम व्यवहारिक रंगकर्म के रूप में जानते हैं उसमें विचार-विमर्श की परंपरा, लेखन की परंपरा और एसिमिलेशन (समांगीकरण) की परंपरा विकसित करने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि हिन्दी-रंगमंच में विचार-विमर्श की जो भी कोशिश होती रही है वह लिखनेवालों, अध्यापकों या आलोचकों की ओर से ही होते हैं, रंगकर्मियों की ओर से नहीं हुई है। यदि रंगकर्मियों की ओर से विचार-विमर्श और लेखन की शुरुआत की गई होती तो हिन्दी रंगमंच आज काफी आगे निकल गया होता। मोहन राकेश ने 'लहरों के राजहंस' में निर्देशक का सहयोग लिया था। निर्देशक जैसे-जैसे 'क्रिएट' करते गया नाटककार उसके अनुरुप लेखन में तब्दीली लाते गया। नाटककार और निर्देशक की रचना-प्रक्रिया एक हो गई। इसलिए एक सशक्त नाटक की प्रस्तुति हुई।

उन्होंने आगे कहा कि 21वीं सदी में रंगमंच में क्या-क्या परिवर्तन आने की संभावना है इस पर विद्वानों और आलोचकों की अलग-अलग राय है। एक मत यह है कि 21वहीं सदी में रंगमंच धीरे-धीरे पूरी तरह आंगिक हो जायेगा। नाटक-गति, मुद्रा और संगीत पर आधारित हो जायेगा। संवाद कम से कम हो जायेगा या यों कहें कि संवाद छूटने की स्थिति में होगा। दूसरा मत यह है कि नाटक को जब अन्य संचार माध्यमों के समानांतर रहना है तो क्यों न वह भी उसी सिद्धत के साथ उसका मुकाबला करे और अन्य चक्षुष-माध्यम की तरह तामझाम बाला हो जाए। उन्होंने कहा कि मेरा दोनों ही मतों से असहमति है। दोनों ही विकल्पों में रंगमंच के सबसे बड़े तत्व 'शब्द' की उपेक्षा हुई है। नाटक के 3000 वर्षों के इतिहास में - कहीं भी निर्देशक या अभिनेता के नामों का उल्लेख नहीं मिलता है। सिर्फ नाटकों के नाम मिलते हैं क्योंकि 'शब्द ही स्थायी है। उन्होंने आगे कहा कि हम टी०वी० या इलेक्ट्रोनिक माध्यमों में जो कुछ देखते हैं वह कुछ दिनों के बाद भूल जाते हैं लेकिन नाटकों में जो कुछ देखते हैं वह याद रहता है। भले ही लोग नाटक को भी क्षणभंगुर माध्यम माने लेकिन नाटक शब्द अभिनेता के माध्यम से जीवतंता को ग्रहण करती है। इसलिए नाटक जीवंत होता है क्योंकि नाटक में हम अभिनेता को महसूस कर सकते हैं। अभिनेता को भी दर्शकों की प्रतिक्रिया तत्काल मिल जाती है। ऐसा सिर्फ रंगमंच में हीं संभव है। नाटक 21वीं सदी का हो या 22वीं सदी का हमें रंगमंच की ताकत को पहचानना होगा। जिन संचार-माध्यमों से हम खौंफ खा रहे हैं उसकी स्थिति स्वंय ही डंवाडोल है। हिन्दी में 90 के दशक के बाद जितनी भी लघु-पत्रिकाएँ निकली हैं वे नए रूप में अपनी नयी पहचान बना रही हैं। पत्रिकाओं में लगातार सार्थक लेखन से साक्षात्कार हो रहा है। शायद संचार-माध्यमों ने जो चुनौती दी है, उससे उन्होंने 'शब्द' को पुनः जीवित कर लिया है। 'शब्द' का सबसे बड़ा काम है- स्पेश (जगह) छोड़ने का काम। इलेक्ट्रोनिक संचार-माध्यम में दर्शकों के लिए सबकुछ को स्प्रैड(फैलान) करने का जो प्रयोग हुआ है उससे मजा जाता रहा है। दर्शकों को अपनी ओर से समझने का प्रयास करना ही नहीं पड़ता है। आज से 30-40 वर्ष पहले के नाटक कहने को यर्थाथवादी थे लेकिन सांकेतिक ढंग से चीजों को प्रस्तुत किया जाता था। लेकिन आज का नाटक कहने को सांकेतिक हैं लेकिन उसमें सब कुछ दर्शकों को बता देनी की अतुरता है। मैं समझता हूँ कि भविष्य के रंगमंच को भी इसके बारे में सोचना चाहिए।

उन्होंने आगे कहा कि पिछले 150 सालों में रंगमंच में 'डिजाइनिंग' का तत्व बढ़ा है। पहले बिना तामझाम के नाटकों का मंचन दर्शकों के सामने हो जाया करता था। आज से 110 वर्ष पहले फिल्में आईं। 50 वर्ष पहले दूरदर्शन आया। दृश्य माध्यम में डिजाइन के तत्व निरंतर हॉवी होता चला गया है जिसके कारण रंगमंच भी निरंतर तकनीकी में उलझता चला गया है। नाटक में अभिनेता जो सबसे महत्वपूर्ण था, वह पीछे छूटता चला गया। आज रंगमंच में निर्देशक ज्यादा महत्वपूर्ण हो गया है। अभिनेता-जो नाटक में सबसे ज्यादा महत्व

का था वह पीछे छूटता चला गया। अभिनेता के लिए रंगमंच में कोई जगह हीं नहीं बची है। यह विचारणीय मुद्दा है कि अभिनेता को पुन: रंगमंच के केन्द्र में कैसे लाया जाए? आज अभिनेता बहुत आलसी हो गया है जबकि निर्देशक बहुत ही तेज-तर्रार है। वह पढ़ने-लिखने में विश्वास करता है। वह विचार-विमर्श करता रहा है। इसके कारण, निर्देशक, अभिनेता यहां तक कि नाटककार को भी छोड़कर 'राज' कर रहा है। आज नाटकों पर जो भी सेमिनार या गोष्ठियां होती- हैं उसमें प्राय: आलोचक और निर्देशक ही भाग लेते हैं। कभी-कभी नाटकाकारों को भी बुला लिया जाता है। लेकिन अभिनेताओं को तो शायद ही बुलाया जाता है। त्रासद स्थिति यह है कि निर्देशक ही नाटक में सारे निर्णय ले रहे हैं। अभिनेताओं को भी इसमें शामिल किए जाने की आवश्यकता है।

उन्होंने 'लोक-रंगमंच' पर बोलते हुए कहा कि पिछले कुछ वर्षों से लोक रंगमंच का बड़ा जोर है परंतु इस रंगमंच में अभिनय करनेवालों के लिए करने के लिए कुछ भी होता नहीं हैं। इसलिए आज फिर से 60 और 70 के दशक के नाटकों का मंचन हो रहा है। 'आषाठ के एक दिन' और 'रवामोश' जैसे नाटक आज भी प्रासंगिक हैं। लोग नाटकों में लोक-तत्व की बात करते हैं। क्या इन नाटकों में लोकतत्व नहीं है? ऐसा क्यों मान लिया गया है कि गांवों में जो कुछ है, वहीं लोक-तत्व है और महानगरों और नगरों में रहने वाले लोग लोकतत्व से कट गए हैं। महानगरों और नगरों में भी अपनी परंपराएं हैं। अत: सिर्फ गांवों की प्ररंपरा को ही परंपरा मानना उचित नहीं है। हमें उन चीजों को पकड़ना चाहिए जो सार्थक है-चाहे वह रंगमंच हो, शिक्षा हो या विचार।

उन्होंने अंत में कहा कि 21वीं सदी में चुनौती रंगमंच की नहीं है, जो लोग इस माध्यम में काम कर रहे हैं उन्हें यह जबाव ढूंढ़ना है कि वे इस माध्यम में क्यों हैं?

अध्यक्षीय भाषण में- मोहन राकेश के नाटकों का अंतरंग निर्देशक एवं संगीत नाटक अकादमी के अध्यक्ष श्यामनंद जलान ने कहा कि मोहन राकेश पर व्याख्यानमाला की शुरुआत एक अच्छी शुरुआत है। हिन्दी रंगमंच पर मोहन राकेश का प्रदुर्भाव ऐसे समय में हुआ जब हिन्दी में साहित्यिक नाटकों को नहीं खेला जा रहा था। रामकुमार वर्मा, जयशंकर प्रसाद के नाटकों को पठनीय नाटक समझे जाते थे। उन्होंने इस बात पर जोर देते हुए कहा कि नाटक में अभिनेता और शब्द महत्वपूर्ण है। भव्यता रंगमंच का विषय वस्तु नहीं हो सकता है और 21वीं सदी में अभिनेता का जीवंत अभिनय ही रंगमंच को जिंदा रख सकेगा।

विषय-प्रवर्तन करते हुए कला सृजन अकादमी के सचिव एवं रंगकर्मी मृत्युंजय ने भी कहा था कि अभिनय करने वाले लोग नैाटक में शारीरिक श्रमिक की तरह काम करते हैं इसलिए वे साहित्य और विचार से कटे हैं। 21वीं सदी में अभिनय करने वाले को भी वैचारिक रूप से प्रबुद्ध होना होगा। स्वागत भाषण संस्था के अध्यक्ष माणिक बच्छावत तथा धन्यवाद ज्ञापन संस्कृतिकर्मी डॉ० आशुतोष ने किया था।

प्रस्तुति-राज्य वर्द्धन

संपर्क: 2/एल, बेडियाडागा फर्स्ट लेन, कोलकाता-39

पटना मेडिकल रिहैवलिटेशन क्लिनिक

मखनियाँ कुआँ रोड, पटना-4

मोबाइल-9835095988

सिन्हा फिजियोथेरापी क्लिनिक

लक्ष्मी नर्सिग होम कम्प्लेक्स, पश्चिमी बोरिंग केनाल रोड

ग़ंजापुर के निकट

डॉ० परमानन्द प्र०सिंह

BBC. DDT (PAT), SGR. P. (Cal)

कश्मीर में लोकतंत्र की जीत और आतंक की हार

आतंकवादियों की धमकियों एवं बहिष्कार को धता बताते हुए जम्मू-कश्मीर विधान सभा की 87 सीटों के लिए सम्पन्न चुनाव में राज्य के कुल 60 लाख मतदाताओं में से करीब 27 लाख ने अपने मत का प्रयोग कर यह साबित कर दिया कि उन्हें भारतीय लोकतंत्र में विश्वास है। आतंक के साए में औसतन 44 प्रतिशत लोगों द्वारा सड़क पर उतरना अपने आप में एक बड़ी उपलब्धि है। इसे 'बुलेट' पर 'बैलेट' की जीत कहना सार्थक होगा। लोकतांत्रिक प्रक्रिया में कश्मीरवासियों की आस्था इस बात का प्रतीक है कि उन्हें अमन पंसद है और वे राष्ट्र की मुख्य धारा से जुड़ना चाहते हैं तथा लोकतांत्रिक तरीके से विकास के रास्ते पर आगे बढ़ना चाहते हैं।

कश्मीर में चुनाव स्वतंत्र और निष्पक्ष हुए हैं, इसकी सराहना देश-विदेश के सभी लोगों ने किया। शेख अब्दुल्ला खानदान के एक मात्र वारिस और मुख्य मंत्री पद के प्रबल दावेदार उमर अब्दुल्ला की हार भी इसका ज्वलंत प्रमाण है। यही नहीं फारूक अब्दुल्ला के भाई मो० कमाल और डॉ० कर्ण सिंह के सुपुत्र श्री अजातशत्रु सिंह सहित फारूक मंत्रिमंडल के ऐसे कई सदस्यों को पराजित होना पड़ा है जो कश्मीर में हो रहे कारनामें में भागीदार रहे। चुनावी प्रक्रिया के प्रति लोगों में बढ़ती चाहत का इससे बड़ा प्रमाण और क्या हो सकता है कि इसकी वजह से हुर्रियत क्रांफ्रेस में फूट पड़ गयी। सच कहा जाए तो पाक प्रायोजित आतंकवाद को कश्मीरी जनता ने करारा जवाब दिया है। कश्मीर की आम जनता न तो आजादी चाहती है और न ही पाकिस्तान के साथ रहना चाहती है, यह इस चुनाव से स्पष्ट संकेत मिलता है। कश्मीर का बच्चा-बच्चा जानता है कि पाक अधिकृत कश्मीर की आर्थिक स्थिति अत्यंत दयनीय है।

नयी सरकार के सामने राज्य में आतंकवाद की समाप्ति और अमन की बहाली करना, सामाजिक आर्थिक विकास, बेरोजगारी और भ्रष्टाचार पर काबू पाना तथा सत्ता का पंचायत स्तर तक विकेन्द्रीकरण करना प्रमुख चुनौतियाँ होंगी। अगर नयी सरकार कश्मीरी जनता के जख्मों पर मरहम लगाएगी तो हिंसा में कमी आएगी। देश के विभिन्न राज्यों एवं क्षेत्रों के गैरसरकारी स्वैच्छिक संगठनों एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं के कश्मीर में जाते-आते रहने से वहां शांति स्थापित करने में काफी मदद मिलेगी।

अगस्त से प्रारंभ चुनावी प्रक्रिया से लेकर चुनाव नतीजे निकलने तक वहाँ करीब 600 लोग मारे गए जिसमें 150 राजनीतिक कार्यकर्ता शामिल हैं।

नव निर्वाचित गठबंधन की सरकार के सामने राज्य में पनप रही क्षेत्रीयता की भावना को संभालने की भी चुनौती है ताकि राज्य का विभाजन न हो।

इस चुनाव की सबसे आश्चर्यजनक बात यह रही कि मुख्यमंत्री फारूक अब्दुल्ला के सुपुत्र उमर अब्दुल्ला उस गांदरबल विधान सभा क्षेत्र से हार गए जो क्षेत्र अब्दुल्ला परिवार की परंपरागत मानी जाती थी और यहाँ से इस परिवार ने इससे पहले कभी पराजय का मुँह नहीं देखा था। मुफ्ती मो० सईद की पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी के काजी मोहम्मद अफजल ने उमर को 2000 मतों से हराया। भाजपा द्वारा 54 सीटों पर खड़े किए गए उम्मीदवारों में से मदरवाह विधान सभा सीट से मात्र एक उम्मीदवार प्रदेश भाजपा अध्यक्ष दयाकृष्ण कोतवाल विजयी रहे। पूर्व केन्द्रिय गृह मंत्री मुफ्ती मोहम्मद सईद की बेटी महबुबा मुफ्ती ने पी०डी०पी० के टिकट पर जीत हासिल की। इस चुनाव में 34 पूर्व आतंकवादी पाकिस्तान को ठेंगा दिखा कर मैदान में उतरे थे जिनमें से अधिकतर हार गये। इस चुनाव में चाहे किसी राजनीतिक दल की जीत या हार हुई हो पर इतना जरूर है कि इस चुनाव के कारण कश्मीर के प्रति दुनिया भर का नजरिया भी बदलने में बड़ी कामयाबी मिली है।

यू०सी० अग्रवालः मंच के नवनिर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष

□सिद्धेश्वर

भारतीय प्रशासनिक सेवा के वरिष्ट अधिकारी तथा भारत सरकार के पूर्व मुख्य सतर्कता आयुक्त श्री उदय चंद अग्रवाल पिछले 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस पर नई दिल्ली के राजघाट स्थित राष्ट्रीय गाँधी संग्रहालय के सभागार में आयोजित राष्ट्रीय विचार मंच की आम सभा द्वारा सर्वसम्मति से मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष निर्वाचित हुए हैं। माननीय न्यायमूर्ति श्री बी०एल०यादव के पिछले 24 मार्च को इलाहाबाद में हृदय गति रूक जाने से हुए असामयिक निधन के बाद मंच का अध्यक्ष पद रिक्त था। श्री अग्रवाल ने अध्यक्ष का पद संभालकर न केवल मंच को गौरवान्वित किया है, बल्कि उनके मार्गदर्शन से मंच के कार्यकलापों को गति मिल सकेगी तथा राष्ट्रीय चेतना की वैचारिक त्रैमासिकी **विचार दृष्टि** की स्तरीयता एवं पठनीयता में बढ़ोत्तरी होगी क्योंकि श्री अग्रवाल स्वंय एक चिंतक व विचारक हैं तथा समाज व देश के विभिन्न मुद्दों पर इनकी धारदार कलम आज भी अनवरत चल रही है।

हरियाणा के निदनी के रूलीराम अग्रवाल एवं कमला परिवार में 19 नवंबर 1927 को जन्में श्री उदय चंद अग्रवाल ने अपने शैक्षणिक जीवन में सदैव प्रथम स्थान प्राप्त करते हुए 1951 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से राजनीति विज्ञान में प्रथम स्थान पाया और उसी वर्ष संघीय लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित प्रतियोगिता परीक्षा में उर्त्तीण होने के पश्चात् वर्ष 1952 में भारतीय प्रशासनिक सेवा के ओडिसा कैडर में पदभार ग्रहण किया। तब से राज्य तथा केंद्र में 36 वर्षों तक महत्वपूर्ण पदों पर रहकर उन्होंने अपनी सेवायें अर्पित की जिनमें सबसे अधिक भारत सरकार के गृह मंत्रालय के विभिन्न पदों पर रहे। सेवा से 1985 में अवकाश प्राप्त होने के बाद 1985 से 1988 तक भारत सरकार के मुख्य सर्तकता आयुक्त के पद पर रहकर श्री अग्रवाल ने अपनी एक अलग पहचान बनाते हुए विलक्षण प्रतिभा का परिचय दिया।

श्री अग्रवाल की निष्ठा, कर्मठता, लगनशीलता और इमानदारी को देखते हुए भारत सरकार ने अगस्त 2000 में उत्तराचंल, छत्तीसगढ़ तथा झारखंड राज्यों के गठन के बाद अखिल भारतीय सेवाओं के आवंटन हेतु भारत सरकार के कार्मिक मंत्रालय द्वारा गठित सलाहकार समिति का उन्हें अध्यक्ष बनाया गया और पुनः 1993 में दूरदर्शन, आकाशवाणी, प्रेस सूचना ब्यूरो, डीएवीपी, प्रकाशन विभाग तथा भारतीय सूचना सेवा के पूर्णगठन हेतु सूचना मंत्रालय द्वारा गठित उच्च स्तरीय मीडिया कमिटी के अध्यक्ष बने। इसी प्रकार 1992 में भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक द्वारा लेखा एवं लेखा परीक्षा सेवा के अधिकारियों के लिए प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के उत्क्रमण के संबंध में गठित समिति के श्री अग्रवाल अध्यक्ष रहे।

केंद्र की सेवावधि के दौरान कार्यालय के कार्यों को लेकर संयुक्त राष्ट्र संघ तथा इरान, इराक, कुवैत, अफगानिस्तान, मॉरीशस, अमेरिका,

इंग्लैंड, फ्रांस, जापान, थाइलैंड, इंडोनेसिया, लंका एवं मलेशिया जैसे देशों का उन्होंने दौरा किया। भारतीय सिविल सेवा से जुड़े अधिकारियों के प्रशिक्षण प्रबंधन पर चर्चा के लिए श्री अग्रवाल 1963 में हारवर्ड और बोस्टन विश्वविद्यालयों के अतिथि रहे।

स्वभाव से सौम्य, वक्तृत्व और लेखनी के धनी श्री अग्रवाल प्रशासन, सिविल सेवा प्रबंधन तथा निगरानी के विभिन्न आयामों पर आज भी नियमित रूप से आलेख तैयार कर उसे विभिन्न मंचों पर प्रस्तुत करते हैं। इस दृष्टि से मंच तथा **विचार दृष्टि** पत्रिका को उनकी सेवायें बहुमूल्य साबित होंगी। इनका निवास गाजियाबाद स्थिति एचआईजी कॉम्प्लेक्स के 72 नं० क्वार्टर में है और इनका दूरभाष सं० 4627543 है।

पिछले दिनों 18 अगस्त को अपने सहयोगी डॉ० अनिल दत्त मिश्र, अरुण कुमार भगत तथा शशि भूषण के साथ 16 एवं 17 नवंबर 2002 को नई दिल्ली में आयोजित मंच तथा विचार दृष्टि के दो दिवसीय राष्ट्रीय अधिवेशन के कार्यक्रमों पर बातचीत के लिए जब मैं उनके निवास पर गया तो हमारे सहकर्मी उनकी सादगी, सौम्यता, बात-व्यवहार तथा सहजता को देखकर दंग रह गये। मैं तो खैर कई बार पहले भी उनसे मिल चुका था और उनके व्यक्तित्व की छाप मेरे मानस पटल पर पड़ चुकी थी। उनसे मिलने के क्रम में हमलोगों को यह भी अहसास हुआ कि यह व्यक्ति आम जन के कितना करीब रहना चाहता है और उसके प्रति उनके दिल में कितना सम्मान है। उच्च पदों पर अपनी सेवा अवधि के दौरान भी छोटे से बड़े प्रायः सभी कर्मचारियों/अधिकारियों के लिए उनके दरवाजे खुले रहते थे। न कोई रोक-ठोक और न ही कोई हाव-भाव। आम तौर पर नौकरशाहों के आचरण में दिखने वाले ताम-झाम श्री अग्रवाल के व्यक्तित्व में रत्ती भर भी नहीं पाये गये। इनका मानना है कि स्वतंत्रता के बाद जिस देशवासियों की सेवा का उन्हें अवसर मिला उससे दूरी कैसी? आखिर दूर रहकर उनकी समस्याओं से हम कैसे रू-ब-रू होंगे। बातचीत के सिलसिले में हम सभी को यह भी पता चला कि पं० गोविन्द वल्लभ पंत से लेकर राजीव गाँधी के कार्यकल तक गृह मंत्रालय में इन्हें काम करने का मौका मिला और सभी ने उनकी सेवाओं की सराहना मुक्त कंठ से सराहना की। आखिर तभी तो 36 वर्षों की अवधि में वे बेदाग रहे, कभी और किसी स्तर पर उकी छवि धुमिल नहीं हुई जबकि आज के नौकरशाह राजनेताओं के साथ साठ-गांठ कर हमाम में अधिकतर नंगे होते दिख रहे हैं। रिश्वत लेने के मामले में आज बड़े से बड़े लोग फंसते चले जा रहे हैं।

ऐसे निष्ठावान, स्वच्छ छवि, उदार स्वभाव और व्यक्तित्व के धनी अध्यक्ष को पाकर मंच धन्य है और इसके सभी सदस्य गर्व का अनुभव करते हैं। मंच तथा विचार दृष्टि के सभी सदस्यों की ओर से अपने इस नवनिर्वाचित अध्यक्ष को हार्दिक बधाई और ढेर सारी शुभकामनाएं।

स्व० न्यायमूर्त्ति बी० एल० यादव एक स्मृति

अखिलेश पाठक

मृत्यु की शास्वता जन्म सिद्ध है। यह एक प्रक्रिया मात्र है। जन्म-मरण के बीच की स्थिति ही जीवन है। इसी सामान्य प्रक्रिया को भगवान श्रीकृष्ण ने पारिभाषित किया:-

वासांसि जिर्णाणि यथा विहाय नवानि गृहणति नरोडपराणि!
तथा शरीराणि विहाय जार्णन्यन्यानि संयाति नवानि देही !!

कुछ लोग ऐसे होते हैं जिनका जाना हठात होता है, जो मन-प्राण को झकझोर जाता है। उनके प्राण में गति होती है।

ऐसे ही मन-प्राणों की गति वाले थे स्व० न्यायमूर्त्ति बी० एल० यादव। मेरी उनसे पहली मुलाकात उनके कृतित्व के माध्यम से हुई थी। पटना उच्च न्यायालय के न्यायमूर्तियों में वे पहले न्यायाधीश थे जिन्होंने एक निर्णय संस्कृत भाषा में दिया (लिखा)! भाषा और उससे अधिक नव्यन्याय, व्याकरण (पाणिणि) एवं अमरकोष प्रस्तुत करने हेतु संस्कृत को देवभाषा माना गया है। "नव्यन्याय की अभिव्यक्ति यमत्कृत करती है" यह अवधारणा थी स्व० यादव की! अत: चर्चा में उन्होंने छूटते कहा था- "संस्कृत में निर्णय (Judgement) लेखन एक कठिन प्रयास था।

उनकी उपर्युक्त अभिवयक्ति मेरे मन-प्राण को छू गयी थी जिसमें उनकी विद्वता एवं शालीनता की मिश्रित सुगंध थी। उनसे मिलने की सतत् जिज्ञासा में मन में बनी रही।

अकस्मात पुन: मिले रामाश्रम सत्संग (मथुरा) के वार्षिक भंडारे में जो गेट पब्लिक लाइब्रेरी अनीशाबाद, पटना में आयोजित था।

सुखद आश्चर्य हुआ था क्योंकि प्राय: न्यायीक सेवा के सदस्य ऐसे आयोजनों में खुलकर भाग लेना नहीं चाहते। उन्हें इसका अपवाद पाया। यूँ ही प्रश्न मेरे मुँह से निकल गया था, आप भी इससे जुड़े हैं? उत्तर हाजिर था "कौन उनसे (यानि ब्रह्म से) अछूता है। उत्तर के लहजे में जो सरलता थी वह अत्यंत मनमोहक एवं प्रभावोत्पादक था।

पहली अप्रील को पटना उच्च-नवायालय पहुँचने पर ज्ञात हुआ आज न्यायालय कार्य स्थगित रहेगा। सामान्यतया ऐसी सूचना हर्षोत्पादक होती है। पर जब यह ज्ञात हुआ कि न्यायमूर्ति स्व० बी० एल० यादव का निधन हो गया तो बड़ा झटका लगा। क्यों पता नहीं? और उनकी स्मृति में शोक सभा के उपरान्त न्यायालय कार्य स्थगित हो गया। सारा दिन मन खिन्न एवं उद्विग्न रहा।

पुन: मन खिन्न हुआ भाई सिद्धेश्वर से उनके संबंध में जानकर। भाई सिद्धेश्वर उनसे काफी निकट थे। उनके संबंधों की प्रगाढ़ता का एक ज्ञात कारण "राष्ट्रीय विचार मंच" था जिसके स्व० यादव राष्ट्रीय अध्यक्ष थे और **विचार दृष्टि** के विधि परामर्शी भी।

हम दोनों ने भावों का आदान-प्रदान कर मन को हल्का करने की चेष्टा की। परन्तु मन में बार-बार प्रश्न उठता रहा तेजस्वियों का जीवन स्वल्प क्यों? वे हठात हमारे बीच से क्यों चले जाते हैं?

संपर्क: राजीव नगर, रोड नं०-8
पत्रा०-केशरी नगर, पटना-24

विचार दृष्टि का विज्ञापन दर

आवरण पृष्ठ

आवरण	अंतिम पृष्ठ	25,000 रु०
''	द्वितीय पूर्ण पृष्ठ	15,000 रु०
''	द्वितीय आधा पृष्ठ	8,000 रु०
''	तृतीय पूर्ण पृष्ठ	15,000 रु०
''	तृतीय आधा पृष्ठ	8,000 रु०
''	द्वितीय व तृतीय चौथाई पृष्ट	4,000 रु०

साधारण पृष्ठ

रंगीन पूर्ण पृष्ठ	10,000 रु०
रंगीन आधा पृष्ठ	5,000 रु०
सादा पूर्ण पृष्ठ	4,000 रु०
सादा आध पृष्ठ	2,000 रु०
सादा चौथाई	1,000 रु०
सादा पट्टी	500 रु०

नोट: वर्ष के चारों अंक में विज्ञापन प्रदान करने वालों को 20 प्रतिशत की छूट दी जाएगी।

विज्ञापन प्रबंधक
'विचार दृष्टि'
यू.-207, शक्करपुर,
विकास मार्ग, दिल्ली-92
फोन: (011) 2230652

चिकित्सकीय चूक से नरेन्द्र मोहन की मौत

हिन्दी पत्रकारिता को अपूरणीय क्षति

दैनिक जागरण के प्रधान संपादक और राज्य सभा के सदस्य नरेन्द्र मोहन का विगत 20 सितंबर को चिकित्सकीय चूक के चलते असामयिक निधन हो गया। 68 वर्षीय श्री मोहन के देहावसान से हिंदी

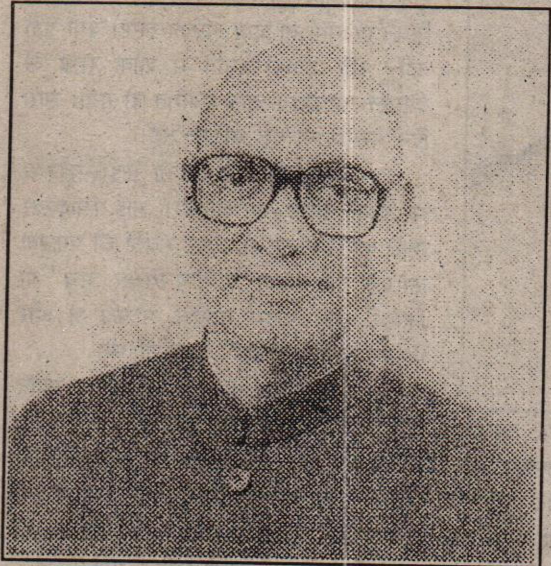

पत्रकारिता का एक मजबूत स्तंभ ढह गया। उच्च कोटि के मानव, गरीबों के प्रति अपार स्नेह रखने वाले स्व० मोहन को पिछले छह जुलाई को पेट में दर्द होने के कारण एम्स में भर्ती कराया गया था। 25 जुलाई को उनके पेट के अल्सर का ऑपरेशन होने के बाद भी जब दर्द नहीं रूका तो दुबारा आपरेशन करना पड़ा किंतु संक्रमण के कारण उन्हें सेप्टिसीमिया हो गया जिसकी वजह से उनके हृदय, गुर्दा, लीवर, ब्रेन व फेफड़े के रक्त में संक्रमण घुल गया और वे सब के सब फेल हो गए। अंततः 20 सितंबर को वे हम सबों के बीच से विदा हो गए।

आत्म विश्वास और निर्भीक लेखन के धनी स्व० मोहन ने दैनिक जागरण को हिंदी समाचार पत्रों में मूर्धन्यश्रेणी में लाकर खड़ा कर दिया था। सांसद के रूप में उन्होंने राष्ट्रहित के विषयों को अपनी तर्कपूर्ण शैली से निरूपित किया। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि उन्होंने आधुनिक हिंदी पत्रकारिता को नयी दिशा, नयी सोच और व्यापक दृष्टि प्रदान की। वे उच्च कोटि के कवि, साहित्यकार और बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित स्व० मोहन ने कई हजार लेख एवं लगभग 500 कविताएं लिखीं। उनके तीन काव्य संग्रह और एक ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं। आपने दक्षिण कोरिया, अमेरिका, मिस्र, फ्रांस, जर्मनी, जापान, इंग्लैड, श्रीलंका, कनाडा, नामीबीया, स्वीट्जरलैंड तथा चीन आदि देशों का भ्रमण किया।

आपात स्थिति की घोषणा के बाद 27 जून 1975 के संपादकीय कॉलम में **नया लोकतंत्र सेंसर लागू** लिखकर भारतीय पत्रकारिता जगत में एक इतिहास बनाया। दैनिक जागरण में विचार प्रवाह के लेखक के रूप में पाठक उन्हें एक प्रखर विचारक के रूप में सदैव याद रखेंगे। हिंदी भाषी जनता में न पढ़ने की आदत का दर्द उन्हें अंतिम समय में काफी हद तक था। हिंदी के भविष्य को लेकर वे हमेशा चिन्तित रहते थे।

चौथे स्तंभ के इस यौद्धा को **विचार दृष्टि** परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि।

-सिद्धेश्वर

हिंदी सिनेमा की 'दादी मां' दीना का देहावसान

हिंदी सिनेमा की 'दादी मां' और गुजराती रंगमंच की एक बड़ी और बहुमुखी प्रतिभा वाली 82 वर्षीय कलाकार दीना पाठक का लंबी बीमारी के बाद मुंबई में पिछले 11 अक्टूबर को देहावसान हो गया। हास्य कलाकार के रूप में प्रतिष्ठित दीना पाठक ने गोलमाल, खूबसूरत, उमराव जान, मिर्च मसाला जैसी हिंदी फिल्मों में काम करने के साथ-साथ गुजराती फिल्म मोती बा, मालेला जीव, भवानी भवई में भी अपनी भूमिका निभाई।

उनके परिवार में उनकी दो कलाकार बेटियाँ रत्ना और सुप्रिया हैं। श्रद्धांजलि।

पृष्ठ 42 का शेष भाग

दलितो के लिए ....

रूचि लेंगे। उन्हें पहाड़ों पर ले जाकर पेंड़-पौधों की बात करें तो वह सब उनके ज्यादा करीब होगा। अब हम टिचिंग मेथड को ही लें। यदि हम दलित बच्चों को यह कहें कि मछली पकड़ने पर लेख लिखें या गाय चराने-दूहने आदि का हम तरीका उन्हें बताने को कहें तो उनके जेहन में ये बातें ज्यादा उतरेंगी। अब सवाल यह उठता है कि इस तरीके से सारे विषय कैसे पढ़ाये जा सकते हैं। इसे इस तरह से समझें। उन बच्चों से हम यह पूछें कि गायें दूहने के तरीके में कुछ दिये गये तरीकों का क्रम क्या होगा, तो इससे हम उन्हें गणित पढ़ा सकते हैं। इसी तरह उन्हें हम पहाड़, पर्वत, प्रकृति, वातावरण, विज्ञान, भाषा आदि सभी की जानकारी दे सकते हैं। यानी हम उन्हें तरीके से अपनी बात सिखा-समझा सकते हैं। दूसरे शब्दों में उन्हें आइंसटीन नहीं एडिसन बनाना होगा।

सम्पर्क: प्रशासक,
बिहार राज्य सहकारी भूमि-विकास बैंक,
बुद्धमार्ग, पटना-1

मनीषा एवं नायर की *छोटी सी लव स्टोरी*
एक बड़ी कहानी बन गयी

बौलीवुड की अभिनेत्री मनीषा कोइराला की **छोटी सी लव स्टोरी** फिल्म विवादग्रस्त होकर एक बड़ी कहानी इसलिए बन गई है कि इसके निर्माता शशिलाल नायर द्वारा अपनी डुप्लीकेट पर कुछ अशोभनीय दृश्य फिल्म फिल्माने पर मनीषा ने न केवल गंभीर आपत्ति की बल्कि इसके निदान के लिए उसने अदालत के दरवाजे खटाने से लेकर बाल ठाकरे तथा केन्द्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री सुषमा स्वराज से भी सेंसर बोर्ड से दिए गए प्रमाण पत्र को रद्द करने की गुहार लगाई। सूचना मंत्रालय इस मामले की जाँच कर रहा है। इस बीच फिल्म के 95 प्रिन्ट बाँटे जा चुके है। इस चर्चित फिल्म में दो मुस्लिम ब्रिटिश नागरिकों डॉ० हफीज और अफजल का पैसा लगा है, जो मूल रूप से पाकिस्तान के वासी हैं। बताया जाता है कि आर्थिक तंगी से गुजर रहे नायर के पास **छोटी सी लव स्टोरी** बनाने के लिए धन नहीं था।

खबर है कि मुंबई व नवी मुंबई के कुछ थियेटरों में 150 रुपये वाले टिकट 600 रुपयों में बिके। कहा तो यहाँ तक जाता है कि जानबूझकर मनीषा एवं नायर ने इस फिल्म के अत्यधिक प्रचार-प्रसार के वास्ते इसे विवादास्पद बनाया है। सदी में बिना कोई खर्च के इस फिल्म का जितना प्रचार-प्रसार हुआ उसे देखते हुए दोनों के सांठ-गाठ से इनकार नहीं किया जा सकता है।

दीपक कुमार, दिल्ली से

कालजयी गीतकार शैलेन्द्र आज भी जिंदा हैं संघर्षशील जीवन में

पिछले दिनों शैलेन्द्र सम्मान समारोह में भीष्म साहनी एवं बलराज साहनी की भांजी हर्ष आनन्द ने शैलेन्द्र के गीतों को गाकर उनके विलक्षण क्षणों को याद किया। फिल्मी दुनिया को कालजयी गीत देनेवाले शैलेन्द्र,ने हिंदी फिल्मों को लगभग 800 गीत लिखे हैं। ये शैलेन्द्र ही थे, जिन्होंने संघर्षशीलों के लिए '**हर जोर जुल्म के टक्कर में संघर्ष हमारा नारा है**, का नारा दिया। ये मेरा दीवानापन है, सब कुछ सीखा हमने, मैं गाऊँ तुम सो जाओ जैसे गीतों से फिल्मों को फिल्म फेयर पुरस्कार मिला है। शैलेन्द्र की फिल्म 'तीसरी कसम' भी 1966 में राष्ट्रपति के स्वर्ण पदक से सम्मानित हो चुकी है।

आजादी से पूर्व चौबीस वर्षीय शैलेन्द्र ने जनगीत लिखे ही नहीं बल्कि पिपुल्स थियेटर एसोसिएशन के गानजत्थों के माध्यम से इन्हें नुक्कड़ों पर भी गाया। कथाकार भीष्म साहनी ने सम्मान समारोह के अवसर पर कहा कि शैलेन्द्र के जनगीतों को याद कर आज भी तन-बदन में एक लहर सी दौड़ जाती है। अन्याय और उत्पीड़न की ताकतों को जिन जनगीतों ने चुनौतियाँ दी, उन गीतों में ललकार के स्वर साफ सुनाई देते हैं।

हर्ष आनन्द ने इस अवसर पर शैलेन्द्र के जनगीतों के मुखड़े सुनाते हुए कहा कि उनके गीतों ने न्यायपूर्ण, सामाजिक व्यवस्था के लिए आवाज बुलंद की। शैलेन्द्र का यह जनगीत अंग्रेजी सरकार पर करारा व्यंग्य है-'हमरी बगिया में आग लगा गया गोरा परदेशी आयी मौत देख घबरा गया गोरा परदेशी।

शैलेन्द्र का यह गीत मुनाफाखोरों को भी सही बख्शता-दिल का हाल सेठ मोटेलाल/तोरी कूटनीतियाँ कमाल सेंठमोहेल्तर/तू करे अनाज चोरी, तू करे काला बाजारी/दुखिया के पेट पे अकाल सेठ मोटेलाल।' इस तरह लार्ड माउंट बेटेन, अंग्रेजी नीतियां, जालियां वाला गोलीकांड पर भी दिलचस्प गीत हर्ष आनन्द को याद है और उनकी इच्छा है कि शैलेन्द्र के जनगीतों का संकलन किया जाना चाहिए।

अमिताभ को 61वीं जयंती पर जया का नया तोहफा

भारतीय सिने जगत की जीवित किंवदंती सदी के महानायक अमिताभ बच्चन के 61वें जन्म दिवस पर उनकी पत्नी जया ने उन्हें अपनी पुस्तक 'टु बी और नॉट टू बी' भेंट की जिसका विमोचन उनकी नतिनी नव्यनवेली ने किया। इस अवसर पर पुत्र अभिशेष, सपा के अमर सिंह सहित परिवार से अनेक लोग उपस्थित थे।

संवेदनशील अभिनेता अमिताभ बच्चन वाकई जितने बड़े एक बेहतरीन कलाकार हैं उतने ही ज्यादा एक नेकदिल इंसान हैं। अपनी निष्ठा, कर्मठता और ईमानदारी के बल पर इस शख्स ने जिन उँचाईयों को छुआ, उसे छू पाना दूसरे के लिए अत्यंत कठिन है।

जीवन के 60 कामयाबी वसंत पूरे करने के अवसर पर विचार दृष्टि परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

त्रिमूर्ति ज्वेलर्स

बाईपास रोड, चास (बोकारो)।

दूरभाष 65769, फैक्स 65123

त्रिमूर्ति अलंकार

त्रिमूर्ति पैलेस, (रूपक सिनेमा के पूरब)

बाकरगंज पटना 800004

दूरभाष-662837

आधुनिक आभूषण के निर्माता नए डिजाइन, शुद्ध सोने चाँदी के तथा हीरे के गहनों का प्रमुख प्रतिष्ठान

परीक्षा प्रार्थनीय

सुरेश, राजीव एवं सुनील

INDIAN INSTITUTE OF HEALTH EDUCATION & RESEARCH

(Recognised by the Govt. of Bihar and RCI, Govt. of India)

Affiliated to Magadh University, Bodh Gaya

Health Institute Road, Beur (Near Central Jail), Patna

Ph.: 252999 Fax : 253290

A Perspective of New Building

Under Construction Site

ADMISSION NOTICE

Applications are Invited from eligible candidate of either ex for admission into following courses admission into following courses in the ***academic session 2002-2003***

BACHELOR DEGREES IN

1. PHYSIO THERAPY
2. OCCUPATIONAL THERAPY
3. AUDIOLOGY & SPEECH THERAPY
4. PROSTHETIC & ENGG
5. MENTAL RETARDATION

DIPLOMAS IN

6. PHYSIOTHERAPY
7. PROSTHETIC & ORTHOTIC ENGG.
8. MEDICAL LAB. TECHNOLOGY
9. X-RAY TECHINOLOGY
10. HOSPITAL MANAGEMENT

ELIGIBILITY

I.Sc. for course no 1 to 9,
Graduation for Hospital Management

FORMS & PROSPECTUS

Can be obtained from the office against payment of Rs. 100/- Only. Send a D/D of Rs. 120/- Only in favour of 'Indian Institute of Health Education & Research' Patna for Postal delivery.

निम्नलिखित नि:शुल्क स्वास्थ्य सेवाओं के लिए पधारें:

● स्वास्थ्य परीक्षण एवं परामर्श ● टीका करण ● फिजियोथेरापी ● अकुपेशनल थेरापी ● स्पीचथेरापी सभी प्रकार की विकलांगता पोलियो, लकवा, गठिया, हड्डी, जोड़ एवं नस से संबंधित सभी प्रकार के रोगों की जाँच एवं उपचार ● हकलाना–तुतलाना सहित गूंगे–बहरों की जांच एवं उपचार, हियरिंग–एड ● मानसिक विकलांगता तथा मंद बुद्धिमता–जांच एवं उपचार ● कृत्रिम हाथ, पैर, कैलीपर, पोलियो के जूते, वैशाखी सरवाइकल कॉलर, बेल्ट आदि का निर्माण एवं वितरण ● लाचार विकलांगों को तिपहिया साईकिल तथा व्हीलचेयर ● विकलांगों की शल्य चिकित्सा (सर्जिकल करेक्शन) ● रियायती दर पर पैथोलोजिकल ● जांच एक्स–रे तथा शल्य चिकित्सा

Anil Sulabh
Director-in-Chief

वर्ष : 4 अंक : 12 जुलाई–सितंबर : 2002 R.N.I.Regd.NO. DEL HIN/1999/791

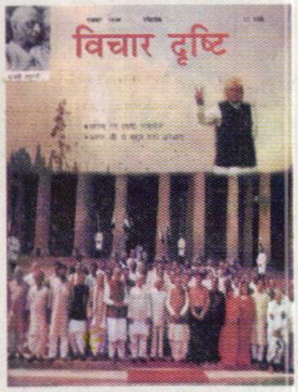

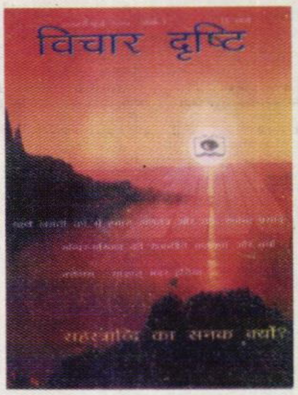

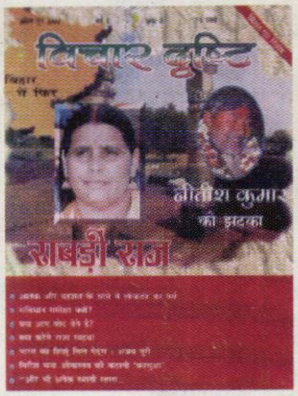

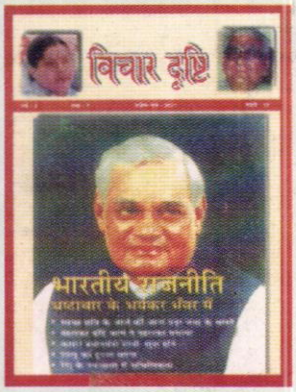

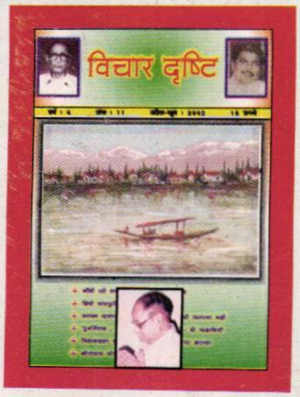

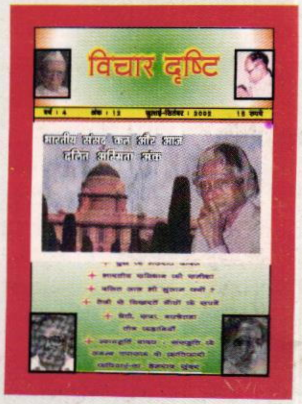

विचार दृष्टि राष्ट्रीय चेतना

की वैचारिक त्रैमासिकी

प्रकाशक, मुद्रक व स्वामी सिद्धेश्वर द्वारा यू–207, शकरपुर विकास मार्ग, दिल्ली–92 से प्रकाशित एवं प्रोलिफिक इनकारपोरेटेड, एक्स–47, ओखला, फेज–2, नई दिल्ली–20 में मुद्रित। – सम्पादक : सिद्धेश्वर